विदेह • मैथिली साहित्य

नित नवल

सन्दीप कुमार साफी

‘बैशाखमे दलानपर’क पाँच खण्डक साहित्यिक समीक्षा

०१
आत्मकथा

०२
कविता

०३
विहनि कथा

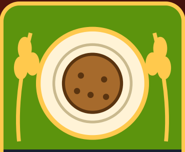

०४
लघुकथा

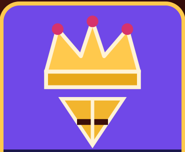

०५
विचार-बिन्दु

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह | प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२७

मैथिली साहित्य · समालोचना

नित नवल

सन्दीप कुमार साफी

बैशाखमे दलानपर : पाँच खण्डक साहित्यिक समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुर

२०२७

नित नवल

सन्दीप कुमार साफी

‘बैशाखमे दलानपर’क पाँच खण्डक समालोचनात्मक अध्ययन

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल सन्दीप कुमार साफी

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

मूल समीक्ष्य कृति : 'बैशाखमे दलानपर' — संदीप कुमार साफी

प्रकाशन वर्ष : २०२७

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

कॉपीराइट आ अधिकार

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

विषय-सूची

अनुक्रम

सन्दीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’ पर पाँच समीक्षा-आलेख

०१ आत्मकथा खण्डक समीक्षा..5

जाति, श्रम, शिक्षा आ भाषिक आत्मसम्मानक साक्ष्य

०२ कविता खण्डक समीक्षा..28

दलानक गपसँ समाजक अन्तर्विरोध धरि

०३ विहनि कथा खण्डक समीक्षा..59

लोकविश्वास, गृहस्थी आ विवाह-बाजार

०४ लघुकथा खण्डक समीक्षा...90

अन्न, श्रम आ घरक असमान अधिकार

०५ विचार-बिन्दु खण्डक समीक्षा...124

करुणामूलक राजधर्म आ अधिकारक प्रश्न

प्रत्येक खण्डक पादटिप्पणी आ ग्रन्थसूची ओही आलेखक संग देल गेल अछि।

खण्ड १ / आत्मकथा

जाति, श्रम, शिक्षा आ भाषिक आत्मसम्मानक साक्ष्य

संदीप कुमार साफीक 'बैशाखमे दलानपर'क आत्मकथा खण्डक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

स्वतन्त्र शोध-आलेख | मैथिली साहित्य, दलित जीवनलेखन आ आत्मकथात्मक विमर्श

सारांश

संदीप कुमार साफीक 'बैशाखमे दलानपर'क आत्मकथा खण्ड मैथिलीमे दलित जीवनक आत्मवर्णनक एकटा महत्त्वपूर्ण आरम्भिक पाठक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। एहिमे धोबी समुदायसँ आयल लेखक अपन परिवारक अस्थिर आजीविका, श्रमक बदला अन्नक भुगतान, बाल्यावस्थामे पढ़ाइ छोड़बाक दबाब, नेपाल आ भारतक विभिन्न शहरमे श्रम-प्रवास, शारीरिक चोट, परीक्षा-असफलता, पुनः शिक्षा-प्रयास आ मैथिली विषयसँ बनल आत्मीय सम्बन्धक वृत्तान्त दैत छथि। अध्ययनक केन्द्रीय स्थापना अछि जे एहि संक्षिप्त आत्मकथाक ऐतिहासिक मूल्य केवल 'पहिल' कहल जेबाक भीतर नहि, बल्कि जाति, वर्ग, श्रम, शिक्षा आ भाषिक आत्मसम्मानक जटिल सम्बन्धकेँ पहिल-पुरुष वाणीमे उपस्थित करबाक भीतर निहित अछि। लेखमे मूल पाठक घटनाक्रम, कथन-रचना, मौखिकता, देह-स्मृति, पारिवारिक लैङ्गिक श्रम-विभाजन आ आत्मकथाक मौनक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि। दलित आत्मकथाक सौन्दर्यशास्त्र तथा साक्ष्यात्मक जीवनलेखनक तुलनात्मक सिद्धान्तकेँ सहायक आधार बनाओल गेल अछि; मुदा मूलपाठमे अनुपस्थित हिंसा वा प्रसंगक कल्पित विस्तारसँ परहेज कएल गेल अछि। निष्कर्षतः ई रचना व्यक्तिगत सफलता-कथाक बदला अभावक विरुद्ध निरन्तर मानवीय प्रयत्न, अस्थिर उपलब्धि आ भाषा-अधिकारक एकटा अर्थपूर्ण सामाजिक दस्तावेज बनैत अछि।

बीजशब्द

मैथिली दलित आत्मकथा; संदीप कुमार साफी; बैशाखमे दलानपर; जाति आ श्रम; प्रवास; शिक्षा; देह-स्मृति; आत्मसाक्ष्य; भाषिक अस्मिता; समानान्तर साहित्येतिहास।

१. अध्ययनक प्रस्तावना : 'हम'क साहित्यिक प्रवेश

आत्मकथाक पहिल वाक्य जीवनकेँ संघर्षमय मानैत अछि। साधारणतः एहन उद्घाटनकेँ परम्परागत नैतिक कथन बुझि कऽ आगू बढ़ल जा सकैत अछि; मुदा साफीक लेखनमे ई उद्घोषणा तत्काल एकटा ठोस सामाजिक ठेकान पबैत अछि। 'हम' कोनो अमूर्त मानव नहि, मँहथ गामक, धोबी समुदायसँ आयल, चारि भाइ-बहिनक जेठ सन्तान, कपड़ा धोइनिहार माता-पिताक बेटा अछि। एहि आत्मपरिचयमे निजी नाम आ सामाजिक स्थिति एक-दोसरासँ अलग नहि रहल। लेखक 'संदीप' आ 'किरण' दुनू नामक सह-अस्तित्व बतबैत छथि—विद्यालयक पहिचान दोसर, गामक पहचान दोसर। नामक ई द्वैत अपनैते पाठककेँ बुझा दैत अछि जे व्यक्ति पर एकाधिक सामाजिक संसार अपन अर्थ आरोपित करैत अछि।[1]

एहि अध्ययनक प्रश्न ई नहि अछि जे लेखक दुखक कतेक दृश्य प्रस्तुत करैत छथि। प्रश्न ई अछि जे साधारण मानल गेल अनुभव—कपड़ा ढोएनाइ, बकरी चरएनाइ, परदेशमे भानस करब, परीक्षा लेल गाम लौटब, ओहूसँ बेसी परिवारकेँ पाइ पठाएब—साहित्यक योग्य जीवन-साक्ष्य कोना बनैत अछि। आत्मकथा खण्डक संक्षिप्तता एकर साधनात्मक सीमा अवश्य अछि, मुदा एकर सामाजिक घनत्वकेँ नकारि नहि सकैत अछि। एहि घनत्वक मूल्याङ्कन करबामे मूल पाठक भीतरक घटनात्मक साक्ष्यकेँ प्रधान, सम्पादकीय ऐतिहासिक दावाकेँ पृथक आ तुलनात्मक आलोचनाकेँ सहायक मानल गेल अछि।

1 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१४), अनुक्रम तथा आत्मकथा खण्डक आरम्भ।

२. पोथीक रूप-रचना आ ऐतिहासिक स्थान

'बैशाखमे दलानपर'क प्रथम संस्करण श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। पोथी पाँच खण्डमे विन्यस्त अछि—आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु। ई बहुविधात्मक संघटन उल्लेखनीय अछि। एकहि जिल्दमे आत्मजीवन, पद्य, लघु आख्यान आ विचार रखबाक निर्णय लेखकक व्यक्तित्वकेँ कोनो एक सामाजिक परिचय वा साहित्यिक विधामे सीमित नहि करैत। तथापि प्रथम खण्डक आलोचनामे बाकी खण्डसभक अनपढ़ल रचनाकेँ आत्मकथाक प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत; एतए ओ सभ मात्र सम्पूर्ण पुस्तकक रचनात्मक परिप्रेक्ष्य दैत अछि।[2]

आत्मकथा आरम्भ होएबाक ठीक पहिने गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी मैथिलीमे दलित आत्मकथाक अभाव आ साफीक रचनाद्वारा ओकर पूर्तिक बात कहैत अछि। 'विदेह'क सम्पादकीय चयन तथा उपलब्ध साहित्यिक सूचीसभमे सेहो एहि कृतिक 'पहिल' हेबाक मान्यता अभिलेखित अछि। ई प्रमाण साहित्यिक ग्रहणक इतिहासक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा 'पहिल' शब्दकेँ पूर्ण ग्रन्थसूचीगत निष्कर्ष बनएबाक लेल मैथिलीमे प्रकाशित-अप्रकाशित, पत्रिकागत आ मौखिक आत्मजीवनलेखनक विस्तृत सर्वेक्षण चाही।

2 गजेन्द्र ठाकुर, आत्मकथा खण्डक पूर्वस्थ सम्पादकीय टिप्पणी, साफी, बैशाखमे दलानपर, पृ. ६। एहि दावाक प्रकाशकीय समर्थन 'विदेह'क एडिटर्स चोइस शृंखला–७ केर परिचयमे सेहो भेटैत अछि।

एहि लेखमे तें एकरा उपलब्ध सम्पादकीय-अभिलेखक समर्थित ऐतिहासिक दावा मानल गेल अछि, समस्त सम्भावित पूर्ववर्ती साहित्यक अन्तिम निषेध नहि।[34]

कृतिक मूल्यांकनमे ई सावधानी आवश्यक अछि। जे ग्रन्थकेँ केवल ‘पहिल’ कहि कऽ प्रतिष्ठित कएल जाय, ओकर भाषा, रूप, नैतिक द्वन्द्व आ दुर्बलता आलोचनासँ बाँचि जाइत अछि। उलट, जँ ओकर संक्षिप्तता वा अनगढ़ शैलीक कारण ओकर अवमूल्यन हो, तँ एकटा नव सामाजिक अनुभवक साहित्यिक प्रवेशक महत्त्व दबि जाइत अछि। साफीक आत्मकथाकेँ एहि दुनू अतिशयसँ बाहर पढ़बाक आवश्यकता अछि।

३. आत्मपरिचय : जातिक घोषणा आ आत्मसम्मानक आरम्भ

लेखक स्पष्ट लिखैत छथि—‘हम जातिक धोबी छी, हरिजन (दलित) छी।’ एहि कथनमे ‘धोबी’ पुस्तैनी व्यवसाय आ जाति-दुनूक संकेत अछि। ‘हरिजन’ आ ‘दलित’ शब्दक एकसाथ उपस्थिति अलग-अलग ऐतिहासिक नामकरणक सहवर्तिता देखबैत अछि। ‘हरिजन’क प्रयोगकेँ वर्तमान आलोचनाक पसिन्न पद मानि लेब अनुचित होयत; ओ मूल पाठमे अपन समय, अनुभव आ प्रचलित भाषिक सन्दर्भक भीतर दर्ज आत्मनाम अछि। लेखक जखन स्वयंकेँ परिचित करबैत छथि, तखन ओ अपन समुदायक नाम नहि लुकबैत छथि। एहि अर्थमे आत्मकथाक पहिल निर्णायक साहित्यिक क्रिया आत्मपरिचयक अधिकार ग्रहण करब अछि।[5]

---

3 ‘विदेह’, “एडिटर्स चोइस सीरीज–७”, विदेहक अंक ३४९ सम्बन्धी प्रकाशकीय सूचना; https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A । देखू: गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi”, A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

4 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७।

5 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–८।

परिचय देबाक बाद ओ तुरन्त माता-पिताक कपड़ा धोइ कऽ परिवार चलएबाक बात करैत छथि। एहि क्रमबद्धतामे निजी व्यक्तित्वक उत्पत्ति सामाजिक श्रमसँ होइत अछि। जाति एतए केवल वंशसूचक उपाधि नहि, जीवनोपार्जनक ढाँचा अछि। तथापि पाठककेँ सावधानीसँ देखबाक चाही जे लेखक ई प्रारम्भिक स्थानपर कोनो विशिष्ट अस्पृश्यता-घटनाक विवरण नहि दैत छथि। पाठमे स्पष्ट जातीय गारि वा मन्दिर-प्रवेश निषेधक दृश्य खोजब आ नहि भेटलापर अपन कल्पनासँ जोड़ि देब मूल साक्ष्यक अवमानना होयत। जाति-आधारित व्यवसाय, संसाधनक कमी आ शैक्षिक अवसरक असमान वितरण स्वयं विश्लेषणक योग्य अछि; एहि सभक उपस्थिति प्रमाणित करबाक लेल काल्पनिक अपमानक दृश्य आवश्यक नहि।

४. अन्नमे मापल मजदूरी : ग्राम्य अर्थतन्त्रक अन्तरंग इतिहास

आत्मकथाक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंश ओ अछि जतए कपड़ा धोबाक बदलामे भेटैत मेहनतानाक स्वरूप सोझाँ अबैत अछि। गिरहस्तक घरसँ कखनो धान, कखनो आटा आ कखनो आलू भेटैत छल; नकद पारिश्रमिकक नियमितता नहि छल। एहि छोट विवरणमे ग्राम्य सेवादायी श्रमक पुरान आर्थिक सम्बन्ध खुलैत अछि। श्रमक मोल स्वतन्त्र बजारमे तय मासिक वेतन नहि, बल्कि उपभोक्ताक सामर्थ्य, रीति, प्रभुत्व आ पारस्परिक निर्भरताक भीतर निर्धारित होइत छल। अन्नमे भेटल भुगतान तत्काल भोजनक उपाय तँ छल, मुदा भविष्यक बचत, पढ़ाइ, उपचार आ यातायात लेल आवश्यक नगद एकत्र करब कठिन बना दैत छल।[6]

साफी एहि परिस्थिति केँ केवल सैद्धान्तिक शोषणक शब्दमे नहि लिखैत छथि। ओ मजदूरीक सामग्री गनबैत छथि। एहि वस्तुगत विवरणक आलोचनात्मक शक्ति विशेष अछि: ‘पाँच सेर धान’, ‘दू किलो आँटा’ वा आलूक परिमाण एहन अनुभूति उत्पन्न करैत अछि जे पाठक श्रम आ जीवनक बीचक वास्तविक लेनदेन बुझि सकय। ई अन्न वा वस्तुक नाम मात्र

6 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ८।

स्थानीय यथार्थक सजावट नहि, सामाजिक अर्थव्यवस्थाक सूचक अछि। धोबी समुदायसँ आयल परिवारक आत्मकथामे एहि विवरणक उपस्थिति जाति आ वर्गक अलग-अलग विमर्शकेँ परस्पर जोड़ैत अछि। जाति एतए श्रमक प्रकार निर्धारित करबाक ऐतिहासिक दबाबक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; वर्ग संसाधन-हीनताक दैनिक परिणामक रूपमे। दुनूक एकता स्वतःसिद्ध सूत्र नहि, मूल पाठक विवरणसँ उभरैत सम्बन्ध अछि।

लेखक पुरान आ नव समयक तुलनामे मजदूरी बढ़बाक बातो कहैत छथि। एहि स्मृतिमे ‘पूर्वकाल सर्वथा नीक छल’ एहन सरल भावुकता नहि अछि। पुरान समयमे अन्न अपेक्षाकृत सस्ता रहितो आमदनीक कमी छल; परिवर्तित समयमे बोइन बढ़ल, मुदा जीवनक खर्च आ आकांक्षा सेहो बदलल। स्मृतिक एहि अर्थशास्त्रमे इतिहास कोनो विशाल राष्ट्रीय घटनाक नाम नहि, परिवारक रसोई आ मजदूरीक परिमाणक भीतर लिखल गेल अछि।

५. माता-पिताक श्रम, पशुपालन आ दलित स्त्रीक अदृश्य अर्थव्यवस्था

आत्मकथामे माता बकरी किनैत छथि, ओकर पालन करैत छथि, फेर ओकरा बेचि बाछी आनैत छथि। ई घटना मामूली घरेलू विवरण नहि, परिवारक आय-विविधीकरणक प्रयास अछि। बकरीसँ बाछी धरि बढ़बाक क्रममे स्त्रीक दूरदर्शिता, संसाधन-सञ्चय आ जोखिमक अनुमान उपस्थित अछि। गामक सेवा-श्रमसँ परिवारक भरण-पोषण चलैत अछि, मुदा ओहिमे पर्याप्त सुरक्षा नहि भेटैत अछि; तें पशुपालन वैकल्पिक आमदनीक आशा बनैत अछि। लेखक एहि आशाकेँ फलित सफलता-कथा बनाकऽ नहि प्रस्तुत करैत छथि। हमरा लग केवल प्रयत्नक वृत्तान्त अछि।[7]

माता-पिताक संयुक्त श्रमक उल्लेख करैत लेखक पारिवारिक अर्थव्यवस्थाक भारक संकेत दैत छथि, किन्तु माताक अनुभूति, बीमारी, विश्राम वा असहमतिक स्वतन्त्र वृत्तान्त प्रस्तुत नहि करैत छथि। ई अन्तर आलोचनाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि। स्त्री एहि लेखनमे केवल ‘सहायक पात्र’ नहि, बल्कि आर्थिक निर्णय लेनिहार व्यक्ति छथि; तइयो कथनक

7 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ८–९।

केन्द्र पुरुष 'हम' रहैत अछि। स्त्रीक श्रम उपस्थित अछि, स्त्रीक आत्मवाणी अपेक्षाकृत अनुपस्थित। एहि द्वैतकेँ बुझबाक लेल दलित स्त्री-जीवनलेखनपर शर्मिला रेगेक विमर्श उपयोगी तुलनात्मक दिशा दैत अछि; मुदा रेगेक अध्ययनमे वर्णित अन्य समुदायसभक विशिष्ट घटनाकेँ साफीक परिवारपर आरोपित नहि कएल जा सकैत।[8]

माताक दृष्टिकोण बादमे शिक्षाक सम्बन्धमे पितासँ भिन्न देखाइत अछि। एहि भिन्नताकेँ 'माता शिक्षाविरोधी छलीह' एहन नैतिक दोषारोपणमे बदलि देब भारी भूल होयत। तत्काल जीविकोपार्जन आ दीर्घकालीन शिक्षा, दुनू परिवारक वास्तविक आवश्यकतासँ जुड़ल विकल्प छल। बच्चाकेँ बेंगलुरु पठएबाक आग्रह ओकर भविष्यक प्रति उपेक्षासँ नहि, सम्भवतः तात्कालिक आर्थिक विवशतासँ संचालित अछि—एहि सम्भावनाकेँ आलोचक परिकल्पना भरि मानि सकैत अछि, लेखकीय स्पष्ट मन्तव्य नहि।

६. बाल्यावस्था : विद्यालय आ कामक बीच विभाजित समय

लेखक कहैत छथि जे गामक आन बच्चासभ विद्यालय जाइत छल, मुदा हुनका लोकक कपड़ा पहुँचएबाक लेल जेबाक पड़ैत छलन्हि। ई तुलना सशक्त अछि, कारण ई 'सब' आ 'हम'क बीच समान वयक भीतर असमान दिनचर्या देखबैत अछि। विद्यालयक घण्टी जे ककरो लेल नियमित पढ़ाइक संकेत छल, लेखकक लेल ओकर समय वस्त्र ढोएनाइ वा घरेलू श्रमक हो सकैत छल। तथापि ओ साँझ पड़लापर बोरा बिछा कऽ गणना सीखैत छथि। एहि दृश्यसँ शिक्षा संस्थागत विद्यालयक परिसर छोड़ि आँगन, सम्बन्धीजनक संगति आ श्रमक बादक अवशिष्ट समयमे प्रवेश करैत अछि।[9]

पढ़ाइ आ कामक एहि सम्बन्धकेँ मात्र 'व्यक्तिगत दृढ़ता'क कथा कहि कऽ समाप्त नहि कएल जा सकैत। दृढ़ता निश्चय अछि, मुदा ओकर आवश्यकता एहन सामाजिक परिस्थितिसँ

8 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ९–१०।

9 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १०।

बनैत अछि जतए बच्चाक समय परिवारक जीविकासँ बाँटल अछि। पढ़बाक अधिकार आ श्रम करबाक कर्तव्य परस्पर प्रतिस्पर्धी बनि जाइत अछि। लेखकक पिता विद्यालयमे नाम लिखबैत छथि, मास्टरसँ ध्यान देबाक अनुरोध करैत छथि; एहि कारण परिवारक संघर्ष एकरेखीय नहि अछि। शिक्षा लेल परिवारक इच्छाशक्ति आ परिवारक आर्थिक अनिवार्यता परस्पर टकराइत अछि। एहि टकराहटकेँ कोनो एक सदस्यक चरित्रदोष बनाओल उत्तरदायी आलोचना नहि होयत।

बाल्यावस्थाक एहि प्रस्तुति पर वर्तमान दलित-पर्यावरण अध्ययनसँ एकटा उपयोगी तुलनात्मक प्रश्न उठैत अछि: बच्चा प्रकृतिक संग 'खेलैत' अछि अथवा खेत, पशु आ घरेलू संसाधनक माध्यमसँ श्रममे प्रविष्ट होइत अछि? साफीक लेखनमे पशु चरएनाइ, कपड़ा ढोएनाइ आ ग्रामीण आवागमन बाल्यक निष्कलुष रमणीयता नहि, रोजमर्राक आर्थिक आवश्यकता अछि। तथापि एहि आत्मकथामे जलस्रोत वा प्राकृतिक स्थलपर स्पष्ट जातीय निषेधक दृश्य नहि अछि; तें 'पर्यावरणीय अस्पृश्यता'क कोनो विशेष घटना एहि पाठपर आरोपित करब अनुचित होयत।[10]

७. नेपाल प्रवास : परिवारक सीमासँ बाहर श्रमक प्रारम्भ

किशोरावस्थाक आरम्भिक स्मृतिमे लेखक नेपाल पठाओल जेबाक प्रसंग लिखैत छथि। पढ़ाइ छोड़ि सम्बन्धीक संग रहब, कपड़ा धोएनाइ, कपड़ा पहुँचएनाइ आ भोरमे उठि भानस करब—ई सभ एकत्र भऽ बाल-श्रम आ सीमापार ग्राम्य नेटवर्कक चित्र बनबैत अछि। एतए 'प्रवास' आधुनिक नगरक रोजगार-स्वप्न भरि नहि; ओ पारिवारिक जीविकाक त्वरित विस्तार अछि। कामक स्थान बदलैत अछि, मुदा श्रमक प्रकार पुस्तैनी व्यवसायसँ पूर्णतः अलग नहि होइत। गामक गरीबी नेपाल धरि लेखकक संग जाइत अछि।[11]

10 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १०–११।

11 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ११–१२।

प्रवासक वर्णनमे लेखक विस्तृत सीमा-राजनीति वा राष्ट्रक अवधारणापर भाषण नहि दैत छथि। हुनक ध्यान भोरक काम, चूल्हि, कपड़ा आ परिवारक खर्चपर अछि। एहि सूक्ष्मता कैँ स्वयमेव कमजोरी नहि कहल जा सकैत। प्रवासी श्रमिकक दृष्टिसँ भूगोल नक्साक रेखासँ पहिने श्रमक दिनचर्या आ आश्रयक सम्बन्ध अछि। तथापि सामाजिक इतिहासक आलोचना लेल ईहो प्रश्न बचैत अछि जे कामक शर्त, पारिश्रमिक, स्कूलमे पुनः प्रवेशक व्यवस्था आ वय सम्बन्धी सुरक्षापर लेखक चुप किए छथि। एहि मौनकैँ सँजोएब चाही; कल्पित उत्तर गढ़ब नहि।

समय-रेखामे एकटा छोट असंगति सेहो अछि: जन्म-वर्ष आ नेपाल प्रवासक समय लिखल वयक गणना पूर्ण रूपैँ मेल नहि खाइत अछि। आत्मकथात्मक स्मृति कतिपय बेर घटनाकैँ वर्षक शुद्ध गणनासँ नहि, जीवनक संकटानुसार व्यवस्थित करैत अछि। मुदा शोधक दृष्टिसँ ई अन्तर दर्ज करब अपेक्षित अछि; ओकरा बिना सूचना संशोधित करि देब स्रोतक स्वरूप बदलि देत।[12]

८. चण्डीगढ़क अनुभव **:** प्रमाणपत्र**,** अविश्वास आ नगरीय श्रम**-**बाजार

नेपालसँ लौटि किछु पढ़बाक अवसर भेटलाक बाद लेखक पुनः पढ़ाइ छोड़ि पञ्जाब-चण्डीगढ़ क्षेत्र जाइत छथि। परिवारक अपेक्षा अछि जे शिक्षित सम्बन्धी हुनका रोजगार दियाओताह। किन्तु प्रमाणपत्र नहि रहलासँ दफ्तरसभमे काज नहि भेटैत अछि। एहि प्रसंगमे रोजगारक आधुनिक औपचारिक ढाँचा शिक्षा-अवसरक पहिलुक असमानतासँ टकराइत अछि। जकर पढ़ाइ गरीबीक कारण बारम्बार टूटैत अछि, ओकरा नौकरीक दरबज्जापर औपचारिक योग्यता नहि हेबाक कारण फेर रोकल जाइत अछि। ई विषम चक्र ‘मेहनत करब’ आ ‘मौका भेटब’क बीचक दूरी देखबैत अछि।[13]

12 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १२।

13 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १२–१३।

काका द्वारा प्रेस-आइरनक दोकान उपलब्ध कराओल आरम्भमे सम्भावनास्वरूप अबैत अछि; शीघ्रहि ग्राहकक अभाव, किरायाक दबाब आ कमाइक प्रति शंका एहि सम्बन्धकेँ कठिन बनबैत अछि। पारिवारिक नातेदारी एतए सर्वदा सुरक्षा नहि दैत। परदेशमे आधार देनिहार सम्बन्धियो आर्थिक संकटक भीतर नियन्त्रण आ अविश्वासक स्रोत बनि सकैत छथि। एकरा मात्र काका-भतीजाक व्यक्तिगत विवाद कहब संकीर्ण होयत; ई असुरक्षित छोट व्यवसाय, अनिश्चित नगदी प्रवाह आ आश्रयक बदलैत शर्तसभक कहानी सेहो अछि।

लेखक फेर ‘कोठी’मे काज करैत छथि। ई शब्द एकटा महत्त्वपूर्ण सामाजिक अनुगूँज रखैत अछि—नगरक सम्पन्न परिवारक घरेलू स्थल आ ओकर भीतर श्रमिकक निर्भरता। मुदा मालिकक जाति, व्यवहार, अनुबन्ध वा वेतनक विशिष्ट प्रमाण पाठमे कतिपय ठाम नहि भेटैत; एहि कारण ओहि सम्बन्धक प्रत्येक क्षणकेँ जातीय हिंसाक निश्चित घटना कहब सम्भव नहि। साफीक विश्वसनीयता एतए हुनक सीमित, अनुभवक निकट कथनमे अछि। आलोचनाक विश्वसनीयता सेहो एही सीमाक सम्मानमे अछि।

९. जड़कि गेल देह : श्रम, उपचार आ असुरक्षित जीवन

चण्डीगढ़क प्रसंगमे पएरमे आगि लगबाक घटना आत्मकथाक मार्मिक केन्द्र बनैत अछि। घाव लम्बा समय धरि दुख दैत अछि; लेखक एक पएरसँ साइकिल चलबैत दूर इलाज करए जाइत छथि। कथाकारक देह एतए केवल दुःखक भावुक प्रतीक नहि, रोजी, आवागमन, उपचार आ आर्थिक गणनाक एकटा साझा स्थल बनैत अछि। देह घायल भेलासँ कमाइ बाधित होइत अछि, उपचार लेल नगद चाही, नगदक अभावमे दूरस्थ सस्ता चिकित्सा-व्यवस्था धरि पहुँचनाइ पड़ैत अछि। सामाजिक असुरक्षा देहपर लिखल जाइत अछि।[14]

जतए आत्मकथा सिद्धान्त परम्परागत रूपसँ आत्म-चेतनाकेँ आन्तरिक अनुभवक रूपमे देखैत रहल अछि, साफीक आत्मकथामे घावक भौतिकता आत्मकेँ बुझबाक साधन अछि। ‘एक पएरे’ साइकिल चलएबाक स्मृति नाटकीय अलंकारक मोहताज नहि। संवेदनशील

---

14 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १३।

पाठक एहि श्रमसाध्य गतिक भीतर व्यक्ति आ सामाजिक संरचनाक असमान भिड़न्त देखि सकैत अछि। माता-पिताक चिन्ता आ उधार कऽ गाम घुरबाक आग्रह एहि प्रसंगकेँ पारिवारिक सम्बद्धतासँ जोड़ैत अछि।

एहि घटनाकेँ प्रत्यक्ष जातीय आक्रमणक रूपमे पढ़ब मूल पाठक साक्ष्यक विरुद्ध होयत, कारण आगि लगबाक परिस्थिति एहन रूपमे निर्दिष्ट नहि अछि। मुदा असुरक्षित श्रमजीवन आ अपर्याप्त उपचार-संसाधनक सामाजिक प्रश्न स्पष्ट अछि। वर्णित दुखक प्रकार आ ओकर सामाजिक अर्थमे भेद राखब अनुसन्धानेतर प्रचारसँ समीक्षाकेँ पृथक करैत अछि।

१०. असफलता, पुनःपरीक्षा आ 'योग्यता'क वर्गीय बनावट

आत्मकथामे परीक्षा-असफलता अन्तिम पराजय नहि, दोसर प्रयासक भूमिका बनैत अछि। मित्र द्वारा परीक्षाक प्रपत्र भरबाओल जेबाक प्रसंग देखबैत अछि जे औपचारिक शिक्षाक जगतमे प्रवेश करबाक लेल व्यक्तिगत परिश्रमक संग सामाजिक सहयोग आवश्यक होइत अछि। गणित आ संस्कृतमे तैयारीक अभाव, नियमित पढ़ाइमे बाधा आ परिणामक निराशा लेखक साफ-साफ स्वीकार करैत छथि। ई खुलापन आत्मप्रशंसात्मक जीवनचरितक विपरीत अछि।[15]

बादमे संस्कृत बोर्डसँ उत्तीर्ण होएब, माध्यमिकक बाद उच्चतर अध्ययन, पुनः नगरमे श्रम, परीक्षा लेल गाम घुरि अएबाक चक्र—ई कोनो सुगम उर्ध्वगामी सीढ़ी नहि। शिक्षाक अवसर टुकड़ा-टुकड़ामे भेटैत अछि। पढ़ाइ लेल समय ओही घरमे बाँचैत अछि जतए दोसराक घरेलू काम सेहो करबाक होइत अछि। योग्यता अर्जनक प्रक्रिया जखन परिवारक खर्च, बहिनक विवाह, अपन बाल-बच्चाक पालन आ नगरीय मजदूरीसँ जुड़ि जाइत अछि, तखन परीक्षा-

15 शरणकुमार लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अंग्रेजी अनुवाद: आलोक मुखर्जी (हैदराबाद: ओरिएण्ट लॉन्गमैन, २००४)।

परिणामक साधारण सफलता-असफलता सामाजिक असमानताक पूर्ण विवरण नहि दऽ सकैत।

शिक्षा अर्जित भेलाक बादो स्थिर नियुक्ति नहि भेटब लेखकक अन्तिम प्रश्न अछि। सरकारी वा शिक्षकीय सेवाक परीक्षा आ भर्तीमे असफलता दर्ज अछि, मुदा व्यवस्था द्वारा अनिवार्य रूपेँ जातिक आधारपर अस्वीकृतिक प्रत्यक्ष प्रमाण एहि अंशमे नहि अछि। ई भेद स्पष्ट करब आवश्यक अछि। जे प्रमाण अछि, ओ अस्थिर श्रम-जीवन, सीमित संसाधन, बारम्बार टूटैत पढ़ाइ आ श्रम-बाजारमे दुर्बल स्थितिक; ओकर सामाजिक संरचनागत अर्थ पर्याप्त गम्भीर अछि।

११. विवाह, दहेज आ पुरुष आत्मकथाक नैतिक अन्तर्विरोध

विवाहक प्रसंग पाठक सोझाँ आत्मकथाकारक एकटा असुविधाजनक परन्तु आवश्यक पक्ष अनैत अछि। लेखक सोचैत छथि जे विवाहमे प्राप्त दहेजसँ किछु रकम जोड़ि बहिनक विवाहक खर्च जुटाओल जा सकत। एहि वाक्यमे परिवारक आर्थिक विवशता अछि, मुदा संगहि विवाह-संस्थाक लेनदेनपर आश्रित नैतिक संरचना सेहो अछि। गरिबीकेँ समझब आ दहेजक प्रथाकेँ प्रश्नातीत मानि लेब—ई दुनू एक बात नहि। गरीबीक कारण रचनाकारक निर्णयक ऐतिहासिक प्रसंग बुझल जा सकैत अछि; परन्तु प्रथाक लैङ्गिक असमानता आलोचनाक दायरा सँ बाहर नहि होइत।[16]

ई आत्मकथा एकटा पुरुषक आत्मवृत्त अछि। पत्नी, बहिन आ माता लेखकक संघर्षक भीतर उपस्थित छथि, मुदा हुनका सभक इच्छा आ असहमतिक स्वतन्त्र कथन सीमित अछि। बहिनक विवाह मुख्यतः खर्चक प्रसंग बनैत अछि; पत्नी परिवारक आर्थिक-सामाजिक व्यवस्थाक भीतर देखाइत छथि, किन्तु हुनक अपन स्वर नहि सुनाइत। रेगेक दलित स्त्री-आत्मसाक्ष्य सम्बन्धी स्थापनासँ तुलना एहि चुप्पीकेँ अधिक अर्थवान बनबैत अछि। दलित

16 शर्मिला रेगे, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios (नई दिल्ली: जुबान, २००६)।

पुरुषक दुःखक इतिहास लिखितो स्त्री-श्रम आ स्त्री-स्वरक विस्थापन सम्भव अछि। एहि बातक उल्लेख साफीक अनुभवकेँ अमान्य नहि करैत, बल्कि ओकर प्रतिनिधित्वक परिधि स्पष्ट करैत अछि।[17]

आत्मकथामे विवाहसँ तुरन्त बाद शिक्षा जारी रखबाक प्रसंग एहि नैतिक द्वन्द्वकेँ आरो अधिक जटिल करैत अछि। परिवार बसाएबाक दायित्व आ स्वयं पढ़बाक चाह, दुनू एकहि समय सक्रिय अछि। परिवार लेखकक विरोधी संस्था नहि, सहायता, दबाब, परम्परा आ प्रेमक विरोधाभासी समुच्चय अछि। एहि मिश्रणकेँ लेखकक साधारण भाषामे पकड़ल गेल अछि; आलोचकीय दृष्टि एकरा सरलीकृत नायकत्वमे विलीन नहि करि सकैत।

१२. मैथिली विषयक चयन : सहायक नेटवर्कसँ आत्मीय भाषिक जागरण धरि

उच्च शिक्षामे मैथिली विषय चुनबाक घटना लेखकक जीवनक निर्णायक साहित्यिक मोड़ अछि। पहिने हुनक रुचि वा अंकक आधारपर हिन्दी विषय सम्भव देखाइत अछि; किन्तु मित्र द्वारा मैथिली विषय रखाएलाक बाद लेखकक मनमे जे प्रसन्नता उत्पन्न होइत अछि, ओ केवल पाठ्यक्रमक सुविधा नहि। लेखनमे मातृभाषा अपन लघुजगतसँ निकलि उच्च शिक्षाक वैध विषय बनैत अछि। एहि प्रक्रियामे मित्रक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि: लेखक स्वयं परदेशमे छथि, गामक मित्र प्रपत्र आ शुल्कक व्यवस्था देखैत छथि। व्यक्तित्वक आत्मनिर्माण एतए अन्योन्याश्रित सम्बन्धसँ घटित होइत अछि।[18]

---

17 प्रमोद के. नायर, “Bama’s Karukku: Dalit Autobiography as Testimonio,” The Journal of Commonwealth Literature ४१, अंक २ (२००६); DOI: 10.1177/0021989406065773 ।

18 थिर्षा एस. आ जे. मेरी जेनिफर, “Deconstructing Environmental Discourse in Valmiki’s Joothan and Byapari’s Interrogating My Chandal Life: Eco-casteism in Dalit Childhood,” Humanities and Social Sciences Communications, खण्ड १३ (२०२६), लेख १३९८;

मैथिली पुस्तक जुटएबाक कठिनाई आ अल्प लागतमे पठन-सामग्री सँजोबाक प्रसंग ईहो देखबैत अछि जे भाषाक प्रति प्रेम मात्र पर्याप्त नहि; पुस्तक-वितरण, आर्थिक सुलभता आ संस्थागत उपलब्धता सेहो चाही। लेखकक प्रथम श्रेणीसँ स्नातक उत्तीर्ण होएब ओहि संसाधनहीन शिक्षायात्राक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, मुदा लेखक ओकरा सरकारी नौकरीक निश्चित फलमे बदलि नहि सकैत छथि। एहि ठाम शिक्षा एकसाथ मुक्ति-साधन आ अपूर्ण सामाजिक वचन बनैत अछि।[19]

आत्मकथाक अन्तिम घोषणामे मिथिलाक माटि-पानिक प्रति सम्मान आ मैथिलीकेँ ऊँच स्थान धरि लए जेबाक आकांक्षा प्रकट होइत अछि। श्रमक अनुभवसँ उत्पन्न व्यक्ति अपन भाषाक भविष्य पर दावा करैत अछि। ‘हम मैथिल छी’ एतए केवल भौगोलिक पहचान नहि; समाजक भीतर दलित लेखकक अपन अंशदारीक उद्घोषणा अछि। मैथिल होएबाक अधिकार पाण्डित्य, वंश वा सम्पत्तिसँ निश्चित नहि, अपन भाषा आ अनुभवक साझेदारीसँ निर्मित होइत अछि। एहि कारण कृतिक साहित्यिक उपलब्धि केवल जीवनी सुनाएब नहि, मैथिली शब्द-संसारक भीतर नव वक्ताकेँ स्थान देब अछि।[20]

---

https://www.nature.com/articles/s41599-026-07395-6 ।

19 रजनीकान्त आ रामकृष्ण परमहंस, “Speaking from the Margins: Caste, Gender and Self-Assertion in Select Dalit Autobiographies,” Revista Review Index Journal of Multidisciplinary ६, अंक १ (२०२६); DOI: 10.31305/rrijm2026.v06.n01.010 ।

20 अकांक्षा कुमारी आ रमीज अहमद भट, “The Weight of the Unspoken: Caste, Symbolic Violence and the Struggle for Selfhood in Joothan: A Dalit’s Life and Sanatan: A Novel,” Contemporary Voice of Dalit, १८ अक्टूबर २०२६; DOI: 10.1177/2455328X261492964 ।

१३. परदेश आ गाम : आवागमनक चक्रीय आख्यान

आत्मकथामे नेपाल, चण्डीगढ़ आ बेंगलुरु तीनू स्थान लेखकक जीवनमे अबैत अछि; मुदा ई क्रम सामान्य ‘गाम छोड़ि शहरमे सफलता’क कथा नहि बनैत। लेखक बारम्बार गाम घुरैत छथि—कखनो घावक उपचार आ परीक्षाक कारण, कखनो विवाह, कखनो अगिला पढ़ाइ लेल। एहि आवागमनक ढाँचा चक्रीय अछि। गाम भरण-पोषणक स्थिर केन्द्र नहि, बल्कि अपन लोक, परीक्षा, ऋण, विवाह आ भाषिक स्मृतिक केन्द्र अछि; शहर पूर्ण अवसरक स्थल नहि, बल्कि नौकरी, चोट, अस्थायी रोजगार आ अनिश्चितताक मैदान।[21][22][23]

आत्मकथाक समय-रचना अनुभवक तीव्रता अनुसार बदलैत अछि। कखनो एकटा वर्ष वा परीक्षाक उल्लेख भरि, कखनो घावक उपचारक दिनचर्या विस्तारसँ। लेखक जे अनुभव जीबैत छथि, ओकरा कालानुक्रमिक वृत्तान्त बनएबाक प्रयास करैत छथि; एही बीच आर्थिक संकट अधिक स्थान घेरैत अछि। जीवन-वृत्तान्तक चयनित केन्द्र एहि प्रकार सामाजिक-आर्थिक अनुभव निर्धारित करैत अछि, न कि केवल वैयक्तिक स्मृतिक मनोविज्ञान।

साफीक दृष्टिमे परदेश स्वयं कोनो रोमानी आधुनिकता नहि। ओ ‘काम’क क्षेत्र अछि, जतए जीविका चलैत अछि, मुदा अपन भाषा, घर आ धरतीक प्रश्न मेटैत नहि। एहि अर्थमे प्रवासक आत्मकथा अन्तमे मातृभाषा आ मिथिला-परिचयक पुनरुच्चारणसँ जुड़ैत अछि। ई पुनरागमन शारीरिक गाम-वापसीक आश्वासन नहि, स्मृतिक स्तरपर घर बनएबाक साहित्यिक क्रिया अछि।

---

21 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३। लेखक जन्म-वर्ष १९८४ आ नेपाल-प्रवासक वर्ष १९९४ लिखैत छथि, मुदा ओहि प्रवासक समय अपन वय ११–१२ वर्ष बतबैत छथि; एहि अंशमे वर्ष आ वयक पूर्ण सामञ्जस्य नहि बनैत अछि।

22 साफी, बैशाखमे दलानपर, प्रकाशकीय विवरण तथा आत्मकथा खण्ड, पृ. ३ आ ६–१३।

23 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७।

१४. कथन-भाषा : मौखिक लय, असम्पादित अनुभव आ प्रामाणिकताक प्रश्न

साफीक गद्य लम्बा उपमा-अलंकार, दार्शनिक उद्धरण आ परिष्कृत आत्मचिन्तनपर आधारित नहि। वाक्य घटना कहैत आगू बढ़ैत अछि—‘तकरा बाद’, ‘फेर’, ‘ओही समए’, ‘मुदा’ सन संधिक माध्यमसँ एक प्रसंग दोसरासँ जुड़ैत अछि। ई आवृत्ति आ मौखिक गतिक कारण आत्मकथा कखनो संस्मरण सुनबैत व्यक्तिक स्वर ग्रहण करैत अछि। घटनाक बीच विन्यासक अभाव सेहो कतिपय ठाम अनुभव होइत अछि। समीक्षाक काम ई नहि जे समस्त भाषिक असमानताकेँ स्वतः ‘लोकसौन्दर्य’ घोषित कऽ दे; अथवा औपचारिक गद्यक कसौटीपर प्रत्येक वाक्यकेँ असफल कहि दे। प्रश्न ई अछि जे एहि शैलीक कारण लेखक कोन-कोन अनुभव पाठक धरि पहुँचा पबैत छथि, आ कोन-कोन प्रसंग अस्पष्ट रहि जाइत अछि।

पुनरुक्ति अनुभवक संचयन बनैत अछि। एक ठाम कपड़ा धोएनाइ, दोसर ठाम कपड़ा पहुँचेनाइ, फेर प्रेस करब, फेर परदेशक घरमे श्रम—व्यवसायगत निरन्तरताक ई पुनरागमन सामाजिक स्थितिक रूपक बनि जाइत अछि। गद्यक सरलता पाठकक सोझाँ अर्थक एकटा अपेक्षाकृत सीधा सम्बन्ध स्थापित करैत अछि; मुदा सरलीकरण आ स्पष्टतामे अन्तर अछि। जखन काकाक शंका, नौकरीक प्रकृति वा चोटक कारणक वर्णन अधूरा अछि, तखन पाठककेँ उचित प्रश्न पूछबाक अधिकार अछि। एहि प्रश्नसँ मूल पाठक विश्वसनीयता नष्ट नहि होइत; बरु ओकर अभिलेखी सीमा निश्चित होइत अछि।

‘आत्म’क कथनमे लेखक बारम्बार सामाजिक लोकक नाम दैत छथि—मित्र, सम्बन्धी, शिक्षक, माता-पिता। एहि नामसँ आत्मकथा नितान्त एकाकी स्वनिर्माणक मिथक खण्डित करैत अछि। केओ प्रपत्र भरैत छथि, केओ अक्षर सिखबैत छथि, केओ काम धरबाक कोशिश करैत छथि, केओ गाम आबबाक सल्लाह दैत छथि। आत्मकथाक ‘हम’ सामूहिक सम्बन्धक जालमे बनैत अछि। एहि सम्बन्धमे साक्ष्यात्मक स्वरक विशेष शक्ति अछि।

१५. धर्म, नैतिकता आ आत्मनिर्भरता : अन्तिम स्वरक द्वैत

लेखक अपन सफलताक संग 'भगवतीक दया'क उल्लेख करैत छथि; गीत-भजन आ कीर्तनक प्रति रुचि बतबैत छथि। एहि धार्मिक-सांस्कृतिक सम्बन्धकेँ आधुनिक आलोचक तुरन्त अस्मिताविरोधी मानि नहि सकैत। श्रमजीवी व्यक्तिक आस्था सामाजिक जीवनक एकटा वास्तविक आयाम अछि। लेखकक जीवनमे कर्म, शिक्षा, मित्र-सहयोग आ ईश्वर-विश्वास एकसाथ उपस्थित अछि। ई जटिल सहवर्तिताकेँ स्वीकार करब मूल पाठक प्रति न्यायोचित दृष्टि अछि।[24]

तथापि अन्तिम अंशमे गहन विडम्बना अछि। स्नातक शिक्षाक बादो स्थिर नौकरीक अभाव, बच्चासभक पढ़ाइ लेल धनक कमी आ गरीबी-श्रेणीमे जीवन—ई सभ दर्ज कएलाक तुरन्त बाद लेखक सरल जीवन, मिथिलाक प्रति स्नेह आ मातृभाषाक सेवा पर आस्था व्यक्त करैत छथि। एहि अन्तसँ निश्चिन्त 'विजय'क कथा नहि बनैत। आत्मसम्मान बनि रहल अछि, मुदा आर्थिक सुरक्षा दूर अछि। साहित्यिक धरातलपर एहि असमाप्तिकेँ रचनाक केन्द्रीय सत्य मानब उचित होयत। लेखक जकरा प्राप्त नहि कऽ सकल छथि, ओहिकेँ प्राप्त मानि कऽ हुनक जीवन सुखान्त बना देब आत्मकथाक नैतिक अर्थ उलटि देत।

१६. दलित आत्मकथाक तुलनात्मक सौन्दर्यशास्त्र

शरणकुमार लिंबाळे दलित साहित्यक मूल्यांकनमे अनुभूत जीवन, समानता, अस्मिता आ सामाजिक अन्यायक प्रश्नक महत्त्व स्थापित करैत छथि। एहि दृष्टिसँ साफीक आत्मकथाक साहित्यिकता मापक ई नहि होयत जे लेखक उच्चवर्गीय आत्मवृत्तान्तक समान आत्मविश्लेषण करैत छथि वा नहि। ओकर केन्द्रीय मानदण्ड ई बनत जे पाठ निजी जीवनक भीतर सामाजिक सम्बन्धसभकेँ कतेक स्पष्ट करैत अछि। एहि कसौटीपर मजदूरीक अनाज,

24 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–८।

बाधित शिक्षा, प्रवासक असुरक्षा आ मातृभाषाक स्वीकृति महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। किन्तु एहि मानदण्डसँ कथनक अपूर्णता आलोचनासँ मुक्त नहि भऽ जाइत अछि।[25]

प्रमोद के. नायर दलित आत्मकथाक साक्ष्यात्मक स्वरपर विचार करैत निजी जीवन आ समुदायगत इतिहासक सम्बन्धकेँ पाठ-विचारक विषय बनबैत छथि। साफीक रचनामे सेहो ‘हम’क अनुभवसँ धोबी परिवारक श्रम-व्यवस्था आ ग्रामीण अवसर-वितरणक समझ बनैत अछि। मुदा एक लेखकक जीवन सम्पूर्ण समुदायक प्रतिनिधि तथ्य नहि होइत। ओकर कथन विशिष्ट स्थान, पीढ़ी, परिवार, शिक्षा-जाल आ रोजगार-मार्गसँ आकार ग्रहण करैत अछि। एही विशिष्टताकेँ सुरक्षित राखि सामूहिक संकेत पढ़ब चाही।[26]

ओमप्रकाश वाल्मीकि वा अन्य दलित आत्मकथासभमे प्रत्यक्ष अपमानक जाहि घटनात्मक रूपकक चर्चा व्यापक अछि, ओहि रूपक प्रत्येक पाठमे अनिवार्य रूपसँ पुनरावृत्त होएत, एहन अपेक्षा अनुचित अछि। साफीक पाठमे अस्पृश्यताक प्रत्यक्ष दृश्य अपेक्षाकृत कम अछि, श्रम-निर्भरता आ शैक्षिक अवरोध प्रमुख अछि। तुलनात्मक आलोचना तँहिए सफल होयत जखन ओ समानताक संग अन्तरकेँ सेहो चिन्हित करय। समकालीन अध्ययनसभ आत्मकथाकेँ सामूहिक साक्ष्य, पुनः प्राप्त आत्मसम्मान आ रोजमर्राक सूक्ष्म हिंसाक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि; साफीक पाठकेँ एहि विमर्शमे राखल जा सकैत अछि, मुदा बिना पाठीय प्रमाण कोनो-ने-कोनो विशिष्ट जातीय घटना आरोपित नहि कएल जा सकैत।[27][28]

एहि स्थलपर एकटा मौलिक आलोचनात्मक भेद उभरैत अछि: प्रतिरोध सर्वदा तीक्ष्ण घोषणाक रूपमे नहि होइत; कखनो अपना नामसँ जाति बताबैत शिक्षा हासिल करबाक

---

25 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. १०–११।

26 शर्मिला रेगे, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios (नई दिल्ली: जुबान, २००६)।

27 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ८–९।

28 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ९–१०।

निरन्तर प्रयास आ मातृभाषामे आत्मवृत्तान्त लिखब सेहो सामाजिक नीरवताक विरुद्ध हस्तक्षेप होइत अछि। परन्तु 'सहानुभूति'क नामपर लेखकक प्रत्येक व्यवहारकेँ नैतिक रूपसँ निर्दोष सिद्ध करबो उचित नहि। दलित आत्मकथा स्वयं समीक्षा आ आत्मसमीक्षाक समान अधिकारी अछि।

१७. आत्मकथाक मौन : साक्ष्य, सीमा आ उत्तरदायी पाठ

साफीक आत्मकथामे विभिन्न रोजगारक अनुभव अछि, मुदा रोजगारक विस्तृत अनुबन्ध, कार्यघण्टा, जातीय अन्तःक्रिया, श्रमिक सहकर्मी, नगरीय आवास, पत्नी आ संतानक दृष्टिकोणक अनेक प्रश्न अनकहल अछि। किछु व्यक्तिक नाम देल गेल अछि, मुदा हुनक आवाज प्रत्यक्ष रूपेँ कम सुनाइत अछि। ई मौन अनेक प्रकारेँ बुझल जा सकैत अछि: लघु आकार, स्मृतिक चयन, तत्कालीन लेखकीय उद्देश्य, उपलब्ध कथन-कौशल आ सामाजिक संकोचक सम्भावना। ई सभ कारण परिकल्पना अछि, लेखकद्वारा सिद्ध कएल निष्कर्ष नहि।

आत्मकथात्मक सत्यक अर्थ प्रत्येक घटना बाहरी दस्तावेजसँ पूर्णतः सत्यापित होयब नहि, किन्तु कथाकारक अनुभवसँ बनल सुसंगत, जाँच-योग्य सामाजिक बोध होयब अछि। तेँ समय-रेखाक असंगति, विवाहक प्रसंगक नैतिक उलझन वा घटनाक अपूर्णता—ई सभ मूल पाठक मूल्य घटएबाक स्वचालित प्रमाण नहि; आलोचकीय सावधानीक विषय अछि। उलट, एहि सीमासभकेँ छोपि दऽ 'निर्मल शहीद'क छवि गढ़लासँ लेखकीय व्यक्तित्वक जटिलता हराइत अछि।

एहि आत्मकथामे आक्रोश अपेक्षाकृत संयत अछि; श्रम-प्रक्रियाक विवरण अत्यन्त ठोस अछि। लेखक कोनो सिद्धान्तक घोषणापत्र नहि दैत छथि। तेँ हुनक कथाक अर्थ निकालैत समय आलोचककेँ अपने राजनीतिक शब्दावली पाठपर थोपबाक प्रलोभनसँ बचबाक चाही। प्रस्तुत पाठक मूल बल एकटा असुरक्षित जीवनक विश्वसनीय, यद्यपि संक्षिप्त, कथन अछि।

१८. मिथिलाक सामाजिक-साहित्यिक इतिहासमे योगदान

मैथिली साहित्यक इतिहासक लेखनमे एहन प्रश्न बारम्बार उठैत अछि जे साहित्यक केन्द्रमे के बोलैत अछि आ के केवल विषय बनि उपस्थित होइत अछि। साफीक आत्मकथामे सामाजिक रूपसँ पिछाड़ल समुदायसँ आयल व्यक्ति अपन नाम, जाति, श्रम, शिक्षा, संस्कार आ आकांक्षाक अर्थ स्वयं स्थापित करैत छथि। एहि पहिल-पुरुष उपस्थितिकेँ साहित्यिक महत्त्व देनाइ 'दलित' शब्दक केवल प्रशंसात्मक प्रयोग नहि; ई साहित्येतिहासक स्रोत-आधार विस्तार करब अछि।[29]

'विदेह'क सम्पादकीय प्रस्तावना एहि विस्तारक ऐतिहासिक महत्त्व निर्दिष्ट करैत अछि। बादक आलोचनात्मक लेखन सेहो साफीकेँ मैथिली दलित आत्मकथाक महत्त्वपूर्ण आरम्भक रूपमे ग्रहण करैत अछि। एतए साहित्यिक संस्थाक मान्यता आ मूल पाठक स्वायत्त महत्त्व दुनूकेँ अलग-अलग देखबाक चाही। सम्पादकीय स्वीकृति रचनाकेँ दृश्यमान बनबैत अछि; मुदा रचनाक स्थायी मूल्य ओकर अनुभव-संरचना आ भाषिक अभिव्यक्तिक परीक्षणसँ निश्चित होयत।[30][31]

---

29 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ११–१२।

30 गजेन्द्र ठाकुर, आत्मकथा खण्डक पूर्वस्थ सम्पादकीय टिप्पणी, साफी, बैशाखमे दलानपर, पृ. ६। एहि दावाक प्रकाशकीय समर्थन 'विदेह'क एडिटर्स चोइस शृंखला–७ केर परिचयमे सेहो भेटैत अछि।

31 'विदेह', "एडिटर्स चोइस सीरीज–७", विदेहक अंक ३४९ सम्बन्धी प्रकाशकीय सूचना; https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A । देखू: गजेन्द्र ठाकुर, "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi", A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

एहि पाठसँ मैथिली साहित्येतिहास लेल तीनटा विशेष प्रश्न खुलैत अछि। पहिल, पुस्तैनी सेवा-श्रम करनिहार समुदायसभक स्वयं लिखल जीवनकथासभ कतेक धरि संकलित आ संरक्षित अछि? दोसर, शिक्षा आ मजदूरीक परस्पर विरोध साहित्यक पाठ्यमे केहन रूप पबैत अछि? तेसर, मातृभाषामे लिखब सामाजिक प्रतिनिधित्वक मानचित्रकेँ कोना बदलैत अछि? साफीक आत्मकथा एकरा सभक पूरा उत्तर नहि दैत, मुदा शोधक लेल आवश्यक आधार-साक्ष्य अवश्य प्रस्तुत करैत अछि।

१९. निष्कर्ष : असमाप्त संघर्षक साहित्यिक साक्ष्य

‘बैशाखमे दलानपर’क आत्मकथा खण्डकेँ केवल निर्धन व्यक्तिक संघर्षगाथा कहब ओकर सामाजिक गहनताकेँ कम करब अछि। धोबी समुदायसँ आयल युवकक जीवनमे जाति-आधारित श्रम-परम्परा, अनाजक मजदूरी, बचपनक बाधित पाठशाला, परदेशक जोखिम, घायल देह, परीक्षा-संघर्ष, दहेज-व्यवस्थाक उलझन, पुस्तकक अभाव आ मैथिली शिक्षा परस्पर सम्बद्ध अनुभवसभ थिक। एहि सम्बन्धसँ ई आत्मकथा आधुनिक मिथिलाक एकटा असुरक्षित, श्रमजीवी नागरिकक जीवन-अभिलेख बनैत अछि।

रचनाक सीमा सेहो स्पष्ट अछि: अत्यल्प विस्तार, कतिपय घटनाक अधूरा विवरण, वर्ष-वयसँ जुड़ल असंगति आ स्त्रीक अपेक्षाकृत कम आत्मवाणी। मुदा ई सीमासभक आलोचनात्मक स्वीकार कृतिक ऐतिहासिक महत्त्व घटबैत नहि, ओकर मूल्यांकन अधिक प्रामाणिक बनबैत अछि। साफी अपन जीवनकेँ अन्तिम सफलता धरि नहि पहुँचबैत; ओ अपन भाषा आ भूमि प्रति अधिकारक स्वर अवश्य पबैत छथि। एकटा दलित श्रमिकक ‘हम’ जखन मैथिलीमे अपन कष्ट, आस आ अपूर्ण उपलब्धिक कथा कहैत अछि, तखन साहित्यक विषय-सूची मात्र नहि बढ़ैत, ‘के साहित्य लिखि सकैत अछि’ एहि प्रश्नक उत्तर बदलैत अछि। एहि बदलैत उत्तरमे एहि आत्मकथाक मूल उपलब्धि अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

साफी, संदीप कुमार। बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी। अन्तर्गत: संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi.” A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

विदेह। “एडिटर्स चोइस सीरीज–७: मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा, सन्दीप कुमार साफी।” विदेहक अंक ३४९ सम्बन्धी प्रकाशकीय सूचना। https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A ।

लिंबाळे, शरणकुमार। Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations। अनुवाद: आलोक मुखर्जी। हैदराबाद: ओरिएण्ट लॉन्गमैन, २००४।

रेगे, शर्मिला। Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios। नई दिल्ली: जुबान, २००६।

नायर, प्रमोद के. “Bama’s Karukku: Dalit Autobiography as Testimonio.” The Journal of Commonwealth Literature, ४१(२), २००६। DOI: 10.1177/0021989406065773 ।

थिर्षा एस. आ जे. मेरी जेनिफर। “Deconstructing Environmental Discourse in Valmiki’s Joothan and Byapari’s Interrogating My Chandal Life: Eco-casteism in Dalit Childhood.” Humanities and

Social Sciences Communications, १३, लेख १३९८, २०२६।
https://www.nature.com/articles/s41599-026-07395-6 ।

रजनीकान्त आ रामकृष्ण परमहंस। “Speaking from the Margins: Caste, Gender and Self-Assertion in Select Dalit Autobiographies.” Revista Review Index Journal of Multidisciplinary, ६(१), २०२६। DOI: 10.31305/rrijm2026.v06.n01.010 ।

कुमारी, अकांक्षा आ रमीज अहमद भट। “The Weight of the Unspoken: Caste, Symbolic Violence and the Struggle for Selfhood in Joothan: A Dalit’s Life and Sanatan: A Novel.” Contemporary Voice of Dalit, १८ अक्टूबर २०२६। DOI: 10.1177/2455328X261492964 ।

खण्ड २ / कविता

दलानक गपसँ समाजक अन्तर्विरोध धरि

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क कविता खण्डक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

स्वतन्त्र शोध-आलेख | मैथिली लोककाव्य, दलित सौन्दर्यबोध आ सामाजिक समालोचना

सारांश

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क कविता खण्ड ग्राम्य जीवनक साधारण बुझाइत अनुभवकेँ काव्य-विषय बनबैत २८टा कविताक एकटा बहुस्वरात्मक संसार रचैत अछि। एहि संसारमे ऋतु-परिवर्तन, रौदी, शीतलहरी, पोखरि-इनार, पाबनि-तिहार, बरियाती, खेत-मजदूरी, घरेलू हिंसा, दहेज, पीढ़ीक झगड़ा, बूढ़ लोकक उपेक्षा, विद्यालयक खर्च आ ग्राम्य उपभोग-संस्कृति परस्पर संलग्न अछि। वर्तमान अध्ययनक मुख्य स्थापना ई अछि जे साफीक कविता केवल लोकचित्रण अथवा हास्य-व्यंग्य नहि; एकर सामाजिक अर्थ ओहि दृष्टिबिन्दुसँ निकलैत अछि जतएसँ श्रम, अभाव आ लोकबोली अपन साहित्यिक स्थानक दावा करैत अछि। तथापि दलित लेखकक प्रत्येक कविता प्रतिरोधक एकहि घोषणापत्र नहि बनैत। किछु रचना पितृसत्तात्मक रूढ़ि, पीढ़ीगत नैतिकता आ पुरान ग्राम्य सामंजस्यक आदर्शकेँ पुनः प्रतिष्ठित करैत अछि, जखन कि दोसर रचना घरेलू स्त्री-श्रम आ दहेजक अन्तर्विरोधकेँ तीक्ष्णतासँ उद्घाटित करैत अछि। लेखमे अट्ठाइसू कविताक क्रमवार निकट-पाठक संग ऋतु-अनुभव, ग्राम्य सार्वजनिकता, आहार-विनोद, लैङ्गिक सम्बन्ध, दलित सौन्दर्यबोध, कथोपकथन, लय आ भाषा-शिल्पक परीक्षण कएल गेल अछि। निष्कर्षतः साफीक कविता खण्ड साहित्यक स्थापित विषय-सूचीकेँ विस्तार दैत अछि; ओकर शक्ति प्रत्यक्ष दृश्य आ बोलचालक जीवित स्वरमे, आ ओकर सीमा कतिपय सामान्यीकरण तथा कलात्मक असमानतामे निहित अछि।

बीजशब्द

संदीप कुमार साफी; बैशाखमे दलानपर; मैथिली कविता; दलित सौन्दर्यशास्त्र; लोकभाषा; श्रम-संस्कृति; दलान; ऋतुचक्र; पर्यावरण; स्त्री-श्रम; दहेज; सामाजिक व्यंग्य; ग्राम्य आधुनिकता।

१. प्रस्तावना : कविता कहबाक अधिकार आ श्रमजीवी संसार

साहित्यक इतिहासमे कोन जीवन देखाइत अछि आ केकर बाजब सुनाइत अछि—ई प्रश्न केवल विषय-वस्तुक नहि, साहित्यिक अधिकारक प्रश्न सेहो अछि। संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’ एहि अधिकारक प्रसंगमे महत्त्वपूर्ण कृति अछि। एकर आरम्भिक आत्मकथा खण्डक कारण लेखकक दलित जीवनानुभव चर्चामे अबैत अछि; मुदा एहि चर्चाक बीच कविता खण्डकेँ आत्मकथाक परिशिष्ट मानि छोड़ि देब बड़ आलोचनात्मक त्रुटि होयत। कवितासभमे लेखक एक पात्रक निजी जीवनक बदला गामक अनेक बोलनिहार, पहाड़ सन गर्मी, बरखाक अभाव, सामूहिक भोजन, कुचरैत कौआ, बूढ़ माता-पिता, आ आँगनमे खटैत स्त्रीसभक परिवेशक चित्र प्रस्तुत करैत छथि।[32][33]

एहि पद्यकेँ पढ़ैत समय दूटा अतिवादसँ बचब आवश्यक अछि। पहिल, प्रत्येक लोकबोली वा ग्राम्य वस्तुकेँ आपोआप उच्च कोटिक कला कहि देब; दोसर, साहित्यिक मैथिलीक अधिक संस्कृतनिष्ठ अनुशासनक तुलनामे एहि बोलचालक पद्यकेँ ‘साधारण’ कहि निरस्त करब। साफीक कविताक मूल्यांकन लेल आवश्यक अछि—कोन दृश्य अपन वस्तुगत

32 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१४), अनुक्रम आ कविता खण्ड। शीर्षकानुसार क्रमसँ कविता ‘भकजोगनी’सँ ‘वर बिकाय लगनमे’ धरि एकूण २८ रचना अछि; कविता खण्ड पृ. १४–६९।

33 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३; एहि खण्डमे लेखक अपन धोबी समुदाय, शिक्षा-संघर्ष आ प्रवासक विवरण दैत छथि। कविता-पाठकेँ आत्मकथाक सीधा पुनर्लेखन नहि, अलग साहित्यिक विन्यास मानल गेल अछि।

तीक्ष्णतासँ पाठककेँ बदलैत अछि, कतए लोकोक्ति बहुआयामी व्यंग्य बनैत अछि, कतए सामाजिक पीड़ा ठोस देहक अनुभव पबैत अछि, आ कतए उपदेश कविता पर भारी पड़ैत अछि।

शरणकुमार लिंबाळेक दलित साहित्यविषयक विचार अनुभवक सत्य, सामाजिक अन्याय आ मनुष्यता-सम्बन्धी प्रश्नकेँ आलोचनाक केन्द्रमे अनबाक आग्रह करैत अछि। साफीक कविता पर एकरा यथावत सूत्र जकाँ थोपबाक आवश्यकता नहि; मुदा ई दृष्टि उपयोगी अछि जे साहित्यिकता केवल छन्दक प्रौढ़ता नहि, मानवीय अनुभवकेँ व्यक्त करबाक क्षमता सेहो अछि। एहिसँ कविता शिल्पक परीक्षा समाप्त नहि होइत; उलट, सामाजिक आग्रह आ कलात्मक विन्यासक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट पूछल जा सकैत अछि।[34]

२. रचना-समष्टिक स्वरूप : एकरूप संग्रह नहि, विविध अनुभवक अनुक्रम

पोथीक कविता खण्ड ‘भकजोगनी’सँ आरम्भ भऽ ‘वर बिकाय लगनमे’पर समाप्त होइत अछि। मूल अनुक्रमक पद्यसभ गनलापर २८ कविता भेटैत अछि। ई संख्या मात्र आँकड़ा नहि: एहि रचनात्मक क्रमक भीतर विषयक गति देखल जा सकैत अछि। पहिने अन्हार, रौदी, बालकक आलस्य आ सपना; बीचमे पाबनि, बरियाती, माता-पिताक पीड़ा, सम्पत्तिक बँटबारा, गृहस्थीमे हिंसा, सामाजिक प्रतिष्ठाक खोखलापन, विद्यालय, पशुपालन आ वृद्धावस्थाक प्रसंग; अन्तिम दिस ऋतु-पर्व, जलस्रोत, गामक छवि, दलान, सेवा आ दहेज-संरचना। ई अनुक्रम कविक स्मृतिमे गामकेँ कखनहुँ उत्सव, कखनहुँ संकट आ कखनहुँ व्यंग्यक मंच बनबैत अछि।[35]

34 शरणकुमार लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अनु. आलोक मुखर्जी (हैदराबाद: ओरिएण्ट लॉन्गमैन, २००४)। साहित्यिक मूल्यांकनमे जीवनानुभव, सामाजिक असमानता आ मानवीय मुक्तिक प्रश्नक सैद्धान्तिक सन्दर्भ।

अनेक कवितामे प्रत्यक्ष ‘हम’ अछि, मुदा सभ ‘हम’ आत्मकथाकार स्वयं छथि—एहन मानि लेब अनुचित। ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’क बूढ़ धनसंचयकर्ता, ‘सेवा’क पुतोहुक आशामे बैसल व्यक्ति, आ ‘बाड़ीक पटुआ तीत’क पीढ़ीगत उपदेशकर्ता अलग-अलग कथक-स्थिति ग्रहण करैत छथि। कविताक संवादमूलक रूप एकहि लेखककेँ अनेक आवाज दैत अछि। एहि आवाजसभमे हास्य, तिरस्कार, ममता, रोष, अज्ञान, अनुभव आ प्रतिकार एकसाथ आबैत अछि।

कवितासभक सामाजिक परिसर अनेकार्थी अछि। खेतमे पड़ल दरार दुखद अछि, मुदा ताश खेलैत दलानक दृश्य आलस्यक आलोचना सेहो बनि सकैत अछि। घरक भीतर स्त्रीक श्रम एक ठाम मान्यता पबैत अछि, दोसर ठाम पढ़ल-लिखल पुतोहु नैतिक संकटक प्रतीक बनि जाइत अछि। एहि टकरावकेँ नकारि रचनासभकेँ एकगोट समान सामाजिक संदेशक वृत्तान्त बना देब ओकर वास्तविक जटिलता छोपब होयत।

३. अन्हार, ऋतु आ पर्यावरणक अनुभूति

ऋतु साफीक पद्यमे केवल पृष्ठभूमि नहि। रौदीक कारण धान, पोखरि आ जीव-जंतु प्रभावित होइत अछि; माघक शीत देहकेँ असह्य बनबैत अछि; बैशाखक दुपहर श्रम आ अवकाश दुनूक लय बदलैत अछि। एहि दृश्यसभमे प्रकृति सजावटी उद्यान नहि, जीविकाक सहगामी शक्ति अछि। लोक-वर्णनक भाषामे प्रकृतिक ई अनुभव काव्य-लोककेँ शहरी उपभोगक दृष्टिसँ भिन्न बनबैत अछि।

---

35 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१४), अनुक्रम आ कविता खण्ड। शीर्षकानुसार क्रमसँ कविता ‘भकजोगनी’सँ ‘वर बिकाय लगनमे’ धरि एकूण २८ रचना अछि; कविता खण्ड पृ. १४–६९।

३.१. 'भकजोगनी' : कन्हेरा इजोत आ सामूहिक राति

'भकजोगनी'मे अन्हार पहिने अबैत अछि, तकरा बाद ध्वनि। उज्जर प्रकाशक भव्य बिम्ब नहि, टिमटिम करैत कीटक-ज्योति, कुकुरक भुकनाइ, नरहियाक सोर, निर्गुण गबैत बाबा आ छोट बच्चाक आकुलताक बीच दृश्य खुलैत अछि। 'हाथ-हाथ नै सुझैए' सन बोलचालक अभिव्यक्ति रातिक दृश्य-असमर्थताकेँ धरैत अछि। कविताक ध्वनिमूलक शब्द श्रव्य संसार गढ़ैत अछि; अन्हारकेँ पाठक खाली देखैत नहि, सुनैत अछि।[36]

ई अन्हारमे भय आ सामुदायिक जीवनक उत्सव दुनू अछि। लोकक एक-दोसराकेँ डाकनाइ, बालकक खेल, निर्गुण गायन आ देहमे लागल पछुआ हवा एकहि अनुभूतिक पृथक बिन्दु थिक। कवि प्रकृतिक उपमा कम दैत छथि; ठोस पदार्थ, ध्वनि आ हावाक ताप-शीतसँ कविता रचैत छथि। एहि कारण ई रचना संग्रहक आरम्भमे शब्दसँ बेसी परिस्थिति बनबाक कला सिखबैत अछि।

३.२. 'रौदी भऽ गेल' : पर्यावरणीय संकट आ अन्नक भविष्य

'रौदी भऽ गेल'मे खेतक दरार, सुखायल धान, सूखैत पोखरि, बेलक अभाव, पानि लेल तरसैत माल-जाल, उड़ैत पक्षी आ जटा-जटिनक गीत एकहि पर्यावरणीय संकटक स्तर अछि। धरतीक 'मुँह बाइब' भूख आ प्यासक मानवीकरण करैत अछि। रचना केवल वर्षाक लेल प्रार्थना नहि; खेतीक सम्भावना समाप्त होएबाक सामूहिक चिन्ता अछि। धीयापुताक 'ऐबेर की खेती'क प्रश्न रौदीकेँ आगामी भोजनक संकटसँ जोड़ैत अछि।[37]

ई कविता समाजक भीतर संसाधनक भेदक प्रत्यक्ष सिद्धान्त नहि लिखैत, किन्तु खेतक हानि आ पशुधनक कष्टक मार्फत जीविकाक नाजुक निर्भरता उद्घाटित करैत अछि। जटा-जटिन गीत आ इन्द्रकेँ पुकार लोक-विश्वासक सांस्कृतिक उत्तर अछि; कवितामे ओ उत्तर निष्फल रहल अछि। एहि विफलताक कारण पाठक प्रकृति-पूजा आ कृषकक वास्तविक

36 साफी, बैशाखमे दलानपर, कविता 'भकजोगनी', पृ. १५–१६।

37 साफी, ओहि पोथीमे, 'रौदी भऽ गेल', पृ. १७–१८।

विवशताक बीचक दूरी देखैत अछि। सूचीवत वस्तु-वर्णन कतिपय पाँतिमे लयकेँ शिथिल करैत अछि, मुदा ओहि विस्तारसँ रौदीक व्यापक असर सेहो बनैत अछि।

३.३. 'माघक शीतलहरी' : तापमान नहि, घायल देहक समय

'माघक शीतलहरी' अति संक्षिप्त वाक्य, पुनरावृत्त उद्गार आ देहक प्रतिक्रिया द्वारा शीतक अनुभव व्यक्त करैत अछि। बिछौनासँ उठबाक अनिच्छा, बूढ़ आ जवानक समान विवशता, पछुआक 'सन-सन' आवाज, सुन्न हाथ-पएर आ गिलैत आलू गाछ मानव देह तथा फसलकेँ एके संकटमे राखैत अछि।[38]

'रौदी भऽ गेल' आ एहि कविताक तुलना महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल कवितामे पानिक अभाव जमीन फोड़ैत अछि; एतए ठंढ आ नम मौसम पात, कोंपल आ मनुष्यक दिनचर्या बदलैत अछि। दुनू रचनामे मौसमक अर्थ स्थानीय अर्थव्यवस्थामे विस्तार पबैत अछि। माघक वर्णनमे विशेषणक जटिलता कम अछि, तथापि ध्वन्यात्मकता आ देहगत संवेदना पाठककेँ स्पर्शात्मक अनुभव करबैत अछि।

३.४. 'बसंत पंचमी' : प्रकृति, पाठशाला आ पाबनिक मेल

'बसंत पंचमी'मे सरस्वती-पूजा, विद्यार्थी, पीयर-हरियर फसल, सरिसब फूल, महुआ-आमक गन्ध, पुरबा हवा आ होलीक संकेत एकत्र होइत अछि। ऋतु एहिठाम विद्यालयक सांस्कृतिक समयसँ भेटैत अछि। पाबनि धार्मिक अवसर अवश्य अछि, मुदा कविता ओकरा विद्यालयक विद्यार्थीक उल्लास आ गामक खेती-बारीक लयमे राखैत अछि।[39]

एहि कवितामे आंतरिक तनाव अपेक्षाकृत कम अछि। दृश्यसभ सौहार्दपूर्ण क्रममे आबैत अछि आ समापन सामाजिक मेलपर होइत अछि। आलोचनात्मक कसौटीपर एकर सीमा ई

38 साफी, ओहि पोथीमे, 'माघक शीतलहरी', पृ. ५२–५३।

39 साफी, ओहि पोथीमे, 'बसंत पंचमी', पृ. ५६–५७।

जे उत्सवक अनुगूँज संकट अथवा प्रश्नक तीखापन कम करैत अछि; उपलब्धि ई जे ऋतु-जीवनक सूक्ष्म, सामूहिक संवेदना हरियर बिम्बमे सुरक्षित रहैत अछि।

३.५. 'बैशाखमे दलानपर' : शीर्षक-कविताक सामाजिक ताप

शीर्षक-कविताक पहिल निमन्त्रण ताश खेलबाक अछि। चारि बाजबाक समय आ एक बाजल होएबाक अनुभूतिक गड़बड़ी गर्मीमे समयक धीमापन उभारैत अछि। महिषकेँ पोखरि नहाबय लऽ जेबाक योजना, पसीनासँ भीजल गन्जी, खाटक उड़ीस, मच्छर-माछी, पुरबा हवा आ जामुन गाछपर पाखीक आवाज एकटा वास्तविक बैशाखक दुपहर बनबैत अछि। कविताक अन्त फेर ताश खेलबाक निमन्त्रणपर आबैत अछि; एहि गोलाकार संरचनासँ समय जकाँ ठमकि जाइत अछि।[40]

'दलान'क अर्थ एतए केवल घरक अगाड़ी नहि। ई सार्वजनिक वार्तालापक स्थल अछि, जतए श्रमक बाद विश्राम, साथ-सँगीक गप आ निष्क्रिय समय एकसाथ प्रवेश करैत अछि। मुदा ई स्थान पुरुष-संगतिकेँ प्रमुखता दैत अछि; अंगनाक स्त्री-श्रम एतए अनुपस्थित अछि। एहि अनुपस्थितिकेँ संग्रहक दोसर स्त्री-केन्द्रित कवितासँ जोड़ला पर दलान आ आँगनक सामाजिक विभाजन पर प्रश्न उठैत अछि। कवि कथित निर्थक गप्पकेँ ऋतु, जीव-जंतु आ श्रमक सूक्ष्म अभिलेखमे बदलि देलनि; ओकर शीर्षक संग्रहक समूचा सामाजिक परिप्रेक्ष्यकेँ बाँधबाक क्षमता रखैत अछि।

४. लोकविश्वास, पाबनि आ निजी-सामूहिक आकांक्षा

पाबनि पर साफीक कवितामे शास्त्रीय विधानक विवरण नहि, घर-आँगनक श्रव्य-दृश्य क्रिया प्रमुख अछि। जल माथपर देनाइ, प्रसाद बननाइ, भाय-बहिनक मेल, मेला, नहान आ पाहुनकेँ नेनाइ—ई क्रियासभ स्मृति-समुदाय बनबैत अछि। मुदा लोकरीतिकेँ स्वतः

40 साफी, ओहि पोथीमे, 'बैशाखमे दलानपर', पृ. ६४–६५।

समतामूलक मानब उचित नहि; ओकरा भीतर श्रम, लिंग आ सुलभ संसाधनक प्रश्न उपस्थित रहैत अछि।

४.१. 'सपनामे देखलहुँ' : स्वप्नक विदूषक छवि

एहि कवितामे महिषक पीठपर मंच, गोपीचनक नाच, मेला-जकाँ आनन्द, मिरदङ, मुरही आ जलेबीक संसार बनैत अछि। अन्तमे भोरे उठलापर गोबरक चोथपर पड़ल कथक स्वप्न आ वास्तविकताक दूरीकेँ एक झटकामे उजागर करैत अछि।[41]

हास्यक स्रोत दू विपरीत स्थानक टकराव अछि: कल्पनाक सार्वजनिक मंच आ पशुशालाक जमीन। गोबर 'नीच' वस्तु होइतो केवल घृणाक विषय नहि; ओकरा भीतर गामक दैनिक यथार्थ निहित अछि। कविताक छोट कथात्मक मोड़ लोककथाक कौशल जकाँ काम करैत अछि। समस्त दृश्यकेँ आत्मकथात्मक सत्य मानब उचित नहि; ई एकटा नाटकीय कथकक विनोदपूर्ण सपना अछि।

४.२. 'कौआ कुचरैए पाहुन अबैए' : स्त्री-प्रतीक्षा आ घरेलू तैयारी

कौआक आवाजकेँ पाहुन अथवा प्रियजनक आगमनक सगुन मानबाक लोकविश्वासपर ई कविता आधारित अछि। प्रतीक्षारत स्त्री अंगना नीपैत अछि, दुआरि बहारैत अछि, भोजनक कल्पना करैत अछि, टोला-परिवारकेँ निमन्त्रण देबाक आनन्द व्यक्त करैत अछि। साड़ी, सैण्डल, पर्स आ मिठाइक अपेक्षासँ प्रियजनक आगमन घरेलू चाहनासँ संयुक्त होइत अछि।[42]

कविता पाबनिक भव्यता नहि, अपन देह आ घरक साधारण इच्छा सोझाँ अनैत अछि। एकरा केवल 'नारीक स्वभाव'क स्थिर चित्र मानब सीमित पाठ होयत। इंतजारमे पहिरन,

---

41 साफी, ओहि पोथीमे, 'सपनामे देखलहुँ', पृ. २१–२२।

42 साफी, ओहि पोथीमे, 'कौआ कुचरैए पाहुन अबैए', पृ. २२–२३।

पदार्थ आ स्नेह अछि, किन्तु श्रमक भार सेहो अछि: भोजनक पूरा आयोजन स्वयं प्रतीक्षारत व्यक्ति करैत अछि। कविताक आत्मीयता एहि अदृश्य तैयारीक कारण बनैत अछि।

४.३. 'जूड़शीतल' : पानिक स्पर्श आ पीढ़ीक अनुक्रम

'जूड़शीतल'मे छोट पैमानापर जलक एकटा सार्वजनिक संस्कार उपस्थित अछि। माथपर ठंढा पानि दैत घरक लोक, सत्तू-पूरीक भोजन, पितर-स्मरण, मुनगा, आमक टिकुला आ पूजा—ई सभ वसन्तसँ गर्मी दिस बढ़ैत ऋतुचक्रक बीच शीतलताक सामाजिक अनुभूति बनबैत अछि।[43]

आश्चर्य ई जे पानि एतए जीवन-बचाउ कठिन संसाधनक बदला स्नेह आ आशीर्वादक माध्यम अछि। एहि अर्थकेँ 'रौदी भऽ गेल' आ 'गामक इनार'क संग जोड़ला पर पानिक तीन अलग साहित्यिक रूप प्रकट होइत अछि—जीविका, संस्कार आ समुदाय। एतए कवि पाबनिक वस्तुसभ गनबैत छथि; बिम्बक ताजगी अछि, मुदा अनुपस्थित प्रश्न ई रहल जे ओहि उत्सवक श्रम आ उपलब्धता विभिन्न परिवारमे समान अछि वा नहि।

४.४. 'कातिकक पूर्णिमा' : कमला, मेला आ सामा-चकेवा

कमलाक धार, भोरे स्नान, मेला, कुसियार, चूड़ा आ सामा-चकेवाक गीतक संग ई कविता नदीकेँ केवल भौगोलिक जलधारा नहि, सामुदायिक समय बनबैत अछि। भाय-बहिनक स्नेह आ नदीक किनाराक समागम स्थल चित्रित होइत अछि। सामा-चकेवाक पारिस्थितिक-सांस्कृतिक अध्ययनसभ पाबनिक पक्षी-संसार आ लैङ्गिक अनुष्ठानक परस्पर सम्बन्ध दिस सेहो संकेत करैत अछि; एहि व्यापक सन्दर्भमे कविताक पक्षी आ नदीप्रेम अधिक अर्थवान होइत अछि।[44][45]

43 साफी, ओहि पोथीमे, 'जूड़शीतल', पृ. २४–२५।

44 साफी, ओहि पोथीमे, 'कातिकक पूर्णिमा', पृ. ५८–५९।

कविता मेला आ पाबनिक सतहपर अधिक ठहरैत अछि; स्त्री-गीतक अपन भीतरक प्रतिरोध वा पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर विस्तृत प्रश्न नहि पूछैत। तइयो 'माए-बहिन'क सामूहिक उपस्थिति घरेलू सीमासँ बाहर आबि नदी-कछेराक सार्वजनिकता बनबैत अछि। ई सार्वजनिकता 'दलान'क पुरुष-वृत्तसँ भिन्न अछि।

५. हास्य, भोज आ ग्राम्य उपभोगक राजनीति

साफीक अनेक कविता पाठककेँ पहिने हँसाबैत अछि; हँसी थमलाक बाद परम्परा, दिखावा, धन-व्यवहार आ नातेदारीक असहज प्रश्न बचैत अछि। ई हास्य शुद्ध मनोरञ्जन नहि; ओकर भीतर सामाजिक मूल्यांकनक दृष्टि अछि। मुदा ठहक्का सबसँ सशक्त ओतए बनैत अछि जतए भाषिक अतिशयोक्ति कोनो ठोस जीवनवस्तुसँ टकराइत अछि।

५.१. 'आबक दुलारू बेटा' : पीढ़ीक शिकायतक भाषा

ई कविता नहि पढ़निहार, तम्बाकू दिस दौड़निहार, नबका पहिरन माँगनिहार आ विद्यालयसँ कतरानिहार बालकक चित्र बनबैत अछि। नक्कल, पुनरावृत्ति आ स्थानीय तंजक सहारे 'आजुक नेना' पर शिकायत होइत अछि।[46]

परन्तु पाठककेँ एतए कथकक पक्षपात बुझबाक चाही। युवा पीढ़ीक प्रति वृद्ध नैतिक दृष्टि स्वतः सामाजिक तथ्य नहि। कविता अनुशासनहीनताक चित्र तँ दैत अछि, मुदा बालकक स्कूलसँ दूरीक अन्य कारण—संसाधन, शिक्षणक स्तर, श्रम अथवा मनोस्थिति—पर प्रश्न नहि करैत। संग्रहक आत्मकथा खण्डमे पढ़ाइक रुकावट आर्थिक बाध्यतासँ आइल अछि।

---

45 विकास के. वर्मा, "Region, Culture and Environment: Gleaning Socio-Ecological Content from the Sama Chakeva Festival in the Mithila Region," Journal of Indian History and Culture, अंक ३१, जून २०२३।

46 साफी, ओहि पोथीमे, 'आबक दुलारू बेटा', पृ. १९–२०।

एहि विरोधक कारण कविता आ आत्मकथाक बीच उपयोगी तर्क-विमर्श जन्मैत अछि: सभ पढ़ाइ-विरोध आलस्य नहि होइत।

५.२. ‘आसकतिये गंगा दूर’ : लत, निष्क्रियता आ घरक भय

भाँग, ताश, नहाएबाक फुरसतिक अभाव आ श्रमक तिरस्कारक उपहाससँ ई कविता आसक्त व्यक्तिक रेखाचित्र बनबैत अछि। कविता घरक डेरायल बच्चासभकेँ सेहो देखैत अछि; एहि कारण लत केवल व्यक्तिगत आदत नहि, घरेलू वातावरणक संकट बनैत अछि।[47]

ई रचना नैतिक उपदेशक निकट अछि, मुदा चरित्रक विरोधाभास ओकरा जीवन्त करैत अछि: जे लोक अपन देहक अवस्था सुधारबाक समय नहि निकालि पबैत, से ताशक लेल दिन बितबैत अछि। ‘गंगा दूर’क लोकप्रचलित शीर्षक आसक्तिक कारण निकट वस्तु दूर भऽ जाएबाक बोधक संग व्यंग्य रचैत अछि। नशासँ जुड़ल सामाजिक समस्या पर कविक दृष्टि संवेदनशील अछि, मुदा नशाक समाज-आर्थिक कारणक विस्तृत पड़ताल एतए नहि अछि।

५.३. ‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’ : परोसन आ पेटक विनोद

बरियातक भोजमे कोला, बिस्कुट, चाह, पान, तरुआ, पूरी, माछ, दही आ रसगुल्लाक क्रम बढ़ैत जाइत अछि। खेनिहारक पेट भरलाक बादो परोसल जा रहल अछि; अतिशयोक्ति एहि विसंगतिकेँ हास्य बनबैत अछि। अन्तमे पाचन लेल गोली खाएब भोजक भव्यताकेँ विडम्बनामे बदलैत अछि।[48]

खाद्यपदार्थक विस्तृत सूची स्थानीय स्वादक समाजशास्त्र सेहो अछि। भोजमे प्रतिष्ठा खाद्य-विविधताक प्रदर्शनसँ जुड़ि जाइत अछि। ‘कतेक भोजन’क प्रश्न ‘कतेक सम्मान’क प्रतियोगिता बनैत अछि। कविता संसाधनक असमान बँटवारापर प्रत्यक्ष टिप्पणी नहि करैत,

---

47 साफी, ओहि पोथीमे, ‘आसकतिये गंगा दूर’, पृ. २६–२७।

48 साफी, ओहि पोथीमे, ‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’, पृ. २८–२९।

मुदा बहुल भोजन आ असुविधाग्रस्त देहक दृश्य उपभोगक सामाजिक विकृतिपर संकेत करैत अछि।

५.४. 'ओ दिन बिसरि गेलही रौ' : स्मृति आ छद्म-संन्यास

बाल्यक संग खेलल मित्रकेँ देखबा पर कथक ओकर नवका साधु-संयमी रूपक विडम्बना उद्घाटित करैत अछि। कबड्डी, मिलजुल कऽ खेनाइ आ पुरान दोस्तीक स्मृति वर्तमानक दिखावाक विरुद्ध साक्ष्य बनैत अछि। एहि कविताक नाटकीयता प्रत्यक्ष सम्बोधन—'रौ'—सँ बनैत अछि, जे मित्रताक निकटता आ कटाक्ष दुनू वहन करैत अछि।[49]

सामाजिक आलोचना एतए धार्मिक आडम्बरक अछि, धर्मक सर्वथा अस्वीकृतिक नहि। कविता व्यवहार आ घोषणा बीचक असंगति पर चोट करैत अछि। तैँ ई संग्रहक ओहि हास्यधारासँ जुड़ैत अछि जकर लक्ष्य बाहरी प्रतिष्ठासँ बेसी व्यवहारक सत्य देखब अछि।

५.५. 'घर ऊँच आ कान बुच' : धनिक प्रतिष्ठाक खोखलपन

घरक आकार, हाथी-घोड़ाक प्रदर्शन, धानक बोरा आ भयावह कुकुरक बीच प्रतिष्ठा-बोध बनल अछि; मुदा वास्तविक आतिथ्य आ मानवीय सद्भावक अभाव सेहो उजागर होइत अछि। 'घर ऊँच' आ 'कान बुच'क विरोध लोककथा-जकाँ सहज, मुदा सामाजिक रूपसँ प्रभावशाली अछि।[50]

कविताक व्यंग्य सम्पत्तिक स्वामित्व मात्रपर नहि, ओकरा व्यवहारिक उन्नतिक प्रमाण मानबाक प्रवृत्तिपर अछि। एकरे सन्दर्भमे लेखकक दृष्टि साधारण जनक ओर झुकैत देखाइत अछि। तथापि धनी व्यक्ति एतए लगभग एकरंगिया खलचरित्र बनि जाइत अछि; ओ जटिल मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व नहि। व्यंग्यक त्वरित प्रभाव एकर कलात्मक लाभ अछि, एकर सीमा सेहो।

---

49 साफी, ओहि पोथीमे, 'ओ दिन बिसरि गेलही रौ', पृ. ३६–३७।

50 साफी, ओहि पोथीमे, 'घर ऊँच आ कान बुच', पृ. ४०–४१।

५.६. ‘रसगुल्लाक जबार’ : निमन्त्रणक सामूहिक लय

‘नोत दै छी’क पुनरावृत्ति एहि कवितामे refrain बनैत अछि। कथक गामक लोककेँ रसगुल्ला खएबाक निमन्त्रण दैत अछि; मिठाइ-बाँटबाक घटना छोट सामूहिक उत्सवक रूप ग्रहण करैत अछि। कविता उच्च काव्यालंकारक सहारा नहि लैत अछि; स्वरक पुनरागमन आ नाम लऽ कऽ सम्बोधनसँ पाठक समक्ष एकटा प्रदर्शनकारी लोकधुन उत्पन्न करैत अछि।[51]

‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’ भोजनक अतिरेकपर हँसैत अछि, जखन ई कविता भोजन बाँटबाक उत्साहकेँ प्रधानता दैत अछि। दुनूकेँ मिलाकऽ देखला पर भोजक दोहरा मूल्य—दिखावा आ साझा आनन्द—स्पष्ट होइत अछि। मुदा कवितामे अतिरिक्त कलात्मक तनाव कम; ओकर प्रभाव मुख्यतः गायन-प्रदर्शन आ सामुदायिक सम्बोधनमे अछि।

६. परिवार, बुढ़ापा, भूमि आ पारिवारिक अर्थतन्त्र

कविताक पारिवारिक संसार भावुक आदर्शग्राम नहि। बेटा-पुतौह अलग होइत छथि, बूढ़ लोक अनादृत रहि जाइत छथि, खेतक बँटवारा आवश्यक बनैत अछि, आ छोट-छोट आर्थिक निर्णय परिवारक मर्यादासँ भिड़ैत अछि। पारिवारिक एकताक लालसा अनेक कविता पर छाओल अछि; मुदा एहि लालसाकेँ आलोचना बिनु सामाजिक सत्य मानि लेब उचित नहि।

६.१. ‘बानरक माया पुँछपर’ : स्नेह आ वृद्धावस्थाक असुरक्षा

बानरक पुछपर लगावक लोक-तुलनासँ माता-पिताक संतानप्रेमक प्रसंग उठैत अछि। विवाहक बाद बेटा-बहिन अलग भऽ जाइत छथि, सम्पत्तिक बँटवारा पारिवारिक दूरी बढ़बैत अछि, आ बूढ़ माता-पिता मौन आँसू बहबैत छथि।[52]

कविता अपन केन्द्रीय संवेदना स्पष्ट करैत अछि—जीवन भरि देल स्नेह वृद्धावस्थामे संरक्षणक गारण्टी नहि। तथापि पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवारक आदर्श एतए किछु हद धरि

51 साफी, ओहि पोथीमे, ‘रसगुल्लाक जबार’, पृ. ५४–५५।

52 साफी, ओहि पोथीमे, ‘बानरक माया पुँछपर’, पृ. ३०–३१।

पूर्वधारणा अछि। बहिनक सासुर गमन, बेटाक सम्पत्ति पर झगड़ा आ माता-पिताक सेवा—ई सभ भूमिका प्रश्नवाचक बनबा योग्य अछि। सामाजिक पीड़ाक प्रस्तुति प्रभावी अछि, मुदा भिन्न पारिवारिक संरचनाक सम्भावना पर कविताक दृष्टि कम पड़ैत अछि।

६.२. 'पंचनामा' : भावना सँ कागजी अधिकार धरि

'पंचनामा'मे बूढ़ लोक अपन परिजनकेँ भविष्यक झगड़ा टारबाक लेल खेत, घरारी, बाड़ी, डोरा, नाप-जोख, रसीद आ लिखित कागजक बात कहैत अछि। पारिवारिक मेल-जोल मात्र भावुक उपदेश नहि; जमीनक सीमाङ्कन आ दस्तावेजीकरण एकर व्यवहारिक पक्ष अछि।[53]

ई कविता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण लोककवितामे अमीन, रसीद, पंच आ नाप-जोख सन शब्द सामाजिक संस्थाक प्रवेश करबैत अछि। काव्यक सामग्री दरबार वा उपवन नहि, जमीनी अधिकारक विवाद अछि। तथापि 'सभक कागज'क नैतिक आग्रहकेँ स्वतः लैङ्गिक बराबरीक लिखित घोषणा नहि कहि सकैत छी; उत्तराधिकारमे बेटी आ बेटाक समान हिस्सा कवितामे स्पष्ट नहि। ई मौन सामाजिक आलोचनाक विषय अछि।

६.३. 'बाड़ीक पटुआ तीत' : शिक्षा-बजार आ पुरान पीढ़ीक विवशता

एहि कवितामे बाबू नवका पीढ़ीक खर्च आ शहरी विद्यालयक चाहनापर कटाक्ष करैत छथि। अपन समयमे खेतक काज करैत, चप्पल-बैग बिना, पीपड़ गाछ तर पढ़ल अनुभव हुनका तर्कक आधार अछि। विद्यालयक निजीकरणक सन्दर्भमे शिक्षा व्यवसाय बनैत अछि; 'गाममे पढ़' आ 'मधुबनीमे पढ़'क विरोध शिक्षा-आकांक्षा आ आर्थिक सामर्थ्यक संघर्ष अछि।[54]

53 साफी, ओहि पोथीमे, 'पंचनामा', पृ. ३२–३३।

54 साफी, ओहि पोथीमे, 'बाड़ीक पटुआ तीत', पृ. ४४–४५।

कवि समस्या पकड़ैत छथि, मुदा समाधान ओतेक स्पष्ट नहि। पुरान पीढ़ीक कठिनाइकेँ आदर्श बना देलासँ नव पीढ़ीक गुणात्मक शिक्षाक आकांक्षाकेँ अनुचित कहल जा सकैत अछि। पिता-पुत्रक टकरावमे मुख्य प्रश्न केवल अपव्यय नहि; सार्वजनिक शिक्षा पर भरोसा घटबाक, निजी विद्यालयक लागत आ अवसरक असमानताक सेहो अछि। एहि कारण कविता अपन उपदेशात्मक आवरणसँ बेसी व्यापक सामाजिक प्रश्न प्रस्तुत करैत अछि।

६.४. 'जतेकके बौउह नै ओतेकके लहठी' : पशुपालनक आर्थिक गणित

महिष कीनबाक इच्छा आ महिषपालनक वास्तविक लागतक बीच ई कविता संवाद रचैत अछि। दूध, गोबर, गोइठा, पाहुनक सेवा आ छोट आमदनीक आशा पहिने अबैत अछि; तकरा बाद चारा, पुआर, भुसा, श्रम आ खरीद-कीमतक गणना शुरू होइत अछि। अन्तमे महिष नहि लेबाक निर्णय इच्छा आ सामर्थ्यक अन्तरकेँ हास्यपूर्ण तीक्ष्णता दैत अछि।[55]

एहिठाम पशुधन मात्र ग्राम्य शोभा नहि; पूँजीक एकटा जोखिमपूर्ण निवेश अछि। खोराकक महीन गणना आ श्रमक असंख्य घण्टा लोक-अर्थनीतिक यथार्थ उद्घाटित करैत अछि। कविताक नैतिकता 'लोभ छोड़ू' मात्र नहि; कम साधनक परिवारक लेल निवेश करब कतेक कठिन अछि, सेहो। संवादक विकास क्रमशः आशासँ हिचकिचाहट धरि जाइत अछि—ई एकर सफल कथात्मक विन्यास अछि।

६.५. 'मन लगले रहि गेल' : आधुनिक समृद्धिक स्वप्नक अधूरापन

जमीन, मोटरकार, फ्लैट, दरबान, स्विमिंग पुल, व्यवसाय आ हवाई यात्राक चाहना कवितामे एक-एक कऽ बढ़ैत अछि। वस्तुक ई ऊर्ध्वगामी सूची आमदनीक ठोस हिसाब नहि, समृद्धिक कल्पनात्मक विस्तार अछि। अन्तिम संकेत ई अछि जे मनमे बनल समस्त वैभव अधूरल रहि गेल।[56]

---

55 साफी, ओहि पोथीमे, 'जतेकके बौउह नै ओतेकके लहठी', पृ. ४६–४८।

56 साफी, ओहि पोथीमे, 'मन लगले रहि गेल', पृ. ४८–४९।

एहि कविता पर केवल उपभोक्तावादक धिक्कार थोपि नहि सकैत छी। अभावक दुनियासँ उठल व्यक्ति समृद्ध जीवनक सपना देखैत अछि—एहि सपनाक सामाजिक वैधता अछि। व्यंग्य वस्तुक आकांक्षापर कम, कल्पना आ साधनक असीम दूरीपर बेसी अछि। भाषामे प्रयुक्त 'फ्लैट', 'बिजनेस', 'स्विमिंग पुल' सन शब्द ग्रामीण जीवनमे शहरी सम्पन्नताक प्रतीकक प्रवेश बतबैत अछि।

६.६. 'मरैतखीन रसगुल्ला खाएब' : सम्पत्ति, एकान्त आ असफल सेवा

जमीन, आमगाछ, पोखरि, बैल आ अन्नक समृद्धि आरम्भमे सफल जीवनक परिचय दैत अछि; मुदा पुत्रसभ अलग भऽ गेल छथि आ वृद्ध व्यक्ति दलानमे असगर रहैत अछि। रातिक अन्हार, मच्छर, अपर्याप्त इजोत, औषधिक अभाव आ जूताक प्रतीक्षा धीरे-धीरे समृद्धिक कथा उलटि दैत अछि। अन्तिम क्षणमे बेटाक रसगुल्ला खएबाक प्रश्न अत्यन्त तीक्ष्ण व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि: जीवन भरि चाहल सेवा मरबाक समय भोजनक औपचारिक प्रश्न बनि गेल।[57]

एहि रचनामे 'दलान'क स्वरूप शीर्षक-कवितासँ उलट अछि। ओतए दलान सामूहिक विनोदक स्थान, एतए वृद्धक एकान्तक स्थल। एकहि वास्तुस्थानमे सम्मानित बैठक आ बेदखल मनुष्यक निर्जनता मिलैत अछि। ई संग्रहक सर्वाधिक प्रभावकारी अन्तर्ध्वनिसभमे एक अछि। रसगुल्ला एतए मिठाइक रूपमे नहि, बेमेल ममताक देरीसँ आयल प्रतीकक रूपमे काम करैत अछि।

७. स्त्रीक देह, घरेलू श्रम आ पितृसत्तात्मक अन्तर्विरोध

साफीक कविता खण्डक लिंग-संबन्धी पक्ष सर्वाधिक जटिल अछि। एक दिस घरमे खटैत जननीपर अत्याचारक तीक्ष्ण प्रश्न अछि; दोसर दिस 'पढ़ल-लिखल कनियाँ'क स्वतन्त्र व्यवहारकेँ परम्परागत आदर्शक क्षय मानल जाइत अछि। दुनू स्वर एकहिठाम उपस्थित

57 साफी, ओहि पोथीमे, 'मरैतखीन रसगुल्ला खाएब', पृ. ४९–५१।

छथि। आलोचनाकेँ एतए लोकजीवनक प्रतिष्ठाक कारण स्त्री-विरोधी उपदेशकेँ सहर्ष स्वीकार नहि करबाक चाही। रेगेक दलित स्त्रीलेखन-विमर्श श्रम, हिंसा, जाति आ लिंगक संयुक्त अनुभवक प्रश्न उठबैत अछि; एहि दृष्टिसँ साफीक कवितासभकेँ भीतरक सामाजिक असमानताक आधारपर सेहो परखल जा सकैत अछि।[58]

७.१. 'मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै' : घरेलू हिंसाक सूक्ष्म बहाना

ई कविता दिन भरि घास-भुसा, बच्चाक देखरेख, भानस आ आँगनक काज करनिहार स्त्रीक श्रम गनबैत अछि। पुरुषक निष्क्रियता आ केवल नीक भोजनक अपेक्षा पितृसत्तात्मक विशेषाधिकार बनि उठैत अछि। मारपीटक बहाना सागमे हरदी नहि पड़बाक सन नगण्य त्रुटि अछि।[59]

कविताक सभसँ प्रभावी पक्ष हिंसाक कारणक अनुपातहीनता अछि। स्त्री पूरा घर चलबैत अछि, मुदा ओकर श्रम अदृश्य रहैत अछि; दू पैसाक मसाला तक पुरुषक हिंसक अधिकारक आधार बनि जाइत अछि। ई रचना केवल करुणा नहि उत्पन्न करैत, श्रम-विभाजनक अन्याय पकड़ैत अछि। सामाजिक-साहित्यिक दृष्टिसँ ई साफीक महत्त्वपूर्ण स्त्री-पक्षीय क्षण अछि। एकर शब्दक सरलता संदेशक गम्भीरता घटबैत नहि।

७.२. रूसिक नैहर जेबाक प्रसंग : प्रताड़ना, डाइनक आरोप आ पंचायत

गृहकलहक कारण घर छोड़बाक, रेलक सामने प्राण देबाक धमकी देबाक, 'डाइन' कहबाक आरोप झेलबाक आ मार खएबाक स्त्री-स्वर एहि कवितामे प्रत्यक्ष सुनाइत अछि।

---

58 शर्मिला रेगे, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios (नई दिल्ली: जुबान, २००६); दलित स्त्रीक अनुभव आ जाति-लैङ्गिक अन्तर्सम्बन्धक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य।

59 साफी, ओहि पोथीमे, 'मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै', पृ. ३४–३५।

दोसर पात्र सान्त्वना दैत अछि; अन्तमे पंचायतक हस्तक्षेप सेहो व्यंग्यक विषय बनैत अछि।[60]

ई कविता घरेलू हिंसाक विषयकेँ संवाद-नाट्य बनबैत अछि। पीड़ित स्त्री स्वयं बजैत अछि—ई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। तथापि सान्त्वनाक स्वर 'घरमे झगड़ा तऽ होइते अछि' कहि हिंसाकेँ सामान्य बनएबाक जोखिम उठबैत अछि। एहि कारण रचनाक भीतर प्रतिकार आ समझौताक द्वैत अछि। 'डाइन'क आरोपकेँ हलुक लोक-झगड़ा मानबाक बदला सामाजिक नियन्त्रणक एकटा खतरनाक साधन बुझब आवश्यक अछि।

७.३. 'सेवा' : पुतोहुक प्रतीक्षामे स्त्रीक श्रमक अधिकार कतेक?

वृद्धक आवाजमे बेटाक विवाहक इच्छा मुख्यतः एहि आशासँ उठैत अछि जे पुतोहु अंगनाक काज आ सेवा करथि। मुदा गामक 'पढ़ल-लिखल कनियाँ'क उदाहरण सुनि कथक भयभीत होइत छथि। पढ़ाइ केने स्त्री देरिसँ उठैत अछि, परदा-परम्परा नहि मानैत अछि आ सासुरक रूढ़ि तोड़ैत अछि—एहन शिकायत कविताक निष्कर्षक आधार बनैत अछि।[61]

एहि पाठकेँ आलोचना बिनु 'परम्पराक रक्षा'क कविता कहि देब दलित साहित्यक विमर्श लेल सेहो अपर्याप्त होयत। जखन 'मारैके मन…'मे जननीक अनिवार्य श्रम पर सहानुभूति अछि, तखन एतए नवविवाहित स्त्रीकेँ मुफ्त घरेलू सेवाक माध्यम मानबाक चाहनापर प्रश्न नहि उठाओल गेल। कथकक दृष्टि आ लेखकक स्वतः स्वीकृति एक नहि होइ सकैत; मुदा कवितामे एहि दृष्टिक स्पष्ट प्रत्याख्यानो नहि अछि। एकर नैतिक-अन्तर्विरोध समीक्षा केन्द्रीय बिन्दु थिक।[62]

---

60 साफी, ओहि पोथीमे, रूसिक नैहर जेबाक प्रसंगवाली कविता, पृ. ३८–३९।

61 साफी, ओहि पोथीमे, 'सेवा', पृ. ६६–६७।

62 साफीक 'मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै', 'रूसिक नैहर जेबाक प्रसंगवाली कविता' आ 'सेवा'क तुलनात्मक अध्ययन, बैशाखमे दलानपर, पृ. ३४–३९ आ ६६–६७।

७.४. 'बानरक माया...' आ 'कौआ कुचरैए...' : स्त्रीक दू अलग सामाजिक छवि

एक कवितामे बेटी सासुर जा रहल अछि आ पारिवारिक जमीनक कथा बेटाक बीच घूमैत अछि; दोसरमे स्त्री प्रियजनक आगमन पर घर सजा रहल अछि। एके संग्रहमे स्त्री मातृत्व, बहिन, पुतोहु, गृहस्वामिनी आ पीड़ित पत्नी अनेक रूपमे उपस्थित अछि। किन्तु ओकर निजी आकांक्षाक स्वतन्त्र विस्तार अपेक्षाकृत अल्प अछि।

उर्मिला पवारक दलित स्त्री-आत्मवृत्तान्त जीवनक श्रम आ आत्मबोधकेँ स्त्रीकेँ स्वयं कहबाक अधिकार दैत अछि। एहि तुलनात्मक सन्दर्भसँ बुझाइत अछि जे साफीक कविता स्त्री-श्रम देखैत अवश्य अछि, मुदा अधिकांश ठाम स्त्रीक अनुभव पुरुष कथकक नैतिक चौखटमे विन्यस्त रहैत अछि। ई अन्तर आलोचनात्मक उल्लेखक योग्य अछि; दुनू साहित्यिक पाठक सांस्कृतिक-भाषिक भिन्नता बनल रहबाक चाही।[63]

८. शिक्षा, युवा पीढ़ी आ लुप्त होइत सामुदायिक ढाँचा

शिक्षा सम्बन्धी कवितासभकेँ लेखकक आत्मकथाक संग पढ़लापर अनोखा अन्तर्विरोध देखाइत अछि। आत्मकथामे आर्थिक बाधा शिक्षा रोकैत अछि; कवितामे नवका युवा कखनो आलसी, विलासी वा फिजूल खर्चक दोषी बनैत अछि। एकटा खण्ड व्यवस्था-विरोधी प्रश्नकेँ उभारैत अछि, दोसर खण्ड पीढ़ीक नैतिक दोषकेँ रेखांकित करैत अछि। ई द्वैत रचनात्मक संग्रहक साक्ष्य अछि, लेखकीय कमजोरी कहि छोड़ि देबाक बहाना नहि।[64]

63 उर्मिला पवार, The Weave of My Life: A Dalit Woman's Memoirs, अनु. माया पण्डित (न्यूयॉर्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, २००९)।

64 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३; एहि खण्डमे लेखक अपन धोबी समुदाय, शिक्षा-संघर्ष आ प्रवासक विवरण दैत छथि। कविता-पाठकेँ आत्मकथाक सीधा पुनर्लेखन नहि, अलग साहित्यिक विन्यास मानल गेल अछि।

८.१. 'आबक छौरा सभ बड़ सुकुमार' सँ आरम्भ होइत कविता : श्रमक नैतिकता

एहि कवितामे आधुनिक फैशन, चिलम, मोटरसाइकिल, पिता द्वारा देल उपहारक अपव्यय आ खेतीसँ दूरी पर वृद्ध कथकक तंज अछि। ओ अपन साठि वर्षक मेहनतक तुलना नव पीढ़ीक आलस्यसँ करैत अछि। वस्तुसभक गिनती उपभोग-संस्कृतिक परिवर्तित स्वप्नक परिचायक अछि।[65]

व्यंग्यक ठोस अर्थ ई नहि जे सभ युवा समान आलसी छथि। खेतीक उपयोगिता, रोजगारीक अवसर आ उपभोक्तावादी दिखावाक बीच आधुनिक ग्रामीण समाजमे अनेक दबाब अछि। कविताक एकरंगिया पीढ़ीगत दोषारोपण ओकर सीमा अछि। तथापि खेतसँ टूटैत व्यवहारिक सम्बन्ध पर कविता उचित चिन्ता व्यक्त करैत अछि।

८.२. 'पंचनामा' आ 'बाड़ीक पटुआ तीत' : परम्परा, कागज आ शिक्षा

'पंचनामा'मे कागज-रसीद वैध अधिकारक साधन बनैत अछि; 'बाड़ीक पटुआ तीत'मे निजी विद्यालय ज्ञानक महँग बजार बनैत अछि। आधुनिकता दू अलग रूपमे उपस्थित अछि—दस्तावेजीकरण व्यवस्था सुधारि सकैत अछि, बजार-शिक्षा असमानता बढ़ा सकैत अछि।[66]

ई तुलना संग्रहक सूक्ष्म आधुनिकताबोधकेँ स्पष्ट करैत अछि। कवि सभ नब वस्तुक विरोध नहि करैत; ओ परिस्थिति अनुसार ओकर उपयोगिता अथवा दुष्परिणाम अनुभव करैत छथि। पंजीकृत जमीनक कागज पारिवारिक झगड़ा घटएबाक आशा दैत अछि, मुदा विद्यालयक फीस पिता-पुत्रक विवाद बढ़बैत अछि। एहि अलग-अलग उदाहरणसँ साहित्यिक दृष्टि केन्द्रीय नैतिक सूत्रक बदला स्थानीय उपयोगक अनुभवपर आधारित बुझाइत अछि।

---

65 साफी, ओहि पोथीमे, 'आबक छौरा सभ बड़ सुकुमार' सँ आरम्भ होइत कविता, पृ. ४२–४३।

66 साफी, बैशाखमे दलानपर, 'पंचनामा', 'बाड़ीक पटुआ तीत', 'वर बिकाय लगनमे', पृ. ३२–३३, ४४–४५, ६८–६९।

९. सामुदायिक जल, पोखरि आ गामक बदलैत स्थान

पानि साफीक कवितामे बहुरूपी पात्र अछि। रौदीमे जलक अभाव, जूड़शीतलमे जलक स्पर्श, सामा-चकेवामे नदीक किनार, महिषक स्नानमे पोखरि आ गामक इनारमे सार्वजनिक मिलन—ई सभ मिलि जलकेँ प्रकृति आ समाजक सेतु बनबैत अछि। एहि तुलनाक भीतर अभाव आ सामाजिक स्मृतिक सम्बन्ध विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

९.१. 'गामक इनार' : सार्वजनिक जलसँ निजी नल धरि

कविता पुरान गामक इनारकेँ स्त्री-पुरुषक भेट-घाट, पानि भरबाक सामूहिक क्रिया आ मेल-जोलक केन्द्र मानैत अछि। घर-घर नल लागलाक बाद सामुदायिक भेट कम भेल, ओ सार्वजनिक स्थल उपेक्षित होमए लागल—एहन विषाद रचनाक मुख्य स्वर अछि। 'कतऽ गेल घैलाक पानी' सामाजिक स्मृति आ जल-वितरणक रूपान्तरणकेँ एक प्रश्नमे समेटैत अछि।[67]

आलोचना एतए आवश्यक प्रतिप्रश्न उठबैत अछि। घरमे नल उपलब्ध होएब दूरसँ पानि ढोएनिहार स्त्रीसभक श्रम कम करि सकैत अछि। सार्वजनिक इनार सभकेँ समान रूपेँ उपलब्ध छल—एहन दावाक प्रमाण कवितामे नहि अछि। ओकर अन्तिम 'शुद्ध-अशुद्ध'क स्मृति परम्परागत पवित्रता-व्यवस्थाक सम्भावित बहिष्कारी अर्थ दिशि सेहो संकेत करैत अछि। तें गामक सामुदायिकता आ पानि पहुँचबाक अधिकारकेँ एकाकार करब नहि चाही। एहि दुइ छोरक बीच ई कविता सबसँ गहन आलोचनात्मक सम्भावना धारण करैत अछि।

67 साफी, ओहि पोथीमे, 'गामक इनार', पृ. ६०–६१।

९.२. ‘अपन गाँव’ : सौन्दर्यबोध आ ग्राम्य आदर्श

‘अपन गाँव’मे साफ हवा, पोखरि-इनार, कलम गाछ, पाखिर, कोल्हू, गुड़क गन्ध, गहुमक खेत आ आपसी सत्कारक छवि मिलैत अछि। प्रकृति आ समुदायक सम्बन्ध एतए जखन सुगन्ध, रङ आ ध्वनिसँ बनैत अछि, तखन गाम अपनपनक आदर्श स्थान बनैत अछि।[68]

मुदा एकरे संग्रहक दोसर कविता रौदी, पितृसत्तात्मक हिंसा, ऊँच-नीच, प्रतिष्ठाक खोखलपन आ निजी स्वार्थ देखबैत अछि। ‘अपन गाँव’ एहि सबहक निषेध नहि; गामक मनचाहा आदर्शक काव्य-रूप अछि। लेखकक गामसँ स्नेहकेँ सामाजिक संघर्षक अनुपस्थितिक प्रमाण नहि मानि सकैत छी। एकरा बहुरूपी गामक एकटा भावात्मक विन्यास मानब उचित अछि।[69]

१०. दहेज, विवाह आ प्रतिष्ठाक मंडी

विवाह सम्बन्धी कविता साफीक सामाजिक आलोचनाक धार स्पष्ट करैत अछि। एक दिस बरियातक भोजक हास्य अछि; दोसर दिस कन्याक परिवारक खेत बेचब आ वरक दाम बढ़ब विवाह-संस्थाक आर्थिक हिंसा उजागर करैत अछि। एहि रचनासभकेँ संग पढ़लापर उत्सव आ लेनदेनक द्वन्द्व सोझाँ अबैत अछि।

१०.१. ‘वर बिकाय लगनमे’ : विवाहक देनदारी नहि, बाजार-विनिमय

एहि कवितामे वरक ‘रेट’ बढ़ैत अछि, लड़काबला खेत बेचैत अछि, आ बारम्बार परीक्षामे असफल लड़को विवाहक बजारमे मूल्य पबैत अछि। ‘माछक जेना दाम बढ़ैए’ सन तुलना विवाहकेँ खुल्लमखुल्ला माल-व्यवहारक रूपमे उपस्थित करैत अछि। व्यंग्यक तीक्ष्णता

---

68 साफी, ओहि पोथीमे, ‘अपन गाँव’, पृ. ६२–६३।

69 साफीक ‘गामक इनार’ आ ‘अपन गाँव’क तुलना, बैशाखमे दलानपर, पृ. ६०–६३।

खासकर ओहि दृश्यमे अछि जतए शिक्षा नहि होइतहुँ वरक परिवार अपन मूल्य जतेक चाहय तय करैत अछि।[70]

कविता दहेजक निन्दा केवल नीति-उपदेशसँ नहि करैत; बाजारक शब्दावली अपनाकऽ मानवीय सम्बन्धक वस्तुकरणक विडम्बना देखबैत अछि। लिंगसम्बन्धी पूर्ववर्ती कवितासभमे जतेक रूढ़ि भेटैत अछि, एहिठाम विवाह-संस्थाक आलोचना ओतेक स्पष्ट अछि। ई तुलना बतबैत अछि जे संग्रह एकहि समय प्रगतिशील प्रश्न आ परम्परागत आशा दुनूकेँ ठाम दैत अछि।

१०.२. विवाहक अर्थव्यवस्था : भोज, दहेज आ पारिवारिक कामना

‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’मे भोजक अतिशयोक्ति, ‘वर बिकाय लगनमे’मे वरक मूल्य, आ ‘सेवा’मे विवाहक माध्यमसँ निःशुल्क घरेलू श्रम पएबाक आशा अछि। ई तीनू रूप विवाहकेँ अलग-अलग आर्थिक संस्था बनबैत अछि: प्रतिष्ठाक प्रदर्शन, धनक हस्तान्तरण आ घरेलू श्रमक पुनर्वितरण।[71]

जखन रचनासभकेँ एक-दोसरासँ जोड़ि देखैत छी, तखन विवाह केवल प्रणयक विधि नहि रहि जाइत; ओ परिवार, सम्पत्ति, समाज आ लिंग-अधिकारक संगम बनैत अछि। काव्यक ऊपरी विनोद एहि कठिन सम्बन्धसभकेँ छोपैत नहि; ओकर भीतर पाठक लेल जाँचक साधन बनैत अछि।

११. भाषिक विन्यास : बोलीक प्रत्युत्तर आ कथात्मक लय

साफीक कविता लोकक बोलबाक पद्धतिपर टिकैत अछि। ‘रौ’, ‘यौ’, ‘गै’, ‘समधि’, ‘बाबू’ सन सम्बोधन पाठककेँ सामाजिक सम्बन्धक भीतर उपस्थित करैत अछि। ई सम्बोधन मात्र स्थानीय रङ नहि; ओकरा सँ कियो पुरान परिचयक दावा करैत अछि, कियो व्यंग्यक

70 साफी, ओहि पोथीमे, ‘वर बिकाय लगनमे’, पृ. ६८–६९।

71 साफी, ओहि पोथीमे, ‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’, पृ. २८–२९।

अनुमति पबैत अछि, कियो सहायता माँगैत अछि, कियो तिरस्कार करैत अछि। बोलबाक अधिकार प्रसंगानुसार बदलैत अछि।

संग्रहमे मुक्त पाँतिक अनुशासन प्रमुख अछि। कतहुँ तुक मिलबाक चेष्टा, कतहुँ घन आवृत्ति, कतहुँ लोकधुनक साँचा, आ कतहुँ सामान्य कथनकेँ पाँतिमे बाँटि देबाक शैली भेटैत अछि। उदाहरणतः 'नोत दै छी'क बारम्बार आवृत्ति गायनयोग्य संरचना दैत अछि; 'सन-सन' शीतक ध्वनि बनैत अछि; 'झाउ-झाउ' कुकुरक आवाज; 'कौआ कुचरैए' सगुनक राग; 'आउ यौ यार' दलानक निमन्त्रण। एहि ध्वनि-आधारित संरचनासभमे पाठ लिखल भेला परो श्रवणक संस्कार जीवित अछि।

कवि कखनो वस्तुक नाम अनेक पाँतिमे जोड़ैत छथि। रौदीक विवरण, बरियाती भोजक सूची, पाबनिक खाद्य-विन्यास आ महिषक लागतक गणना यथार्थक घनत्व बढ़बैत अछि। मुदा लाम सूची-क्रम कविताकेँ वर्णन-संग्रह बनएबाक खतरा सेहो उत्पन्न करैत अछि। तें शिल्पक मूल्यांकनमे भाषा-विविधता मात्र पर्याप्त नहि; अर्थक नव घुमाव, ध्वनिक संगठन आ समापनक प्रभाव देखब चाही। 'सपनामे देखलहुँ' आ 'मरैतखीन रसगुल्ला खाएब'मे अन्तक झटका अपेक्षाकृत सघन अछि; 'बसंत पंचमी' आ 'अपन गाँव'मे दृश्य अधिक स्थिर अछि।

साफीक शैलीक एकटा विशेषता गद्यात्मक विन्यास अछि। लोक-कथोपकथन पाँति बनि जाइत अछि; किछु ठाम ई नाटकीय जीवन्तता दैत अछि, किछु ठाम कविता आ साधारण गपशपक सीमान्त धुँधला करैत अछि। ई सीमारेखा स्वतः दोष नहि, मुदा प्रत्येक पद्यक सफलता स्वतन्त्र जाँच माँगैत अछि।

१२. दलान : सार्वजनिकता, एकान्त आ सामाजिक दृष्टिबिन्दु

पोथीक शीर्षकक 'दलान' समस्त कविता खण्डकेँ पुनः पढ़बाक चाबी अछि। 'बैशाखमे दलानपर'मे मित्रक खेल-अवकाशक निमन्त्रण अछि; 'मरैतखीन रसगुल्ला खाएब'मे दलान वृद्धक असगर रहबाक स्थान बनैत अछि; 'आसकतिये गंगा दूर'मे एक दलानसँ दोसर दलान

घुमैत आसक्त लोक अछि; ‘ओ दिन बिसरि गेलही रौ’मे दलान परिचय-पुनःस्थापनक नाटकीय स्थल अछि। एकहि सामाजिक ठामक अर्थ परिस्थिति अनुसार बदलैत अछि।[72][73]

दलान तें केवल ‘परम्पराक सामूहिक चौक’ नहि। ओ पुरुष-प्रधान बैठक सेहो भऽ सकैत अछि; ओहि समय भीतरक आँगनमे स्त्री अनवरत श्रम करैत होयत। ओ चर्चाक केन्द्र अछि, मुदा सामाजिक बहिष्कारक सम्भावना रहितो नहि। ओ वृद्धक आश्रय अछि, मुदा उपेक्षाक चिह्न सेहो। एकहि ठामक एहि विरोधाभासमे संग्रहक स्वतन्त्र साहित्यिक समृद्धि निहित अछि।

‘गामक इनार’सँ दलानक तुलना करला पर सार्वजनिकता दोहरा स्वरूप पबैत अछि। इनार सामूहिक जलक श्रमसँ बनल मिलन-स्थल अछि; दलान विश्राम आ गप्पक स्थल। दुनूकेँ समान रूपेँ खुला मानबाक प्रमाण नहि। एहि अन्तर पर नजरि राखि पाठक लोक-रोमानीकरणसँ बचैत अछि आ कविताक सांस्कृतिक भूगोलकेँ अधिक सटीक रूपमे बुझैत अछि।

१३. दलित साहित्यिक दृष्टि : लेखकक सामाजिक स्थिति आ कविताक स्वायत्तता

साफीक आत्मकथामे धोबी जाति, परिवारक सेवा-श्रम, बाल्यावस्थाक कामक बोझ, बाधित शिक्षा आ प्रवासक विवरण अछि। एहि साक्ष्यसँ लेखकक सामाजिक स्थानक अनुमान नहि, प्रत्यक्ष आत्मपरिचय भेटैत अछि। मुदा कविता खण्डक प्रत्येक पात्रकेँ धोबी समुदायसँ आयल मानि लेनाइ अथवा प्रत्येक गृहस्थक समस्या सीधे अस्पृश्यताक परिणाम ठहराएब प्रमाणसँ बाहर जएबाक होयत। कविता कखनो स्वतन्त्र लोकपात्रक आवाजमे अछि, कखनो सामूहिक निरीक्षणमे।[74]

---

72 साफी, ओहि पोथीमे, ‘बैशाखमे दलानपर’, पृ. ६४–६५।

73 साफी, ओहि पोथीमे, ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’, पृ. ४९–५१।

दलित सौन्दर्यशास्त्रक उपयोग एहिठाम लेखककेँ निर्धारित राजनीतिक साँचासँ सीमित करब नहि, ओकर अनुभवक अधिकार स्वीकार करब अछि। धोबी परिवारसँ आयल कवि मिथिलाक ऋतु, उत्सव, भोजन, सामाजिक हास्य आ धार्मिक भावनापर लिखि सकैत छथि; साहित्यिक अधिकार केवल पीड़ाक वर्णन धरि सीमित नहि। एकर विपरीत, दलित सामाजिक पृष्ठभूमिक कारण हुनक प्रत्येक पाँति सामाजिक अन्यायक आलोचना होएत—ई मान्यता सेहो एक प्रकारक साहित्यिक बन्धन होयत।

डांगलेक सम्पादित मराठी दलित साहित्यक संकलन पद्य, कथा आ आत्मकथा सहित विविध विधामे दलित अभिव्यक्तिक विस्तार देखबैत अछि। ज़ेलियटक अध्ययन सामाजिक आन्दोलन आ साहित्यिक आत्मस्वरक ऐतिहासिक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। एहि तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यमे साफीक काव्य एकटा क्षेत्रीय, लोकबोलीप्रधान अभिव्यक्ति बनैत अछि; मराठी दलित आन्दोलनक शिल्प आ राजनीतिक पदावलीक यथावत पुनरावृत्ति नहि। युग, भाषा, साहित्यिक संस्था आ लेखकक अनुभवक भेद सुरक्षित राखब तुलनाक आवश्यक शर्त अछि।[75][76]

---

74 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३; एहि खण्डमे लेखक अपन धोबी समुदाय, शिक्षा-संघर्ष आ प्रवासक विवरण दैत छथि। कविता-पाठकेँ आत्मकथाक सीधा पुनर्लेखन नहि, अलग साहित्यिक विन्यास मानल गेल अछि।

75 अर्जुन डांगले (सम्पा.), Poisoned Bread: Translations from Modern Marathi Dalit Literature (ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, २००९ संस्करण; मूल संकलन १९९२)। प्रकाशकक विवरण: https://orientblackswan.com/details?obsin=2696 ।

76 एलेनोर ज़ेलियट, From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement (नई दिल्ली: मनोहर, १९९६ संस्करण)।

'मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा' सम्बन्धी सम्पादकीय मान्यता साफीक गद्य-खण्डक साहित्यिक इतिहाससँ जुड़ल अछि; एकरे आधारपर कविता खण्डकेँ 'पहिल दलित कविता-संग्रह' घोषित करब उचित नहि। एहि संग्रहक ऐतिहासिक स्थानक प्रमुख कारण पाँच विधाक सहअस्तित्व, सामाजिक प्रतिनिधित्वक विस्तार आ लोकबोलीक समकालीन मुद्रित साहित्यक दावेदारी अछि।[77][78]

१४. पाठक अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमासभ

रचनामे किछु दृश्यक शक्ति निस्सन्देह अछि, मुदा आलोचनात्मक मूल्यांकनमे निम्न अन्तर्विरोध स्पष्ट उभरैत अछि। घरेलू हिंसाक खिलाफ लिखल कविता आ सेवा खातिर पुतोहु चाहनिहार स्वर एकहि संग्रहमे अछि। 'गामक इनार' सामुदायिक एकताक स्मरण करबैत अछि, मुदा 'शुद्ध-अशुद्ध'क पुरान भेदक सम्भावित सामाजिक अर्थकेँ खुलि कऽ नहि परखैत। विद्यालयक महँग व्यवस्था पर प्रश्न अछि, मुदा नव पीढ़ीक पढ़ाइक आकांक्षाकेँ विलासिता

77 गजेन्द्र ठाकुर, आत्मकथा खण्डक आरम्भमे सम्पादकीय टिप्पणी, संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (२०१४), पृ. ६। ऐतिहासिक प्रथमत्वक ई सम्पादकीय कथन अछि; समस्त पूर्ववर्ती हस्तलिखित, अप्रकाशित आ पत्रिकागत सामग्रीक अन्तिम सर्वेक्षण नहि।

78 विदेह, "एडिटर्स चोइस सीरीज–७" सम्बन्धी प्रकाशकीय टिप्पणी; https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A ; गजेन्द्र ठाकुर, "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi", A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

कहबाक झुकाव सेहो अछि। विवाहक बाजार पर तीक्ष्ण कटाक्ष अछि, मुदा विवाहक माध्यमसँ घरेलू श्रमक उपलब्धिक चाहना सेहो व्यक्त भेल अछि।[79][80]

कोनो रचना केवल एहि कारण अमान्य नहि होइत जे ओकरा भीतर लेखकक समयक नैतिक सीमा देखल जाय। उलट, ओहि सीमाकेँ स्पष्ट करब पाठकेँ अधिक जीवित बनबैत अछि। साफीक कविता अनेक बेर ‘पुरान गामक नीक लोक’ बनाम ‘आबक बिगड़ल पीढ़ी’क द्विभाजन करैत अछि। एहि कारण आरम्भिक समाजशास्त्रीय निरीक्षण नैतिक सामान्यीकरणमे बदलि जाइत अछि। किछु कविताक रचनात्मकता श्रव्य पुनरुक्ति आ लोकबिम्बमे सघन अछि, जखन कि दोसरमे वाक्यक दोहराव, सीधा उपदेश अथवा अनुक्रमिक सूची काव्यात्मक ऊर्जा कम करैत अछि।

एक सीमाक विपरीत उपलब्धि सेहो उल्लेखनीय अछि। पोथीमे ‘गामक इनार’क जल, महिषक लागत, आलूक फसल, रसगुल्ला, हरदी, माछ, घैल, पुआर, पाँति, भानस आ उड़ीस सन वस्तुसभ साहित्यिक विषय बनैत अछि। एहि वस्तुसभमे श्रम आ जीवनक अर्थ अछि। कथित ‘साधारण’ वस्तुक ई गरिमा काव्यक सामाजिक क्षेत्र विस्तार करैत अछि। ई सामाजिक विस्तारक वास्तविक काव्यसिद्धि अछि; एही उपलब्धिक संग शिल्पगत अनियमितता आ नैतिक अन्तर्विरोध स्वीकार करब संतुलित समीक्षा होयत।

१५. तुलनात्मक निष्कर्ष : ऋतु, भोजन आ श्रमक त्रिकोण

संग्रहक कतेको कविताकेँ तीन अक्षपर एकत्र पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल अक्ष ऋतु: रौदी, माघक ठंढ, बसन्त आ बैशाखक ताप। दोसर अक्ष आहार: जूड़शीतलक सतुआ, बरियातक भोज, रसगुल्ला, माछ, पुरान खेतक उपज। तेसर अक्ष श्रम: खेती, पशुपालन,

79 साफीक ‘मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै’, ‘रूसिक नैहर जेबाक प्रसंगवाली कविता’ आ ‘सेवा’क तुलनात्मक अध्ययन, बैशाखमे दलानपर, पृ. ३४–३९ आ ६६–६७।

80 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘पंचनामा’, ‘बाड़ीक पटुआ तीत’, ‘वर बिकाय लगनमे’, पृ. ३२–३३, ४४–४५, ६८–६९।

भानस, बालपालन, जल भरब, कोल्हू आ वृद्धक सेवा। ई त्रिकोण जीविकाक व्यापक रूप निर्मित करैत अछि। ऋतु श्रमक शर्त बदलैत अछि; श्रम भोजनक सम्भावना बनबैत अछि; भोजन सम्बन्ध आ प्रतिष्ठाक चिह्न बनैत अछि।[81][82][83]

‘रौदी भऽ गेल’मे अन्नक भविष्य नष्ट होइत अछि, मुदा ‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’मे भोजनक सीमा पार करैत उपभोग देखाइत अछि। ‘जतेकके बौउह नै ओतेकके लहठी’मे दूधक आर्थिक गणना अछि, ‘रसगुल्लाक जबार’मे मिठाइक सामाजिक दान। ‘मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै’मे भोजनक तैयारी स्त्रीक दुर्दम्य श्रम अछि; ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’मे भोजन दैत सम्बन्धक असफलता चिह्नित होइत अछि। एहि भिन्न प्रसंगमे खाद्यसामग्री मात्र स्वादक वस्तु नहि, सामाजिक सम्बन्धक प्रतिमान बनैत अछि।

एहि त्रिकोणक अन्तर्गत कविता खण्डक उपलब्धि समझाइत अछि—एतए मिथिला केवल पाबनिक मिथिला नहि, रौदी, भूख, श्रम, उपभोग, पितृसत्ता आ प्रतिरोधक मिथिला सेहो अछि। एकहि भूगोलक भीतर अर्थभेद देखबाक क्षमता एहि संकलनकेँ दस्तावेजी महत्त्वसँ आगू बढ़ाकऽ साहित्यिक बहुलता दैत अछि।

१६. निष्कर्ष : लोकबोलीक काव्यमे समाजक असमाप्त बहस

‘बैशाखमे दलानपर’क कविता खण्डकेँ जँ केवल सरल ग्राम्य गीत कहल जाय, तँ ओकर भीतरक सामाजिक तर्क कम आँकल जाएत; जँ प्रत्येक रचनाकेँ जाति-विरोधक घोषणापत्र

81 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘रौदी भऽ गेल’, ‘माघक शीतलहरी’, ‘बसंत पंचमी’ आ ‘बैशाखमे दलानपर’, पृ. १७–१८, ५२–५७, ६४–६५।

82 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘कातिकक पूर्णिमा’ तथा ‘जूड़शीतल’, पृ. २४–२५ आ ५८–५९।

83 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘रसगुल्लाक जबार’, ‘एक ठाम गेलहुँ बरियाती’ आ ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’, पृ. २८–२९, ४९–५१, ५४–५५।

बना देल जाय, तँ ओकर विशिष्ट भाव, अनिश्चितता आ अन्तर्विरोध लुप्त भऽ जाएत। एहि अट्ठाइस कवितामे जतेक ऋतु आ पाबनि अछि, ओतेक परिवार, सम्पत्ति, श्रम, शिक्षा, जल, उपभोग आ हिंसा सेहो अछि। कवि लोकबोलीक संवादसँ जीवनक दैनन्दिन पक्षक साहित्यिक अधिकार स्थापित करैत छथि।

समग्र मूल्याङ्कनमे तीनटा विशिष्ट उपलब्धि सोझाँ अबैत अछि। पहिल, दृश्यात्मक वस्तु-सम्पदा: रौदीक दरार, महिषक चारा, इनारक रस्सी, वृद्धक बुझैत डिबिया, भानसक हरदी। दोसर, श्रव्य-कथात्मक विन्यास: सम्बोधन, हँसी, गपशप, पुनरावृत्ति आ अचानक समापन। तेसर, सामाजिक प्रश्न उठएबाक शक्ति: दहेजक बाजार, घरेलू हिंसा, सार्वजनिक संसाधनक लोप, वृद्धावस्थाक असुरक्षा आ शिक्षाक महँग रूप।

एहि उपलब्धिसभक संग आरम्भिक रचनात्मक सीमासभ स्पष्ट अछि—कतिपय पद्यमे उपदेशक अतिक्रमण, अनेक कथकस्वरक एकरंगिया नैतिकता, स्त्री-स्वायत्तताक प्रति विरोधाभासी दृष्टि आ छन्द-लयक असमान संगठन। मुदा साहित्यिक आलोचनाक काज दोषक सूची बनएब मात्र नहि; ई देखब सेहो अछि जे रचना अपन समयक अनकहल प्रश्नकेँ कोना पकड़ैत अछि। साफीक कविता खण्ड एहि परीक्षामे उल्लेखनीय अछि। एकर दलान कखनो गपक बैठक, कखनो वृद्धक एकान्त, कखनो नशाक चक्कर, कखनो स्मृतिक चौक बनैत अछि। एहि बदलैत दलानमे मिथिलाक सामान्य जनक जीवन एकरूपी नहि रहि जाइत —ओ साहित्यक भीतर अपन असमाप्त बहसक संग प्रवेश करैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

साफी, संदीप कुमार। बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। “आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी।” अन्तर्गत: संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi." A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

विदेह। "एडिटर्स चोइस सीरीज–७: मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा।" विदेहक प्रकाशकीय टिप्पणी। https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A ।

लिंबाळे, शरणकुमार। Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations। अनुवाद: आलोक मुखर्जी। हैदराबाद: ओरिएण्ट लॉन्गमैन, २००४।

रेगे, शर्मिला। Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios। नई दिल्ली: जुबान, २००६।

पवार, उर्मिला। The Weave of My Life: A Dalit Woman's Memoirs। अनुवाद: माया पण्डित। न्यूयॉर्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, २००९।

डांगले, अर्जुन (सम्पादक)। Poisoned Bread: Translations from Modern Marathi Dalit Literature। ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, २००९ संस्करण (मूल संकलन १९९२)।

ज़ेलियट, एलेनोर। From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement। नई दिल्ली: मनोहर, १९९६ संस्करण।

वर्मा, विकास के। "Region, Culture and Environment: Gleaning Socio-Ecological Content from the Sama Chakeva Festival in the Mithila Region." Journal of Indian History and Culture, अंक ३१, जून २०२३।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। Annihilation of Caste। प्रथम प्रकाशन, १९३६।

लोकविश्वास, गृहस्थी आ विवाह-बाजार

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क विहनि कथा खण्डक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

स्वतन्त्र शोध-आलेख | मैथिली कथा-आख्यानशास्त्र आ सामाजिक आलोचना

सारांश

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क विहनि कथा खण्ड तीनटा संवादप्रधान कथा—‘अन्ध विश्वास’, ‘साउस पुतोहु’ आ ‘सगुन’—सँ बनल अछि। संक्षिप्त आकारक बावजूद एहि रचनासभमे मिथिलाक घरेलू आ सामाजिक जीवनक तीन परस्पर जुड़ल संकट उद्घाटित होइत अछि: अफबाह आ डाइन-आरोप द्वारा स्त्रीक प्रतिष्ठापर आक्रमण, गृहस्थीमे स्त्री-श्रमक असमान वितरण आ हिंसात्मक सत्ता, तथा विवाहक नामपर दहेजक स्वीकृत आर्थिक लेन-देन। वर्तमान अध्ययन एहि कथासभकेँ केवल उपदेशात्मक सामाजिक रचना मानि नहि पढ़ैत; ई देखैत अछि जे लोकभाषाक संवाद, अनकहल पात्र, दृश्य-परिवर्तन, विराम, शीर्षकक व्यञ्जना आ अधूरा समाधान कथाकेँ कोना अर्थ दैत अछि। ‘अन्ध विश्वास’मे दू वार्ताकारक बीच लोकापवादक प्रकट होयब; ‘साउस पुतोहु’मे परस्पर शिकायतक भीतर पुरुष-सत्ताक अदृश्य किन्तु प्रभावकारी उपस्थिति; आ ‘सगुन’मे शुभ-संस्कारक शब्दावलीक भीतर विवाहक वाणिज्यीकरण—ई तीनटा प्रमुख पाठकीय परिणाम अछि। अध्ययन शरणकुमार लिंबाळे, शर्मिला रेगे, भीमराव आंबेडकर तथा संवादवादी आलोचनाक उपयोग तुलनात्मक औजारक रूपमे करैत अछि; किन्तु मूल रचनाक पात्रसभक जाति वा लेखकक व्यक्तिगत उद्देश्यक अटकल नहि लगबैत। निष्कर्षतः साफीक विहनि कथा गामक सहज बोलचालकेँ सामाजिक आलोचनाक माध्यम बनबैत अछि; ओकर कलात्मक शक्ति स्थिति आ संवादक

टकरावमे तथा ओकर सीमा किछु ठाम प्रत्यक्ष उपदेश, कथात्मक अपूर्णता आ स्त्रीक स्वतन्त्र स्वरक अनुपस्थितिमे अछि।

बीजशब्द

संदीप कुमार साफी; बैशाखमे दलानपर; विहनि कथा; बीज-कथा; मिथिला; दलित साहित्य; डाइन-आरोप; अन्धविश्वास; स्त्री-श्रम; साउस-पुतोहु सम्बन्ध; दहेज; विवाह-बाजार; कथोपकथन; सामाजिक व्यंग्य।

१. प्रस्तावना : अल्प गात, व्यापक समाज

मैथिली साहित्यक इतिहासमे लघु आख्यानक प्रश्न केवल शब्दक संख्या गनबाक प्रश्न नहि अछि। कोन सामाजिक घटना कथायोग्य मानल जाए, केकर बोली कथाक केन्द्र बनए, आ कथाकार केहन कम शब्दमे पाठकक मनमे व्यापक अनुभव जगा सकैत छथि—ई प्रश्न विहनि कथाक पहिचानसँ जुड़ल अछि। संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क विहनि कथा खण्ड एहि दृष्टिसँ ध्यानाकर्षक अछि। पोथीक पाँच खण्डक बीच ई तेसर रचनात्मक खण्ड थिक; कविता आ लघुकथाक मध्यवर्ती स्थान एकरा सहज घटनाक कथ्यसँ आगाँ बढ़ि विधागत प्रयोगक सम्भावना दैत अछि। मूल खण्डमे केवल तीनटा कथा अछि, मुदा तीनू कथा गामक जीवनक ऐहन प्रसंग चुनैत अछि जाहिमे सामान्य गप सामाजिक विचार-विन्यासक साक्ष्य बनि जाइत अछि।[84]

‘अन्ध विश्वास’क आरम्भ सामान्य कुशल-क्षेमक गपसँ होइत अछि; ‘साउस पुतोहु’ घरेलू काजक आदेशसँ; ‘सगुन’ एकटा विवाह-मध्यस्थक परामर्शसँ। तीनू आरम्भमे कोनो असाधारण घटना नहि। तथापि सामान्य जीवनक भीतर जे सामाजिक असमानता, परम्पराक

84 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१४), अनुक्रम आ विहनि कथा खण्ड, पृ. ६९–७६। मूल खण्डमे तीन रचना अछि: ‘अन्ध विश्वास’, ‘साउस पुतोहु’ आ ‘सगुन’।

दुरुपयोग आ मानवीय क्षोभ छिपल रहैत अछि, से संवादक क्रममे उघरैत जाइत अछि। ई लेखकक मूल सामर्थ्य थिक जे ओ अर्थक विशाल दावाक बदला घर-आँगनक छोटी-छोटी बातचीत चुनैत छथि।

साफीक आत्मकथा खण्डक सन्दर्भ सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि। प्रारम्भिक सम्पादकीय टिप्पणी हुनकर आत्मकथाकेँ मैथिलीमे दलित अनुभवक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रवेशक रूपमे स्थापित करैत अछि। मुदा एहिसँ ई निष्कर्ष स्वतः नहि निकलैत जे हुनकर लिखल प्रत्येक कथा एकहि जातीय प्रसंगपर केन्द्रित होयत। विहनि कथा खण्डक तीनू रचनामे पात्रसभक जाति प्रत्यक्ष निर्दिष्ट नहि अछि। अतः सामाजिक दृष्टिक मूल्यांकन लेखकक जीवन-स्थितिक सन्दर्भ राखि कऽ करब उचित अछि, पात्रसभक जातीय पहिचान कल्पित कऽ नहि।[85][86]

२. विहनि कथाक विधागत धरातल

‘विहनि’क अर्थ बीआ अथवा बीजसँ जुड़ैत अछि। बीजक भीतर छोट-छोट रूपमे जीवनक सम्भावना निहित रहैत अछि; तहिना विहनि कथाक संक्षिप्त दृश्य पाठकक मनमे व्यापक कथा-संसार उगाबय लेल छोड़ि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक एकटा पूर्ववर्ती विधागत विवेचनमे एहि नामकेँ हिन्दी ‘लघुकथा’ शब्दसँ अलग मैथिलीक स्वतन्त्र नाम देबाक प्रयासक रूपमे उल्लेख कएल गेल अछि। विदेहक प्रकाशकीय आयोजनमे विहनि कथा आ लघुकथा सम्बन्धी अलग संकलनक उपस्थिति एहि नामकरणक ऐतिहासिक प्रसंगकेँ स्पष्ट

---

85 गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी, साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्डक आरम्भ, पृ. ६। एतए ‘मैथिलीमे दलित आत्मकथाक सर्वथा अभाव’ आ साफीक हस्तक्षेपक उल्लेख अछि। ‘पहिल’क दावा ओहि सम्पादकीय मूल्यांकनक सन्दर्भमे ग्रहणीय अछि।

86 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३। लेखक अपन धोबी समुदाय, श्रम, शिक्षा आ प्रवासक प्रसंग स्वयं बतबैत छथि। तीनू विहनि कथाक पात्रसभक जाति मूल रचनामे निर्दिष्ट नहि अछि।

करैत अछि। तथापि नाम भिन्न भेलामात्रसँ प्रत्येक रचना शिल्पगत रूपसँ स्वतन्त्र प्रमाणित नहि होइत; एकर परीक्षा मूल पाठमे करय पड़त।[87][88]

विहनि कथाक कसौटी ई होयबाक चाही जे सीमित दृश्य, अर्थवाही कथोपकथन, सामाजिक संकेत आ समापनक अनुनाद एक-दोसराक सहायता करए। जँ पात्रक अन्तिम वाक्य सभ अर्थ समझा दैत अछि तँ कथामे बीजक अपेक्षा शिक्षा-वाक्यक प्रधानता बढ़ि सकैत अछि। जँ संवादमात्र अछि, मुदा ओकर भीतर परिस्थिति नहि बदलैत, तँ ओ गपशपक अभिलेख रहि सकैत अछि। जँ संघर्ष देखल गेल मुदा समाधान नहि, तँ ई अधूरापन कमजोरी सेहो बनि सकैत अछि आ जीवनक वास्तविक जटिलताक संकेत सेहो। एहि तर्कपर तीनू रचनाक निकट-पाठ करब उपयोगी अछि।

‘अन्ध विश्वास’मे साधारण गपक विस्तारक बाद अचानक आरोपक प्रसंग अबैत अछि; ‘साउस पुतोहु’मे बहसक घनत्व कथाक समस्त गति बनि जाइत अछि; ‘सगुन’मे बात-विचार, सुझाव आ सहमतिक छोट क्रम दहेजक व्यवस्था उघारैत अछि। एतए घटनाक तुलनामे ‘कथन’ अधिक निर्णायक अछि। पात्र जे बजैत अछि, ताहिसँ ओ अपन सामाजिक स्थिति, अपेक्षा आ सत्ता-सम्बन्ध अनजाने उद्घाटित करैत अछि।

---

87 गजेन्द्र ठाकुर, “विहनि कथा”क विधागत विवेचन, विदेह/लेखकीय अभिलेख, ३० सितम्बर २०१०: https://gajendrathakur.blogspot.com/2010_09_30_archive.html । एहि स्रोतमे ‘विहनि’ अर्थात् ‘बीआ’ आ १९९५ मे नामकरणक प्रयासक चर्चा अछि।

88 विदेह, “विदेह: सदेह ५—मैथिली विहनि कथा” आ “विदेह: सदेह ६—मैथिली लघुकथा”क अलग प्रकाशकीय प्रविष्टि; https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm । एहि ग्रन्थ-क्रममे दुनू नामक अलग आयोजन देखल जा सकैत अछि।

३. आलोचनात्मक पद्धति आ पाठकीय सावधानी

एहि अध्ययनमे चारि स्तर एकसाथ ध्यानमे राखल गेल अछि। पहिल, कथाक उपलब्ध दृश्य आ पात्रक प्रत्यक्ष वाक्य। दोसर, ओहि वाक्यक पाछाँ सक्रिय घरेलू, लैङ्गिक, आर्थिक आ सामुदायिक सम्बन्ध। तेसर, संवादक क्रम, समय, कथा-अन्त आ लोकबोलीक कथात्मक प्रयोजन। चारिम, अन्य भारतीय दलित साहित्य आ स्त्रीवादी आलोचनासँ सम्भावित संवाद। एकर अर्थ ई नहि जे बाहरी सिद्धान्त पात्रसभक मुँहमे अपने कथन रखि देत। कथाक प्रमाण ओतबे मान्य होयत जतेक पाठ स्वयं समर्थन करैत अछि।

शरणकुमार लिंबाळे दलित साहित्यक सौन्दर्यमूल्य आ सामाजिक अनुभवक सम्बन्धपर विचार करैत छथि। शर्मिला रेगे जाति, स्त्री-स्वर आ जीवन-वृत्तान्तक परस्पर सम्बन्धक महत्त्व प्रतिपादित करैत छथि। एहि दुनू दृष्टिक सहायतासँ साफीक कथामे श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा आ असमानताक बोध अधिक सूक्ष्म बनैत अछि। किन्तु किछु दृश्य केवल लैङ्गिक उत्पीड़नक; किछु विवाहक अर्थशास्त्रक; किछु लोकविश्वासक। तीनू कैँ अनिवार्यतया प्रत्यक्ष जाति-अत्याचारक घटना कहब पाठ-न्यायक प्रतिकूल होयत।[89][90]

89 शर्मिला रेगे, Writing Caste, Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios (नई दिल्ली: Zubaan, २००६)। ग्रन्थक प्रकाशकीय विवरण: https://books.google.com/books/about/Writing_Caste_Writing_Gender.html?id=lP8pAAAAYAAJ । जाति आ स्त्री-अनुभव एकसाथ बुझबाक पद्धतिगत सन्दर्भ।

90 शरणकुमार लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अनु. Alok Mukherjee (Orient Longman, २००४)। प्रकाशकीय विवरण: https://orientblackswan.com/details?format=paperback&obsin=3804 ।

एहि सावधानीक दोसर पक्ष ऐतिहासिक प्रथमत्व अछि। पुस्तकक सम्पादकीय आ विदेहक सूचीमे साफीक आत्मकथाकेँ पहिल मैथिली दलित आत्मकथाक रूपमे रेखाङ्कित कएल गेल अछि। ई प्रभावकारी सम्पादकीय-दृष्टि थिक; सर्वग्राही अभिलेखीय सर्वेक्षणक बिना एकरा अकाट्य ऐतिहासिक अन्तिम निष्कर्ष कहबाक आवश्यकता नहि। साहित्येतिहासमे प्रथमत्वक दावा आ वास्तविक साहित्यिक उपलब्धि दू अलग प्रकारक प्रश्न अछि। वर्तमान समीक्षा विहनि कथाक कलात्मक आ सामाजिक मूल्यकेँ ओकर अपन पाठसँ सिद्ध करबाक प्रयास करैत अछि।[91]

४. 'अन्ध विश्वास' : सामान्य बातचीतक भीतर भयक प्रवेश

'अन्ध विश्वास'क शुरुआतमे काकी आ कनियाँक बीच आदरपूर्ण भेंट अछि। वृद्धा देहक पीड़ा, पुरबा हवाक प्रभाव, दवाइक निष्फलता कहैत छथि; दोसर स्त्री परिवारक हाल, बच्चाक परीक्षा आ गरमीक छुट्टीक प्रश्नक उत्तर दैत अछि। एतए कथा अपन मुख्य विवाद तत्काल नहि खोलैत। लोक-जीवनक विश्वसनीय गपक क्रम बनाओल जाइत अछि। एहि क्रममे शरीरक रोग, आयु, घरेलू जिम्मेवारी आ दूर रहैत परिवार एकहि संसारक हिस्सा बनि जाइत अछि। दैनन्दिन बोलचालक ई विस्तार कथाकेँ जीवन्त करैत अछि; ओहि संग विहनि कथाक अपेक्षित तीक्ष्ण संक्षेपसँ किछु दूरी सेहो उत्पन्न करैत अछि।[92]

पहिल बातचीतमे काकी ओहि घरेलू वस्तुसभक उल्लेख करैत छथि जे दिल्लीसँ पुत्र पठौने अछि—ठंढा तेल, साबुन, कपड़ा धोबाक सामग्री। ई विवरण मात्र उपभोक्ता वस्तुक सूची नहि। एकर भीतर प्रवास, दूरस्थ पुत्रक देखरेख आ घरेलू श्रमक निरन्तरता समाहित अछि। शहरसँ पठाओल आधुनिक सामान वृद्धाक शरीर आ घरक श्रमक बीच पहुँचैत अछि,

91 विदेहक पुस्तक-सूची, "सन्दीप कुमार साफी—बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित),"
https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm ।

92 साफी, बैशाखमे दलानपर, 'अन्ध विश्वास', पृ. ७०–७२।

मुदा हुनकर पीड़ा, सामाजिक अकेलापन अथवा परिवारक अन्तर्विरोधक अन्त नहि करैत। कथाकार एहि अंशमे ‘आधुनिकता’क पैघ घोषणा नहि करैत छथि; वस्तु-नामसँ जीवनक स्थिति उभरैत अछि।[93]

काकी अपन पुतोहुक बनाओल भोजनक आलोचना करैत छथि। ओहि समयैँ अपन पछुआरक अरकंच तोड़ि व्यञ्जन बनएबाक गर्वो प्रकट करैत छथि। एहि संवादमे वृद्ध स्त्री अपन श्रमक दक्षता, स्वादक मानदण्ड आ परिवारक अन्दरक अधिकार स्थापित करैत छथि। आगू जखन अन्धविश्वासक प्रसंग उठैत अछि तँ पाठक समझैत अछि जे एक गामक स्त्री-संसारकेँ केवल अज्ञानी आ ज्ञानीक दू स्पष्ट भागमे नहि बाँटल जा सकैत अछि; एहिमे स्मृति, अनुभव, प्रतिस्पर्धा, स्नेह आ पूर्वग्रह सभ एकसाथ अछि।

५. ‘अन्ध विश्वास’क दू दृश्य : गपसँ आरोप धरि

पहिल खण्डक अन्तमे लम्बा बिन्दु-चिह्न द्वारा दृश्य बदलैत अछि। तत्पश्चात छोटकी, बड़की दीदीसँ गामक स्त्रीक प्रसंग पूछैत अछि—की ओ गुण-जादू सीखबाक इच्छा राखैत छथि? प्रश्न अपन स्वरमे ठठ्ठा आ संशय दुनू समेटने अछि। छोटकीक अगिला वाक्यमे ओझा-गुनी, देवी पठेबाक अफबाह, ‘डाइन’क आरोप आ बच्चाक मृत्यु सम्बन्धी भयावह कथन आबैत अछि। एहि संक्रमणमे ‘काकी’क कुशल-क्षेमक संसार अचानक सामाजिक हिंसाक सम्भावनासँ भरि उठैत अछि। देहक बीमारी आ ओकर कारण सम्बन्धी लोक-अनुमान सामुदायिक आरोपक रूप धारण कऽ लैत अछि।[94]

---

93 साफी, ओहि पोथीमे, ‘अन्ध विश्वास’, पृ. ७०–७१। कथाक आरम्भमे काकी आ कनियाँक सामान्य बातचीत, रोग, औषधि, परीक्षा, भोजन-समय, घरक काज आ दिल्लीसँ पठाओल घरेलू सामानक चर्चा अछि।

94 साफी, ओहि पोथीमे, ‘अन्ध विश्वास’, पृ. ७२। छोटकीक आरोप आ बड़की दीदीक अन्तिम प्रतिवाद एकहि दृश्य-क्रममे उपस्थित अछि।

कथाकार ‘डाइन’ कहि आरोपित स्त्रीकेँ स्वयं नहि देखबैत छथि। पाठक केवल दोसराक मुँहसँ ओकर बदनामी सुनैत अछि। ई अनुपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि: आरोपित व्यक्तिक अस्तित्व अफबाहक द्वारा परिभाषित होए लागैत अछि। ओ अपन पक्ष नहि कहि सकैत अछि; कथाक अन्तिम प्रतिवाद सेहो दोसर स्त्रीक मुँहसँ अबैत अछि। एहि अर्थमे कथा ‘स्त्री-सम्बन्धी अफबाह’क आलोचना अवश्य करैत अछि, मुदा आरोप झेलैत स्त्रीक अपन स्वरकेँ कथा धरि नहि पहुँचा पबैत अछि। ई अन्तराल भविष्यक मैथिली स्त्री-कथालेखन लेल महत्त्वपूर्ण प्रश्न बनि रहैत अछि।[95]

अन्धविश्वास केवल निजी धारणा नहि; ओ सामूहिक सम्बन्धक बिगाड़क साधन बनैत अछि। जँ केकरो रोग वा मृत्युकेँ कोनो स्त्रीक ‘विद्या’सँ जोड़ि देल जाए, तँ वास्तविक चिकित्सा, प्रमाण आ दुःखक जटिल कारणसभ पिछुआ जाइत अछि। गामक चर्चा न्यायिक सुनवाई नहि, तैयो आरोपक भाषा सामाजिक दण्ड जकाँ प्रभाव डालि सकैत अछि। साफीक कथा एहि दण्डक वास्तविक घटना वर्णित नहि करैत अछि; मुदा आरोपक प्रक्रिया स्पष्ट करैत अछि। एहि सूक्ष्म भेदकेँ मानब समीक्षाक विश्वसनीयता लेल आवश्यक अछि।

६. बड़की दीदीक प्रतिवाद : विवेकक स्वर आ ओकर सीमा

‘अन्ध विश्वास’क अन्तिम संवादमे बड़की दीदी छोटकीकेँ रोकैत छथि आ लोककेँ डाइन-जोगिन कहबाक सामाजिक दुष्परिणाम स्पष्ट करैत छथि। अन्तिम वाक्यमे अन्धविश्वासक नाम सीधे बजैत अछि। एतए कथा पाठककेँ कोनो संशयमे छोड़बाक बदला नैतिक स्थिति निश्चित करैत अछि: निराधार आरोप समाजमे झगड़ा उत्पन्न करैत अछि। ई स्पष्टता सामाजिक चेतनाक दृष्टिसँ मूल्यवान अछि, विशेषतः जखन डाइन-आरोपक कारण स्त्रीक जीवन असुरक्षित बनि सकैत अछि।[96]

---

95 साफी, ‘अन्ध विश्वास’, पृ. ७२। आरोपित स्त्रीक अपना पक्षसँ कोनो प्रत्यक्ष वक्तव्य कथामे नहि अछि; प्रतिवाद बड़की दीदी करैत छथि।

मुदा कलात्मक स्तरपर प्रश्न उठैत अछि: जँ चरम क्षणमे कथाकार-समर्थित पात्र पूर्ण शिक्षा-वाक्य देत, तँ पाठकक स्वतन्त्र अर्थ-निर्माण कतए रहत? विहनि कथाक बीजस्वरूप सामान्यतः पाठकसँ अर्थ उगएबाक अपेक्षा करैत अछि। एहि कथामे अर्थ स्वयं पात्रद्वारा पर्याप्त स्पष्ट कऽ देल गेल अछि। ई रचनाक उद्देश्यक बल आ शिल्पक सीमा दूनू अछि। सामाजिक सुधारक स्पष्टता कथात्मक बहुअर्थक सम्भावना घटा सकैत अछि।

एतए 'विश्वास' आ 'अन्धविश्वास'क बीच भेदक सेहो आवश्यकता अछि। कथा सामान्य धार्मिक आस्था पर सार्वभौमिक निर्णय नहि दैत; ई विशिष्ट आरोप—कियो जादू-सँ बीमारी वा मृत्यु करा देलक—केँ अस्वीकार करैत अछि। एहिसँ कथाक मानवीय आशय धार्मिक समुदायक अपमान नहि, अप्रमाणित दोषारोपणसँ परहेज अछि। एहि संकुचित, पाठसमर्थित अर्थमे कथा अपन समयक सामाजिक विवेकक उल्लेखनीय दस्तावेज बनैत अछि।

७. 'साउस पुतोहु' : आदेश, प्रतिवाद आ श्रमक विस्मृत लेखा

'साउस पुतोहु' एकटा घरेलू आदेशसँ आरम्भ होइत अछि: साउस पुतोहुकेँ दुपहरमे सुति रहल देखैत छथि आ महिषीकेँ पानि पिएबाक आग्रह करैत छथि। प्रथम दृष्टिमे ई सामान्य गृहस्थ समस्या बुझाइत अछि। तुरन्त पुतोहु अपन पक्ष रखैत अछि—दिन भरिक परिश्रमसँ हाथ-पएर थाकल अछि, भानस आ दोसरो जिम्मेवारी ओकरा कमजोर कऽ देने अछि, माथ आ देह दुखाइत अछि। एहि उत्तरमे आलस्यक आरोपक विरुद्ध श्रमक साक्ष्य अछि। चरित्र अपन देहक थकानकेँ प्रमाण बनबैत अछि।[97]

तत्पश्चात साउस अपन परिश्रमक लेखा प्रस्तुत करैत छथि: गोबर पाथब, घरेलू कार्य, भोजन-पानि आ पूजाक समय नहि भेटब। दूनू स्त्री कहैत छथि जे ओ खटैत-खटैत थाकि गेल छथि। एकर अर्थ ई नहि जे दुनूक सामाजिक शक्ति समान अछि; ई अवश्य अछि जे घरेलू

96 साफी, ओहि पोथीमे, 'अन्ध विश्वास', पृ. ७२। छोटकीक आरोप आ बड़की दीदीक अन्तिम प्रतिवाद एकहि दृश्य-क्रममे उपस्थित अछि।

97 साफी, ओहि पोथीमे, 'साउस पुतोहु', पृ. ७३–७४।

उत्पादनक अधिकांश जिम्मेवारी स्त्री-देह पर केन्द्रित अछि। अन्न-पाक, पशु-पोषण, गोबर-संग्रह, पाहुनक व्यवस्था—ई श्रम परिवारक जीविकाकेँ चलबैत अछि, मुदा कथाक विवादमे एकर मान्यता 'के बेसी कएलक'क प्रतिस्पर्धामे बदलि जाइत अछि।[98][99]

एकटा गम्भीर आलोचनात्मक प्रश्न एहि ठाम उठैत अछि: परिवारक पुरुष कतए छथि? कथा आरम्भमे पुरुषक प्रत्यक्ष श्रम, घरेलू साझेदारी अथवा सहानुभूतिपूर्ण उपस्थितिक विवरण नहि दैत अछि, जखनकि भोजन, पशु आ वृद्धक देखरेखसँ जुड़ल सारा तनाव साउस-पुतोहुक बीच जमा भऽ रहल अछि। एहि प्रकार कथा गृहस्थीमे स्त्री विरुद्ध स्त्रीक विवाद देखबैत काल अप्रत्यक्ष रूपसँ पितृसत्तात्मक श्रम-विभाजनक समस्याक संकेत दैत अछि। ई अर्थ पाठकक विश्लेषण अछि; कथाक पात्रसभ स्वयं एहि संरचनाक औपचारिक नाम नहि लैत छथि।

८. थाकल देह आ मान-सम्मानक भाषा

पुतोहुक कथनमे 'भिर दिन खटैत' देहक पीड़ा एकटा व्यक्तिगत अनुभव अछि। साउसक जवाबमे 'हम की बैसल छी' अपन परिश्रमक मान्यता माँगबाक आग्रह अछि। दुनू अभिव्यक्ति सामाजिक वर्गक अमूर्त सिद्धान्तसँ बेसी निकट अछि: एकहि घरक दू पीढ़ी दिन-रात काज करैत अछि, मुदा काजकेँ सहकार बनएबाक साधन असफल अछि। प्रत्येककेँ दोसराक विश्राम अन्याय बुझाइत अछि। घरक भीतर अवकाशक अधिकारो सत्ता-विभाजनसँ जुड़ल भऽ जाइत अछि।

एहि विवादक शब्दावलीमे सम्बोधनक बदलब महत्त्वपूर्ण अछि। आरम्भिक 'किनयाँ' वा 'माए' अपेक्षाकृत पारिवारिक सम्बोधन अछि; तकरा बाद कड़ुआ उपनाम, व्यंग्य आ गालीक

---

98 साफी, ओहि पोथीमे, 'साउस पुतोहु', पृ. ७३। साउस गोबर पाथबाक आ पुतोहु भानस तथा पशुपालनक श्रमक उल्लेख करैत छथि।

99 साफी, 'साउस पुतोहु', पृ. ७३–७४। दूनू स्त्रीक श्रम-विवरण अलग-अलग पात्रक स्वकथन थिक; ताहि कारण श्रमक मात्रा सम्बन्धी तथ्य स्वतन्त्र प्रमाणित गणना नहि।

रूप प्रबल होइत अछि। भाषा द्वारा सम्बन्ध बिगड़ैत अछि। साउसकेँ पुतोहुक उत्तर-प्रतिवाद अनुशासनक चुनौती बुझाइत अछि; पुतोहुकेँ साउसक आदेश अपमान आ श्रमशोषण बुझाइत अछि। एहि अर्थमे कथानक घटनासँ कम आ सम्बोधनक तापमानसँ बेसी आगाँ बढ़ैत अछि।

कथा पुतोहुकेँ सम्पूर्ण निर्दोष आ साउसकेँ एकरेखीय खलनायिका नहि बनबैत। साउसक थकान सेहो सत्य-संभाव्य अछि; मुदा हुनकर सत्ताक प्रयोग आ हिंसाक धमकी अलग नैतिक प्रश्न अछि। दूनू बात एकसाथ मानल जाए तँ चरित्र अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। 'दुनू समान रूपेँ दोषी' सन सुविधा-सूत्र अपनब नैतिक भेदकेँ मेटा देत। श्रमक संकट साझा भऽ सकैत अछि, मारपीटक धमकीक वैधता ताहिसँ उत्पन्न नहि होइत।

९. हिंसाक धमकी : अनुपस्थित पुत्रक प्रभावकारी सत्ता

कथाक निर्णायक मोड़ ओहि वाक्यसभमे अछि जतए साउस पुत्र द्वारा पुतोहुकेँ पिटएबाक इरादा प्रकट करैत छथि। पुत्र मंचपर उपस्थित नहि, तखनहुँ ओकर सम्भावित हिंसाक स्मरण पूरा विवादक शक्ति-सन्तुलन बदलैत अछि। परिवारक पुरुष अदृश्य होइतहुँ अन्तिम दण्ड दयबाक कल्पित अधिकारक रूपमे प्रकट होइत अछि। एहि सूत्रमे पारिवारिक अधिकारक व्यवस्था देखाइत अछि: पितृसत्ताक प्रभाव स्त्री-स्त्री संघर्षक भीतर सँ बोलि उठैत अछि।[100]

पुतोहुक प्रतिकार सेहो दैहिक हिंसाक शब्दावली धरि पहुँचैत अछि; ओ झोंटा-केस उखाड़बाक धमकी दैत अछि। एतए प्रतिशोधक चक्र चलए लागैत अछि। प्रारम्भमे पशुकेँ पानि पिएबाक साधारण आग्रह रहल, जकर अन्त आन्तरिक गृह-युद्धक भाषा बनि जाइत अछि। ई क्रम असंगत शोर नहि; घरेलू सम्पर्कक अविश्वास कतेक शीघ्र हिंसामे बदलि सकैत अछि, तकर कलात्मक संक्षेप अछि।

---

100 साफी, ओहि पोथीमे, 'साउस पुतोहु', पृ. ७४। साउस पुत्र द्वारा पिटेबाक धमकी दैत छथि; पुतोहु नैहर चलि जेबाक बात कहैत अछि। कथा क्रियान्वित हिंसा नहि, ओकर धमकी आ पारिवारिक तनाव देखबैत अछि।

पुतोहु छोटका भाइकेँ फोन कऽ नैहर चलि जेबाक बात कहैत अछि। टेलीफोन एतए सामाजिक वस्तु अछि: मायकेसँ सम्पर्क आ घर छोड़बाक सम्भावना। मुदा नैहर एकदम सुरक्षित आश्रय बनत, एहन कथा नहि कहैत; ई केवल पात्रक घोषित विकल्प अछि। साउस पुत्रक सहारा लेत छथि, पुतोहु भाइकेँ। दूनू अपन पक्षमे पुरुष-सम्बन्धक शक्ति आह्वान करैत छथि। कथा एतए स्त्रीक स्वायत्त प्रतिरोधक सम्भावना आ परिवारक पुरुषाधीन सुरक्षाक सीमा—दूनूकेँ एकसाथ देखबैत अछि।

१०. टोल-पड़ोस : गृहस्थी निजी नहि रहैत

‘साउस पुतोहु’क संवाद बारम्बार पड़ोसीक कान धरि पहुँचैत अछि। साउस टोल-पड़ोसकेँ साक्षी बनबैत छथि, पुतोहु सेहो ‘मकरा काकी’क समक्ष अपन पक्ष रखैत अछि। एहि सम्बोधनसभसँ घरक सीमा भितर-बाहरक बीच टूटैत अछि। ग्राम्य सार्वजनिकता न्यायोन्मुख मंच बनि सकैत अछि, मुदा गपक प्रसार द्वारा अपमान बढ़एबाक माध्यम सेहो भऽ सकैत अछि। कथामे पड़ोसक कोनो निर्णायक पंचायत, सुनवाई वा समाधान प्रस्तुत नहि अछि; साक्षी बनबाक आह्वान मात्र दृश्य बनैत अछि।

एहि खास बिन्दुपर ‘अन्ध विश्वास’सँ अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट अछि। ओतए लोक-चर्चा डाइन-आरोपक रूप धरैत अछि; एतए टोल-चर्चा साउस-पुतोहुक नैतिक छवि तय करबाक प्रयत्न करैत अछि। दुनू ठाम समुदायक निगाह स्त्रीक व्यवहारपर सक्रिय अछि। स्त्रीक निजी कार्य, भोजन बनएबाक शैली, विश्राम, चिकित्सा, मायकेसँ सम्पर्क आ अपवाद—सभ सामाजिक दृष्टिक वस्तु बनैत अछि। कथा ई नहि कहैत जे समुदाय सदैव दुष्ट अछि; मुदा समुदाय द्वारा न्याय केना बनैत आ बिगड़ैत अछि, तकर दुविधा अवश्य प्रकट करैत अछि।

शर्मिला रेगेक जाति-लैङ्गिक आलोचना एतए पद्धतिगत सहायक होइत अछि: स्त्रीक जीवनक साक्ष्य पढ़ैत समय श्रम, प्रतिष्ठा आ हिंसाकेँ घरक पृथक घटना कहि अलग नहि कएल जा सकैत। तथापि साफीक पात्रसभक जाति निर्दिष्ट नहि भेलासँ एहि कथाकेँ कोनो

विशेष जातिक घरेलू प्रथाक प्रत्यक्ष नमूना मानि लेब गलत होयत। सामाजिक संरचना पहिचानबाक अर्थ पाठमे अनुपस्थित तथ्य गढ़ब नहि।[101]

११. कथा-अन्तक अनिर्णीत तनाव

'साउस पुतोहु'क अन्त कोनो मेल-मिलाप, माफी, अलग घर वा समुदाय द्वारा न्यायसँ नहि होइत। क्रोधक ताप शेष रहैत अछि। पुतोहु वृद्धाकेँ उद्देशित अत्यन्त कटु वाक्य कहैत अछि, जेकरा पश्चात कथा समाप्त। पाठककेँ ई निर्णय स्वयं करय पड़ैत अछि जे दू पीढ़ीक स्त्री एक-दोसराकेँ किएक शत्रु मानि रहल छथि आ समाधानक सामाजिक शर्त की होयत। विहनि कथाक दृष्टिसँ ई खुलल अन्त अपेक्षाकृत प्रभावकारी अछि: कथा समस्या देखाबैत अछि, समाधानक तैयार नुस्खा नहि।

मुदा खुलल अन्तक सीमा सेहो अछि। दूनू स्त्रीक गरज-मरजक अन्तर, पुत्रक सम्भावित हस्तक्षेप, आर्थिक निर्भरता अथवा सन्तानक हितक पक्ष विकसित नहि अछि। ई अभाव लघु आकारक कारण सेहो भऽ सकैत अछि। लेखक सघन संवाद द्वारा दृश्य बनबैत छथि, मुदा सामाजिक मनोविज्ञानक अनेक तह खुलबाक पूर्व कथा समाप्त होइत अछि। अतः एहि पाठकेँ एकटा तीक्ष्ण घरेलू दृश्य कहब अधिक उपयुक्त, सम्पूर्ण पारिवारिक उपन्यासक संक्षेप मानब कम।

१२. 'सगुन' : शुभता आ व्यापारक एकहि भाषा

'सगुन'मे ठकोकाका आ हर्षित बाबूक बातचीतक केन्द्र बेटी-विवाह अछि। आरम्भमे ठकोकाका परम्परा निभेबाक अनिवार्यता पर बल दैत छथि आ आश्वासन दैत छथि जे गरीब-धनिक सभ घरमे विवाह होइत अछि, ई समस्या सुलझि जाएत। बाबा उगनाक नाम

101 रेगे, Writing Caste, Writing Gender (२००६); क्रेन्शॉ, "Mapping the Margins" (१९९१)। स्त्री-श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा आ हिंसाक प्रश्नकेँ जोड़ि देखबाक आलोचनात्मक आधार।

आश्वासनक धार्मिक-सांस्कृतिक आधार बनैत अछि। हर्षित बाबू जल्दी विवाह करए चाहैत छथि, कारण हुनका दिल्ली जाएबाक हड़बड़ी अछि। एहि कथनमे विवाह केवल भावना अथवा संस्कार नहि; यात्रा, अवसर, व्यय आ समयक व्यावहारिक गणनासँ जुड़ल अछि।[102]

कथा-शीर्षक 'सगुन' सामान्यतः मंगल आरम्भक प्रतीक अछि। मुदा वास्तविक संवादमे बेटी लेल बरक खोज, मध्यस्थक भरोसा, परिवारक योग्यताक परीक्षण, नगद देबाक प्रस्ताव आ वस्तुगत उपहारक सूची अबैत अछि। शुभता आ सौदाक ई सहअस्तित्व शीर्षककेँ दोहरा अर्थ दैत अछि। पाठमे लेखक सीधा 'दहेज-प्रथा अनुचित अछि' नहि कहैत; परन्तु जे स्वाभाविक बातचीतक रूपमे उपस्थित अछि, ओहीसँ पाठक सामाजिक अन्तर्विरोध देखैत अछि।

एतए साफी व्यंग्यक सम्भावना खुलल छोड़ि दैत छथि। जँ पाठक परम्परागत विवाहक सफलता मात्र देखत, तँ संवाद आश्वस्तकारी लगि सकैत अछि; जँ विवाहमे बेटी आ बरक मानवीय सम्बन्धक स्थानपर नगद-वाहनक आग्रह देखत, तँ शिष्टाचारक पीछे बिकाऊ व्यवस्था उजागर होयत। एहि दुहरा पठनक कारण कथा सामाजिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि—जकर सौदा नहि कहल जाइत, ताहि व्यवहारकेँ संस्कार कहल जाइत अछि।

१३. ठकोकाका : मध्यस्थक भाषा आ अधिकार

ठकोकाका कथामे प्रस्तावक वाहक छथि। ओ पहिने भय घटबैत छथि, फेर अपन देखल उम्मीदवारक प्रशंसा करैत छथि, आ अन्तमे 'सेट' भऽ गेलाक आश्वासन दैत छथि। ई क्रम एकटा सूक्ष्म सामाजिक कौशल अछि: आशंका दूर कएल गेल, विकल्प प्रस्तुत भेल, जोखिम न्यून कहल गेल, आ निर्णय शीघ्र करएबाक वातावरण बनल। ठकोकाका विवाह-सम्बन्धक सामाजिक सम्पर्कक ज्ञानकेँ अपन अधिकार बनबैत छथि।

102 साफी, ओहि पोथीमे, 'सगुन', पृ. ७५–७६।

ठकोकाकाक कथनमे उम्मीदवार ‘बेंगलुरुमे इंजीनियरिंगक तैयारी’ करैत अछि। तैयारी आ पूरा शिक्षा-दर्जाक बीच स्पष्ट अन्तर अछि। विवाह-मूल्यांकनमे भविष्यक सम्भावना वर्तमानक प्रतिष्ठा जकाँ काम करैत अछि; परिवार एहि सम्भावनाक आधारपर उत्साहित होइत अछि। एतए बेरोजगार अथवा अप्रशिक्षित वरक ठगीक आरोप लगएबाक कोनो आधार नहि; कथा केवल तैयारीक स्थिति बतबैत अछि। मुदा प्रस्तावित बरक औपचारिक योग्यता जँ अपूर्ण अछि, तैयो सामाजिक प्रशंसा निर्णायक बनि रहल अछि—एहि भाषा-संरचनाक आलोचना पाठसंगत अछि।[103]

प्रस्तावित बरक माय-बाप नहि छथि; हुनका मामा-मामी आ नाना-नानी पालने छथि। कथामे ई जानकारी संक्षेपमे देल गेल अछि; एकर आधारपर बरक चरित्र, आर्थिक स्थिति अथवा अभिभावकसँ अपेक्षित व्यवहारक जटिल अनुमान नहि कएल जा सकैत। ई विवरण कथाक सूक्ष्म सामाजिक पृष्ठभूमि मात्र अछि। जखन ठकोकाका एहन जानकारी देइत छथि, ओ हुनकर मध्यस्थताक विश्वसनीयता बढ़ेबाक प्रयत्न सेहो बुझि पड़ैत अछि—मानो बर-विवरणक सभ पक्ष हुनका मालूम अछि।

१४. हर्षित बाबू : जल्दी, भरोसा आ दहेजक सहमति

हर्षित बाबू ठकोकाकाक ऊपर भरोसा करैत छथि आ प्रस्ताव आगाँ बढ़ेबाक आग्रह दैत छथि। निर्णायक क्षणमे ओ नगद सहित चेन आ मोटरसाइकिल देबाक सहमति प्रकट करैत छथि। एहि सूचीमे विवाह खर्चक सामान्य चर्चा नहि, बरपक्षक अपेक्षाक पूर्ति लेल देबाक तैयारी अछि। उपहार आ दहेजक बीच सामाजिक भिन्नता होयब सम्भव अछि, मुदा जे व्यवहार ‘जे नगद लेता’ आ ‘जे लेतिहन’सँ आरम्भ होइत अछि, ओ लेन-देनक स्पष्ट संरचना

103 साफी, ओहि पोथीमे, ‘सगुन’, पृ. ७५। ठकोकाकाक कथनानुसार प्रस्तावित लड़का बेंगलुरुमे इंजीनियरिंगक तैयारी करैत अछि, इंजीनियर बनि चुकल होयबाक कथन नहि अछि।

प्रस्तुत करैत अछि। कथामे वरक प्रत्यक्ष माँग देखाओल नहि गेल; पिता एकतरफा स्वीकृति व्यक्त करैत छथि। ई भेद आलोचना लेल आवश्यक अछि।[104]

हर्षित बाबूक वाक्यमे 'हम सभ देबिन'क सहजता विशिष्ट अछि। आर्थिक बोझ केवल अनिवार्यता नहि, सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रदर्शन सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा हर्षितक परिवार वास्तवमे सम्पन्न अछि कि कर्जक भारमे पड़त—मूल पाठ एहि प्रश्नक उत्तर नहि दैत। 'गरीब वा धनिक'क सामान्य कथनसँ परिवारक वास्तविक स्थिति तय नहि कएल जा सकैत। एहि सीमाक बावजूद दहेज लेन-देनक स्वीकृत मनोवृत्ति स्पष्ट अछि।

कथा सौदा सम्पन्न भेलाक घोषणा नहि करैत। 'सगुन लऽ कऽ जाउ' आगूक कर्मक आह्वान अछि। ओहि बिन्दुपर कथानक रुकैत अछि जतए विवाहसँ पहिने आर्थिक सहमति बनि गेल अछि, मुदा सम्बन्धक अन्य पक्ष—बेटीक इच्छा, बरक सहमति, परिवारसभक प्रत्यक्ष मुलाकात, विवाहक सम्पन्नता—अज्ञात अछि। ई अनकहल विस्तार विहनि कथाक बीज-सम्भावना अछि।

१५. अनुपस्थित बेटी : परिवारक निर्णयमे स्त्रीक मौन

'सगुन'क सबसँ असरकारी अनुपस्थिति हर्षित बाबूक बेटी स्वयं छथि। जिनकर विवाह सम्बन्धी निर्णयक चर्चा भऽ रहल अछि, हुनकर आवाज एको बेर नहि सुनाइत। हुनकर शिक्षा, पसिन्न, असहमति अथवा भविष्यक आकांक्षा सम्बन्धी प्रश्नो संवादमे नहि उठैत। शिष्ट सामाजिक वार्तामे पिता आ मध्यस्थक सक्रियता विवाहक वास्तविक केन्द्र बनि जाइत अछि। एहि मौनकेँ पात्रक मनोभावक प्रमाण नहि, कथा द्वारा उपलब्ध कराओल प्रतिनिधित्वक सीमा बुझबाक चाही।[105]

---

104 साफी, ओहि पोथीमे, 'सगुन', पृ. ७६। नगद राशि, चेन आ मोटरसाइकिल देबाक सहमतिक वर्णन अछि; विवाह सम्पन्न भेलाक वर्णन नहि।

105 साफी, 'सगुन', पृ. ७५–७६। हर्षित बाबू आ ठकोकाकाक अतिरिक्त बेटी अथवा प्रस्तावित वरक प्रत्यक्ष संवाद नहि सुनाइत अछि।

ई मौन 'अन्ध विश्वास'मे आरोपित स्त्रीक मौनसँ भिन्न परिस्थिति राखैत अछि, मुदा दुनू ठाम स्त्रीक विषयमे दोसर लोक बजैत अछि। 'साउस पुतोहु'मे तकर विपरीत स्त्रीसभ स्वतन्त्र रूपसँ बजैत अछि, यद्यपि ओहि स्वरमे लड़ाइ, धमकी आ एक-दोसरापर आरोपक प्रभुत्व अछि। तीनू कथा एहि भिन्नताक कारण स्त्री-स्वरक एकटा विचित्र क्रम प्रस्तुत करैत अछि—केकरो बचाव दोसर करैत अछि, कियो स्वयं क्रोधपूर्वक बोलैत अछि, आ केकरो सम्बन्धमे निर्णय केवल पुरुष करैत छथि। ई तुलना कथासभक आन्तरिक रचना बुझबाक उपयोगी आधार अछि।

शर्मिला रेगेक स्त्री-कथन सम्बन्धी चिन्तन याद करब एतए उचित अछि: स्त्रीक जीवनक साक्ष्य केवल ओकरा विषय बना देलासँ पूरा नहि होइत; ओकर कथन-अधिकारक प्रश्न सेहो उठैत अछि। साफीक कथा एहि प्रश्नकेँ प्रत्यक्ष सिद्धान्तक रूपमे नहि उठबैत, मुदा अभावक द्वारा पाठककेँ विचार करबाक अवसर दैत अछि।[106]

१६. 'वर बिकाय लगनमे' आ 'सगुन' : एकहि पोथीक भीतर दू स्वर

कविता खण्डक अन्तिम रचना 'वर बिकाय लगनमे' दहेजक आर्थिक तर्कपर प्रत्यक्ष व्यंग्य करैत अछि। योग्यताक बनावट आ बरक 'रेट'क भाषा विवाह-बाजारक विकृतिपर चोट करैत अछि। ओकर तुरन्त बाद विहनि कथा खण्ड आरम्भ भऽ आगाँ 'सगुन'मे विवाह-बातचीतक एहन दृश्य देखबैत अछि जाहिमे नगद, चेन आ मोटरसाइकिल देबाक बात एकदम सहज अछि। एहि निकटस्थ पाठसभकेँ एकसाथ पढ़लापर कविता आ कथामे

106 शर्मिला रेगे, Writing Caste, Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios (नई दिल्ली: Zubaan, २००६)। ग्रन्थक प्रकाशकीय विवरण: https://books.google.com/books/about/Writing_Caste_Writing_Gender.html?id=lP8pAAAAYAAJ । जाति आ स्त्री-अनुभव एकसाथ बुझबाक पद्धतिगत सन्दर्भ।

आलोचनात्मक भिन्नता देखाइत अछि: कविता प्रथा पर खुलल प्रहार करैत अछि, कथा प्रथाक भाषिक सामान्यीकरण देखबैत अछि।[107]

दूनू रूपक बीच भेदकेँ 'विरोधाभास' कहि तुरन्त खारिज करब सरल होयत। कथाकार किछु सामाजिक व्यवहारकेँ पात्रक मुँहसँ बिना प्रत्यक्ष टिप्पणी रखि दैत छथि; ई प्रस्तुतिकरण समर्थनक बराबर नहि। तथापि केवल प्रसंग देखायब आ ओकर अन्तर्विरोध तीक्ष्ण बनायब दू अलग शिल्पगत उपलब्धि अछि। 'सगुन'मे जँ बेटीकेँ एकटा प्रश्न पुछबाक अवसर भेटल रहितए, अथवा मध्यस्थक आश्वासनक भीतर ठेसक एकटा क्षण उत्पन्न भेल रहितए, तँ व्यंग्यक लय बेसी स्पष्ट भऽ सकैत छल। मूल कथा एहन अतिरिक्त घटना नहि दैत; ताहि कारण एकर आलोचनात्मक सम्भावना पाठकक विवेकपर निर्भर अछि।

'सगुन'क विशेषता एही मौन अन्तर्विरोधमे अछि। 'शुभ'क शब्द दोहराइत अछि, मुदा बेटी आ बरक व्यक्तित्व कम, लेन-देनक तैयारियाँ अधिक सोझाँ अबैत अछि। सामाजिक यथार्थक एकटा कड़ुआ व्यंग्य एतए शोर कऽ नहि, व्यवस्थित सभ्य गपक भीतर बसि जाइत अछि। ई रचना पाठककेँ केवल दहेजक निन्दा नहि, ओकर रोजमर्राक स्वीकृत तर्क बुझएबाक अवसर दैत अछि।

१७. 'मारैके मन...', 'सेवा' आ 'साउस पुतोहु' : स्त्री-दृष्टिक अन्तर्विरोध

साफीक कविता 'मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै'मे स्त्री-श्रमक बहुलता आ पुरुषक अकर्मण्यता पर व्यंग्य अछि। स्त्री घास-भुस्सा, बच्चाक देखरेख, भानस आ घरेलू काज सम्हारैत अछि; ताहिपर सेहो हिंसात्मक अपमान सहैत अछि। एहिसँ पुतोहुक थकान पढ़बाक एकटा सशक्त अन्तरपाठीय सन्दर्भ भेटैत अछि। मुदा 'सेवा' कवितामे पढ़ल-लिखल पुतोहुक व्यवहार पर बुजुर्गक शिकायत आ परम्परागत गृहकार्यक अपेक्षा प्रमुख अछि। एहि

107 साफी, ओहि पोथीमे, कविता 'वर बिकाय लगनमे', पृ. ६८–६९; 'सगुन', पृ. ७५–७६। संकलनक भीतर दहेजक प्रत्यक्ष व्यंग्य आ विवाह-समझौता-वार्ताक तुलनात्मक आधार।

दुनू छोरक बीच ‘साउस पुतोहु’ स्त्रीक परिश्रम आ पितृसत्तात्मक अनुशासनकेँ एकसाथ प्रकट करैत अछि।[108]

एकहि लेखकक रचनामे स्त्रीक दुर्दशापर सहानुभूति आ आधुनिक पुतोहुक विरुद्ध पूर्वाग्रहक सहअस्तित्व असम्भव नहि। गामक सामाजिक विवेक स्वयं अनेक मूल्य-सरणी रखैत अछि। साहित्यिक आलोचनाक महत्त्व एहि सहअस्तित्वकेँ चिन्हबामे अछि; लेखककेँ वा तँ सम्पूर्ण स्त्री-मुक्तिवादी वा सम्पूर्ण रूढ़िवादी प्रमाणित करबाक जल्दबाजीमे नहि। स्त्री-अनुभवक असमान प्रतिनिधित्व लेखकक समय आ भाषिक परिवेशक तनाव दर्शबैत अछि, जकर आलोचना आवश्यक अछि।

‘साउस पुतोहु’क पात्रक मुँहसँ निकलल कटु भाषा स्वयं रचनाकारक निष्कर्ष नहि। मुदा कथामे कोन स्वरकेँ विस्तार आ कोन स्वरकेँ विराम भेटल अछि, से व्याख्याक विषय अवश्य अछि। पुतोहुक श्रमक बयान अपेक्षाकृत आरम्भमे अबैत अछि; अन्तिम भागमे क्रोधक विस्फोट ओकर छविक मुख्य स्मृति बनि सकैत अछि। साउसक श्रम-विवरण सेहो हिंसा-सम्बन्धी धमकीसँ ढाँपि जाइत अछि। पाठक जँ सम्पूर्ण संवाद पढ़त तखन दुनू स्त्रीक हालत बुझि सकैत अछि, केवल अन्तिम गालीसँ निष्कर्ष निकालत तँ कथा संकुचित भऽ जाएत।

१८. भाषाक लोकध्वनि आ पात्रक सामाजिक स्थान

तीनू विहनि कथाक मुख्य संसाधन संवाद अछि। ‘काकी’, ‘किनयाँ’, ‘यै’, ‘ठकोकाका’, ‘बाबू’ सन सम्बोधन सम्बन्धक दूरी आ निकटता बतबैत अछि। कथक अलगसँ पात्रक सामाजिक जीवनी नहि दैत; सम्बोधनसँ उम्र, अपनापा, अधिकार आ प्रसंगक स्वर प्रकट होइत अछि। ‘अन्ध विश्वास’मे सामान्य बातक लम्बा आवागमन गामक सामाजिक समय

108 साफी, ओहि पोथीमे, कविता ‘मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै’, पृ. ३४–३५; ‘सेवा’, पृ. ६६–६७; विहनि कथा ‘साउस पुतोहु’, पृ. ७३–७४।

बनबैत अछि; ‘साउस पुतोहु’मे कटु आवाज आ प्रतिउत्तर झगड़ाक वेग दैत अछि; ‘सगुन’मे आश्वस्तकारी भाषा वाणिज्यिक समझौताक अनुकूल वातावरण बनबैत अछि।[109]

एहि बोलचालकेँ केवल ‘अशुद्ध’ अथवा ‘अपरिष्कृत’ साहित्यिक मैथिली कहि मूल्यांकन करब त्रुटिपूर्ण होयत। पात्रक मुखपर भाषाक स्थानीय रूप ओकर अनुभवक प्रामाणिक वाहक अछि। साफी मिथिलाक अपन ग्राम्य रजिस्टरक माध्यमसँ जीवनकेँ उपस्थिति दैत छथि; मानकीकृत भाषाक प्रतिस्पर्धामे लोकबोलीकेँ परित्याग करबाक आवश्यकता नहि मानैत। मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ भेद करब जरूरी अछि—भाषाक स्वाभाविक लोक-वैविध्य एक बात, कथात्मक अनुशासनक अभाव दोसर। ‘अन्ध विश्वास’क आरम्भिक वार्तामे कतिपय पुनरावृत्ति दृश्यकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि, मुदा कसावट घटबैत सेहो अछि।

अन्तर्कथनक स्तरपर बोली व्यंग्यक स्रोत बनैत अछि। ‘सगुन’मे बरक चर्चा ‘सेट’ करबाक भाषा सम्बन्धकेँ व्यवस्था-समाप्ति जकाँ प्रस्तुत करैत अछि। ‘साउस पुतोहु’मे ‘हम की बैसल छी’ अपन श्रमक वैधता स्थापित करबाक पद्धति अछि। ‘अन्ध विश्वास’मे ‘डाइन’ शब्द आरोपित स्त्रीक ऊपर सामाजिक दोषक बोझ रखैत अछि। भाषा एतए पात्रकेँ साज-सज्जा नहि, सामाजिक कर्म दैत अछि।

१९. संवादात्मकता, कथकक अनुपस्थिति आ नैतिक स्वर

तीनू रचनामे कथाकारक विवेचनात्मक हस्तक्षेप अत्यल्प अछि। घटनाक क्रम पहिने पात्र कहैत अछि, दोसर ओकर उत्तर दैत अछि। कथक-स्वर पृष्ठभूमिमे रहि जाइत अछि। एहि पद्धतिक कारण पाठककेँ संवाद स्वयं सुनबाक अनुभूति होइत अछि। मिखाइल बाख्तिनक संवादपरक दृष्टि उपयोगी तुलना बनि सकैत अछि: एकहि सामाजिक स्थितिमे अनेक मूल्य-स्वर टकरा सकैत अछि। मुदा साफीक विहनि कथाकेँ पूर्ण बहुस्वरात्मक उपन्यासक स्तरपर

109 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘अन्ध विश्वास’, पृ. ७०–७२; ‘साउस पुतोहु’, पृ. ७३–७४; ‘सगुन’, पृ. ७५–७६। तीनू कथाक कथोपकथनक अन्तरपाठीय तुलना।

रखब अनुचित; एतए छोट-छोट संवादमे कथन-दृष्टिक टकरावक सीमित रूप देखाइत अछि।[110]

'अन्ध विश्वास'मे बड़की दीदीक स्पष्ट विवेकपरक कथन कथाक नैतिक झुकाव अन्तिम क्षणमे सुनिश्चित करैत अछि। 'साउस पुतोहु'मे एकटा निर्णयकारी नैतिक कथन नहि अबैत; संवादक विस्फोट समापन बनैत अछि। 'सगुन'मे कोनो प्रतिवादक आवाज उपस्थित नहि; सामाजिक असंगति पाठकक विवेचनपर छोड़ल गेल अछि। ई तीन प्रकारक कथात्मक निष्कर्ष एकहि खण्डक भीतर भिन्न आख्यान-नीति बनबैत अछि।

एहि अन्तरसँ पाठकक काज बदलैत अछि। पहिल कथामे ओ निदान सुनैत अछि; दोसरमे विवादक न्यायिक पक्ष तौलैत अछि; तेसरमे शुभ शब्दक आवरणक भीतर आर्थिक सम्बन्ध पहिचानैत अछि। रचनासभक क्रम सामाजिक चेतनाक सरल विकास-रेखा नहि, अर्थनिर्माणक तीन प्रयोग जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

२०. समय, स्थान आ अर्थवाही वस्तु

'अन्ध विश्वास'मे भेटक समय, गरमीक परीक्षा, दिल्लीयाँ सामान आ भानसक आयोजन कथा-समयकेँ रोजमर्रा बनबैत अछि। कथा अपन मुख्य विवाद धरि पहुँचबाक पूर्व साधारण जीवनक समय खर्च करैत अछि; फेर छलाँग लगा कऽ अफबाहक दृश्य खुलैत अछि। 'साउस पुतोहु'मे पूरा घटना प्रायः एक घरेलू क्षणमे समटि जाइत अछि; दिनक थकान कथनक माध्यमसँ प्रवेश करैत अछि। 'सगुन'मे विवाह पूर्वक भविष्य-काल निर्णायक अछि: निर्णय एखन होयबाक अछि, सगुन भेजबाक अछि, विवाह करबाक अछि, दिल्ली जाएबाक अछि। तीनू कथामे समयक भिन्न गति विषयकेँ प्रभावित करैत अछि।

110 मिखाइल बाख्तिन, The Dialogic Imagination: Four Essays, सम्पा. Michael Holquist, अनु. Caryl Emerson आ Michael Holquist (Austin: University of Texas Press, १९८१)। संवादात्मक पाठ-पद्धतिक तुलनात्मक सन्दर्भ; बाख्तिनक विचारक प्रत्यक्ष प्रभाव साफीपर प्रमाणित नहि।

वस्तुक साहित्यिक अर्थ सेहो बदलैत अछि। ‘अन्ध विश्वास’मे तेल-साबुन घरक देखभाल आ बाहरी प्रवासक संकेत अछि। ‘साउस पुतोहु’मे महिष, पानि आ गोबर घरेलू उत्पादनक भौतिक श्रमकेँ प्रदर्शित करैत अछि। ‘सगुन’मे चेन आ मोटरसाइकिल नव आर्थिक प्रतिष्ठाक वस्तु बनि जाइत अछि। एहिसँ गामक सामाजिक जीवन स्थिर परम्पराक मात्र चित्र नहि रहैत—ओ बाजार, प्रवास आ उपभोक्ता वस्तुक संग बदलैत संसार बनैत अछि।

भौतिक वस्तुक ई जाल अतिशयोक्ति बिना ग्राम्य आधुनिकता उजागर करैत अछि। दिल्लीसँ पठाओल तेल आधुनिक व्यापारक हिस्सा अछि, फोन संचारक माध्यम, इंजीनियरिंगक तैयारी रोजगारीय भविष्यक प्रतीक, मोटरसाइकिल विवाहक प्रतिष्ठामूल्य। मुदा कथामे आधुनिक वस्तु अपनासँ बराबरी अथवा विवेक नहि उपजाबैत। एकहि समाजमे मोबाइल-सम्पर्क आ डाइन-आरोप, शिक्षा-आकांक्षा आ दहेज, श्रम-संकट आ पारिवारिक हिंसाक धमकी सहअस्तित्व राखैत अछि।

२१. प्रमाण, अफबाह आ सामाजिक ज्ञान

‘अन्ध विश्वास’क केन्द्रीय प्रश्न अछि—लोक कोन आधारपर दोष मानैत अछि? छोटकी जे कहैत अछि ओकर भीतर ‘सभ कहैत अछि’क तर्क अछि। चर्चा केकरो अनुभवक प्रत्यक्ष सत्यापन नहि, जनश्रुतिक रूपमे चलैत अछि। बड़की दीदी ओहि तर्ककेँ अस्वीकार कऽ समाजमे झगड़ाक कारण बतबैत छथि। एहि भिड़न्तकेँ दर्शनक कठिन शब्दावलीक बिना ‘प्रमाण बनाम अपवाद’क नैतिक समस्या मानल जा सकैत अछि।

‘साउस पुतोहु’मे दुनू पक्ष अपन श्रमकेँ प्रमाण बनबैत अछि। मुदा ओ एक-दोसराक श्रमक मूल्य मानबासँ इन्कार करैत अछि। ‘सगुन’मे ठकोकाका द्वारा देल जानकारी विवाहक निर्णयक आधार बनैत अछि; एतए सूचना आ भरोसाक प्रश्न अछि। एहि प्रकार तीनू कथा सामाजिक ज्ञानक अलग स्थिति प्रस्तुत करैत अछि—निराधार आरोप, परस्पर अविश्वास, आ मध्यस्थपर भरोसा।

नव्य-न्यायक प्रमाण-विचार अथवा सामाजिक ज्ञानमीमांसा एहि कथा-पठनक सहायक तुलनात्मक भाषा दे सकैत अछि, मुदा साफीक पाठ एहन औपचारिक दार्शनिक ढाँचा स्वयं प्रतिपादित नहि करैत। ई भेद स्पष्ट राखि सामान्य प्रश्न पूछब अधिक उपयोगी अछि: जे आरोप सुनल गेल, से सत्य किएक मानल जाए? जे परिश्रम कएल गेल, ओकर पहचान के करत? जे वरक परिचय देल गेल, ओकर जाँच कोना होयत? ई तीन प्रश्न कथा-स्थितिसँ स्वाभाविक रूपेँ निकलैत अछि।

२२. दलित रचनाकारक सामाजिक दृष्टि : आरोपित पहिचानसँ परे

साफीक आत्मकथात्मक परिचय स्पष्ट रूपसँ जाति-आधारित पुस्तैनी श्रम, आर्थिक अभाव आ शिक्षाक कठिन संघर्षक चित्र दैत अछि। एहि साहित्यिक जीवनवृत्तक पृष्ठभूमिमे हुनकर विहनि कथाक सामाजिक दृष्टि अधिक अर्थपूर्ण भऽ उठैत अछि: ओ घरक काज, लोकापवाद आ विवाह-विषयक बातचीतकेँ साहित्यक वैध विषय बनबैत छथि। किन्तु ई कहब जे 'अन्ध विश्वास'मे आरोपित स्त्री अवश्य धोबी समुदायसँ अछि, अथवा 'सगुन'क परिवार निश्चित दलित थिक, पाठसँ सिद्ध नहि होइत।[111]

दलित साहित्यक आलोचना लेखकक जाति मात्र देखबाक नहि, ओकर लेखनक माध्यमसँ समाजक असमान सम्बन्ध कोना उजागर होइत अछि, से समझबाक आग्रह करैत अछि। शरणकुमार लिंबाळेक सामाजिक अनुभव-केन्द्रित सौन्दर्यविचार एहि स्तरपर प्रासंगिक अछि। साफीक तीनू कथा प्रत्यक्ष जातीय अपमानक दृश्य नहि रचैत; ओ सामान्य गामक अन्याय आ सामाजिक रूढ़ि पर केन्द्रित अछि। लेखकक दलित अनुभव एहिमे दृष्टिक सम्भावना देत, मुदा प्रत्येक पात्रक जातीय प्रमाण नहि। एहन पठन साहित्यकेँ पहिचानक

111 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्ड, पृ. ७–१३। लेखक अपन धोबी समुदाय, श्रम, शिक्षा आ प्रवासक प्रसंग स्वयं बतबैत छथि। तीनू विहनि कथाक पात्रसभक जाति मूल रचनामे निर्दिष्ट नहि अछि।

संकीर्ण खाँचामे बंद करबाक बदला सामाजिक सम्बन्धक व्यापक आलोचनामे प्रवेश करबैत अछि।[112]

आंबेडकरक जाति-विरोधी विचारसँ एहि प्रश्नक ऐतिहासिक संवाद बनि सकैत अछि: सामाजिक प्रतिष्ठा, मनुष्यक मर्यादा आ बराबरीक अधिकार। मुदा कथामे जाति-व्यवस्थापर प्रत्यक्ष सैद्धान्तिक प्रतिवेदन नहि अछि। एतए अधिक उपयुक्त ई बुझब अछि जे अपवादसँ स्त्रीक प्रतिष्ठा नष्ट करब, घरेलू हिंसा द्वारा अनुशासन कायम करब आ विवाहमे लेन-देनक दबाव कायम करब—ई सभ बराबरीक मूल्यमानक विपरीत सामाजिक प्रवृत्ति अछि। एहि व्यापक नैतिक आधारपर आलोचना सिद्धान्तसँ संवाद स्थापित करैत अछि।[113]

२३. स्त्री-स्वर, वर्ग आ अन्तर्सम्बन्ध

तीनू कथाक आलोचना केवल स्त्री-विषयक सहानुभूतिक नामपर समाप्त नहि होइत। स्त्रीक वर्ग-स्थिति, पारिवारिक आयुक्रम, श्रमक प्रकृति आ विवाहक सत्तासम्बन्ध एक-दोसरासँ जुड़ल अछि। ‘साउस पुतोहु’मे वृद्धा आ नवविवाहिताक श्रम-संकट पीढ़ीक प्रश्न बनैत अछि; ‘अन्ध विश्वास’मे स्त्रीपर सामाजिक अपवादक बोझ सामुदायिक निगाहक प्रश्न बनैत अछि; ‘सगुन’मे बेटी-विवाह घरक आर्थिक व्यवस्थाक प्रश्न बनैत अछि। एहि

---

112 शरणकुमार लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अनु. Alok Mukherjee (Orient Longman, २००४)। प्रकाशकीय विवरण: https://orientblackswan.com/details?format=paperback&obsin=3804 ।

113 भीमराव रामजी आंबेडकर, Annihilation of Caste (प्रथम प्रकाशन १९३६); कोलम्बिया विश्वविद्यालयक व्याख्यायुक्त पाठ: https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html ।

जटिलताकेँ एकटा सार्वत्रिक 'स्त्री-पीड़ा'क सूत्रमे विलीन कएलासँ पाठक विवरण छूटि जाएत।

किम्बर्ले क्रेन्शॉकक अन्तर्सम्बन्धी विश्लेषण आ शर्मिला रेगेक दलित स्त्रीक जीवन-वृत्तान्त सम्बन्धी अध्ययन एकर पद्धतिगत उपयोगिता स्पष्ट करैत अछि—हिंसा, श्रम आ सामाजिक पहिचानक अनेक धुरी एकसाथ क्रियाशील भऽ सकैत अछि। तथापि एहि अवधारणासभक मूल ऐतिहासिक प्रसंग अलग अछि; 'साउस पुतोहु'क पात्रक वर्ग वा जाति अस्पष्ट रहलासँ तुलना सूचनापर संयम राखबाक अपेक्षा करैत अछि।[114][115]

साफीक एकटा विशिष्ट योगदान ई अछि जे ओ ग्रामीण स्त्रीक बोलचाल सुनबैत छथि। हुनकर पात्र केवल मौन पीड़िता नहि—ओ सवाल उठबैत, विरोध करैत, बकझक करैत, अपन थकान कहैत छथि। तकर विपरीत 'सगुन'क बेटी मौन अछि आ 'अन्ध विश्वास'क आरोपित स्त्री स्वयं नहि बजैत अछि। ई तीन-आयामी स्थिति मैथिली स्त्रीक प्रतिनिधित्वपर विचार करबाक समृद्ध सामग्री प्रदान करैत अछि। आलोचना केवल आवाजक उपस्थिति नहि, ओकर अनुपस्थिति सेहो पढ़ैत अछि।

२४. परम्परा : संरक्षण, नियन्त्रण आ वाणिज्य

'अन्ध विश्वास'मे लोकविश्वासक नामपर स्त्रीकेँ दोषी ठहराएबाक प्रयास अछि; 'साउस पुतोहु'मे बुजुर्गक आज्ञापालनक पारिवारिक परम्परा सत्ताक साधन बनैत अछि; 'सगुन'मे

---

114 किम्बर्ले डब्ल्यू. क्रेन्शॉ, "Mapping the Margins: Intersectionality, Identity Politics, and Violence against Women of Color," Stanford Law Review ४३, अंक ६ (१९९१), पृ. १२४१–१२९९। रचनाक व्यापक पद्धतिगत सन्दर्भ; अमेरिकी प्रसंगक निष्कर्षकेँ मिथिलापर यथावत् लागू नहि कएल गेल अछि।

115 रेगे, Writing Caste, Writing Gender (२००६); क्रेन्शॉ, "Mapping the Margins" (१९९१)। स्त्री-श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा आ हिंसाक प्रश्नकेँ जोड़ि देखबाक आलोचनात्मक आधार।

विवाह-संस्कारक परम्परा नगद-वस्तुक लेन-देनक स्वीकृति जुटबैत अछि। तीनू ठाम परम्परा एकहि अर्थ नहि राखैत—कहूँ विश्वास, कहूँ घरेलू अधिकार, कहूँ सामाजिक प्रतिष्ठा। मुदा प्रश्न साझा अछि: की 'एहिना होइत आएल अछि'क तर्क बिना जाँच सदैव मान्य होयत?

साफीक कथामे आधुनिकता सेहो सरल मुक्तिक नाम नहि। दिल्लीक प्रवासी पुत्र आधुनिक घरेलू सामान पठा सकैत अछि, मुदा लोक-अपवाद समाप्त नहि; फोन-सम्पर्क पुतोहुकेँ मायके जेबाक विकल्प देत, मुदा परिवारक हिंसक भाषा अछैते अछि; इंजीनियरिंगक तैयारी नव शिक्षा-आकांक्षाक संकेत अछि, मुदा दहेजक व्यापार बनल रहैत अछि। एहि प्रकार परम्परा-आधुनिकताक सहज विरोधक बदला दुनूक उलझल सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि।

विहनि कथाक सफलता एहि जटिलताक दृश्यात्मक रूपमे अछि। कथाकार पैघ सामाजिक विमर्श-पुस्तक नहि लिखैत; ओ व्यक्ति-व्यक्ति बीच सामान्य वार्ता रखैत छथि। जाहि ठाम पाठक पारम्परिक रीतिक सहजता देखैत अछि, ओहि ठाम व्यवस्था-केन्द्रित आलोचना सम्भव होइत अछि। ई सामाजिक रचनाक विशेष साहित्यिक उपलब्धि अछि।

२५. तीनू कथाक तुलनात्मक संरचना

'अन्ध विश्वास'क मुख्य गति बाह्य गपसँ अन्तिम विवेक-वाक्य धरि अछि। ई 'अनेक प्रसङ्ग—सामाजिक आरोप—स्पष्ट निष्कर्ष'क संरचना राखैत अछि। 'साउस पुतोहु' 'आदेश—प्रतिवाद—धमकी—प्रति-धमकी'क क्रममे बढ़ैत अछि; समाधान नहि, तनावक घनीभूत रूप अन्त होइत अछि। 'सगुन' 'आश्वासन—उम्मीदवारक परिचय—आर्थिक सहमति—सगुनक आग्रह'क रूपमे घटित अछि। एहि तीन संरचनासँ विधाक भीतर भिन्न शिल्पगत सम्भावना प्रकट होइत अछि।[116]

---

116 साफी, 'अन्ध विश्वास', 'साउस पुतोहु', 'सगुन', बैशाखमे दलानपर, पृ. ७०–७६। कथा-अन्तसभक तुलनात्मक अध्ययनक मूल पाठ।

पहिल कथा विचार-प्रधान अछि; दोसर वाणी-प्रधान; तेसर स्थिति-प्रधान। पहिलमे सुधारक वाक्यक जोर अछि; दोसरमे पात्रक अनुभव आ क्रोधक टकराव; तेसरमे सामाजिक सामान्यीकरणक व्यञ्जना। ई भेद समीक्षककेँ एकहि कसौटीसँ सभ रचना नापबाक भूलसँ बचबैत अछि। किछु कथा पाठककेँ कहैत अछि 'एहि पर विश्वास नहि करू'; दोसर पूछैत अछि 'न्याय केकर पक्षमे अछि'; तेसर सोचय लेल बाध्य करैत अछि 'ई शुभ व्यवहारक भीतर वस्तुतः की चलि रहल अछि?'

तीनू कथामे 'निष्कर्ष'क सीमा अलग-अलग अछि। 'अन्ध विश्वास'क पात्र आरोपक खण्डन करैत अछि, मुदा आरोपित स्त्रीक नियति नहि देखाइत। 'साउस पुतोहु'क अन्त संघर्ष रोकैत नहि। 'सगुन' विवाह धरि पहुँचैत नहि। एहि दृष्टिसँ कथानक समाप्त, मुदा सामाजिक प्रक्रिया अपूर्ण। एही अपूर्णतामे विहनि कथाक बीजसदृश शक्ति अछि—वास्तविक जीवन कथाक अन्तिम पंक्तिपर थमि नहि जाइत।

२६. कलात्मक उपलब्धि आ सीमाक सम्यक् परीक्षण

प्रथम उपलब्धि बोलचालक जीवन्तता अछि। साफीक पात्र कथा-पुस्तकक संस्कारित भाषण नहि दैत, गाम-घरक परिस्थितिसँ निकलल वाक्य बजैत छथि। दोसर उपलब्धि छोट गातमे सामाजिक अर्थक सघनता अछि—कथामे बड़ घटना नहि होइत, मुदा स्त्रीक बदनामी, घरेलू हिंसाक धमकी आ दहेजक स्वीकृति सन महत्त्वपूर्ण तनाव स्पष्ट होइत अछि। तेसर उपलब्धि अन्तरपाठीयता अछि: कविता खण्डक स्त्री-श्रम आ दहेज-विषयक रचना विहनि कथाकेँ नव अर्थ दैत अछि।[117]

प्रथम सीमा 'अन्ध विश्वास'क आरम्भिक प्रसंग-विस्तार आ अन्तिम उपदेशात्मक वाक्यमे अछि। लोकोक्ति आ गपक विश्वसनीयता रहलोपर कथा अपन मूल संघर्ष धरि देर सँ पहुँचैत अछि। दोसर सीमा 'साउस पुतोहु'मे विकसित संवादक अन्तमे गाली-धमकीक

117 साफी, बैशाखमे दलानपर, कविता खण्ड आ विहनि कथा खण्ड, पृ. ३४–३५, ६६–६९, ७०–७६।

प्राबल्य अछि; घटनाक एकाधिक पक्षक पूर्ण छानबीन पाठकक ऊपर छोड़ि देल जाइत अछि। तेसर सीमा ‘सगुन’क अल्प विकसित व्यंग्य अछि: बेटी तथा वरक प्रत्यक्ष आवाज रहितए तँ सामाजिक प्रश्न अधिक धारदार बनि सकैत छल। एहि टिप्पणीक उद्देश्य कथाकेँ वर्तमान रुचिक अनुसार पुनर्लिखब नहि, ओकर उपलब्ध रूपक सामर्थ्य आ सीमा चिन्हब अछि।

रचनासभमे स्पष्ट नैतिक दिशा आ कलात्मक बहुअर्थ एकसमान नहि। ‘अन्ध विश्वास’मे सामाजिक प्रतिवाद स्पष्ट, कलात्मक अन्त अपेक्षाकृत बन्द; ‘साउस पुतोहु’मे नैतिक प्रश्न असुविधाजनक, अन्त खुलल; ‘सगुन’मे नैतिक टिप्पणी मौन, व्यञ्जना सम्भावित। अतः तीनूकेँ समान प्रकारक श्रेष्ठता वा कमजोरी देब उचित नहि। कथा-शिल्पक मूल्यांकन विषयक महत्त्वसँ अलग, मुदा ओकर विरोधमे नहि करबाक चाही।

२७. पूर्ववर्ती आलोचनासँ संवाद आ पाठ-संशोधन

साफीक कृतिक एकटा विस्तृत उपलब्ध आलोचनात्मक विवेचनमे विहनि कथा सम्बन्धी परिच्छेद मुख्यतः ‘अन्ध विश्वास’ आ ‘साउस पुतोहु’क प्रसंग उठबैत अछि। मुदा मूल खण्डमे ‘सगुन’ सेहो अछि। ई केवल गनतीक सामान्य चूक नहि; तेसर कथा छोड़ि देलासँ कथाखण्डक अर्थ-सरणी बदलि जाइत अछि। तखन अन्धविश्वास आ घरेलू विवादक बीच सम्बन्ध देखल जाएत, मुदा विवाहक नामपर आर्थिक लेन-देनक तेसर क्षेत्र अदृश्य भऽ जाएत। वर्तमान समीक्षामे मूल खण्डक तीनू रचनाकेँ केन्द्रमे राखल गेल अछि।[118]

विधाक सम्बन्धमे सेहो सावधानी आवश्यक अछि। ‘विहनि कथा’केँ स्वायत्त मैथिली नाम देबाक सांस्कृतिक महत्त्व स्वीकार करैत ओकर अन्तर्गत रचनाकेँ स्वतन्त्र रूपसँ परखब

---

118 गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi,” A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm । एहि विवेचनक ‘Seed Stories’ परिच्छेदमे दू कथाक चर्चा अछि; मूल पोथीमे तेसर कथा ‘सगुन’ स्पष्ट रूपैँ सम्मिलित अछि।

चाही। तेनाही लेखकक आत्मकथाक ऐतिहासिक पहिचान स्वीकार करैत विहनि कथाक प्रत्येक पात्रक सामाजिक वर्ग अथवा जाति बिना प्रमाण नहि निश्चित कएल जा सकैत। एहि दू प्रकारक सावधानी साक्ष्य-आधारित साहित्येतिहास बनएबाक न्यूनतम शर्त अछि।

समालोचनाक उद्देश्य पूर्ववर्ती अध्ययनक सम्पूर्ण निषेध नहि, ओकर उपलब्ध सन्दर्भक सहायतासँ मूल रचनाकेँ पुनः पढ़ब अछि। तीनू कथा प्रस्तुत कऽ सामाजिक अन्याय, श्रम, लोकविश्वास, विवाह-संरचना आ भाषाक सूक्ष्म परीक्षण कएलापर कृतिक व्यापक अर्थ उद्घाटित होइत अछि। ग्रन्थक सम्पादकीय महत्त्व आ रचनाक साहित्यिक मूल्य अलग प्रश्न अछि, मुदा दूनूकेँ संवादमे राखल जा सकैत अछि।

२८. उपसंहार : बीजक भीतरक असमाप्त समाज

संदीप कुमार साफीक विहनि कथा खण्ड आकारमे छोट, परन्तु सामाजिक अर्थमे बहुविस्तृत अछि। ‘अन्ध विश्वास’ लोकापवादक आधारपर स्त्रीकेँ दोषी ठहराएबाक प्रवृत्तिक प्रतिवाद करैत अछि। ‘साउस पुतोहु’ घरेलू स्त्री-श्रम, पीढ़ीक अधिकार, पुरुष-सत्ताक अप्रत्यक्ष धमकी आ नैहरक सीमित विकल्पक चित्र दैत अछि। ‘सगुन’ विवाहक शुभ नामक भीतर आर्थिक सौदाक सहज स्वीकृतिक दृश्य खोलैत अछि। तीनू रचना मिलि कऽ मिथिलाक सामाजिक जीवनक एकटा प्रश्न बनबैत अछि—मनुष्यक प्रतिष्ठा, देहक श्रम आ पारिवारिक निर्णयक मूल्यांकन केकर आवाजक आधारपर होइत अछि?

कथासभक उल्लेखनीय सामर्थ्य लोकबोलीमे अछि। पात्रक संभाषणक बीच पाठक धर्म-विश्वासक विवाद, श्रमक अवमूल्यन आ दहेजक अर्थतन्त्र सुनैत अछि। लेखकीय निष्कर्ष सर्वत्र समान घनत्वमे नहि आएल अछि; ई असमानता कृतिक यथार्थ आलोचनाक हिस्सा अछि। ‘अन्ध विश्वास’क स्पष्ट नैतिक वाक्य चेतना दैत अछि, मुदा सूक्ष्मता घटबैत अछि। ‘साउस पुतोहु’क अनिर्णीत अन्त सामाजिक जटिलताकेँ खुलल रखैत अछि। ‘सगुन’क शिष्ट वार्ता आलोचनात्मक अस्वस्थता उत्पन्न करैत अछि, मुदा स्त्रीक मौन ओकर सीमा सेहो अछि।

साफीक साहित्यिक योगदानकेँ केवल एकटा ऐतिहासिक 'पहिल'क विशेषणमे नहि समेटल जा सकैत। हुनकर संक्षिप्त कथासभ मिथिलाक गामक सामान्य जीवनकेँ विचारयोग्य साहित्यिक पदार्थ बनबैत अछि। एकटा रोगक गप, एकटा थाकल पुतोहुक उत्तर, एकटा विवाह-मध्यस्थक भरोसा—ई साधारण दृश्य ओहि सामाजिक व्यवस्था पर दृष्टि फेरेबाक आग्रह करैत अछि जाहिमे अपवाद प्रमाण बनैत अछि, श्रम अधिकारहीन होइत अछि आ शुभ संस्कार आर्थिक लेन-देनसँ भरि जाइत अछि। एहि रचनासभक वास्तविक महत्त्व एतए अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

साफी, संदीप कुमार। बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। "आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी।" अन्तर्गत: संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। "विहनि कथा"क विधागत विवेचन। विदेहक लेखकीय अभिलेख, ३० सितम्बर २०१०। https://gajendrathakur.blogspot.com/2010_09_30_archive.html ।

विदेह। "विदेह: सदेह ५—मैथिली विहनि कथा" तथा "विदेह: सदेह ६—मैथिली लघुकथा।" प्रकाशकीय सूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm ।

ठाकुर, गजेन्द्र। "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi." A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, भाग ६५। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

लिंबाळे, शरणकुमार। Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations। अनुवाद: Alok Mukherjee। हैदराबाद: Orient Longman, २००४।

रेगे, शर्मिला। Writing Caste, Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios। नई दिल्ली: Zubaan, २००६।

क्रेन्शॉ, किम्बर्ले डब्ल्यू। "Mapping the Margins: Intersectionality, Identity Politics, and Violence against Women of Color." Stanford Law Review, ४३(६), १९९१।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। Annihilation of Caste। प्रथम प्रकाशन: १९३६। कोलम्बिया विश्वविद्यालयक अध्ययन-संसाधन: https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html ।

बाख्तिन, मिखाइल। The Dialogic Imagination: Four Essays। सम्पा. Michael Holquist; अनुवाद: Caryl Emerson आ Michael Holquist। Austin: University of Texas Press, १९८१।

विदेह। "सन्दीप कुमार साफी—बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)।" गद्य-साहित्यक प्रकाशकीय सूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm ।

अन्न, श्रम आ घरक असमान अधिकार

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क लघुकथा खण्डक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

‘ओगरबाह’ आ ‘पसीखाना’ : निकट-पाठ, सामाजिक अर्थनीति आ आख्यान-शिल्प

सारांश

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क लघुकथा खण्डमे ‘ओगरबाह’ आ ‘पसीखाना’ नामक दूटा कथा अछि। पहिल कथामे वृद्ध खेत-रखवालाक भातक लालसा, मड़ुआ रोटी, फसल-संरक्षणक मजदूरी, खेतीक पारम्परिक साधन आ बदलैत ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक प्रसंग सँ एकटा विस्तारित कृषि-सामाजिक विमर्श बनैत अछि। दोसर कथामे भुखना नामक पुरुषक मद्यपान, श्रमसँ बचबाक प्रवृत्ति, परिवारक अन्न बेचब, पत्नीपर हिंसा आ बच्चाक अभावक अनुभव घरेलू जीवनक संकटकेँ उघारैत अछि। दुनू रचनाक मूल प्रश्न भूख आ श्रमक बीच सम्बन्ध अछि; मुदा पहिलमे श्रमिक खेतक अन्नक रक्षा करितो पर्याप्त भोजनसँ वञ्चित, दोसरमे पत्नी श्रम करैत छथि जखन पुरुष घरक अन्नक उपभोग आ विक्रयपर अधिकार जतबैत अछि। वर्तमान आलेख कथाक वाचक-स्थिति, उद्घाटन, पुनरावृत्ति, संवाद, सामूहिक स्मृति, वस्तु-विन्यास, स्त्रीक कथन, वर्ग-सम्बन्ध, जाति-निरूपणक सीमा तथा पर्यावरणीय व्यञ्जनाक निकट-पाठ करैत अछि। शरणकुमार लिंबाळेक दलित साहित्यिक सौन्दर्यबोध, शर्मिला रेगेक जाति-लिङ्ग दृष्टि आ विदेहक उपलब्ध आलोचनाक संग तुलनात्मक संवादक माध्यमसँ ई प्रतिपादित कएल गेल अछि जे दूनू कथा समाजक अनदेखल श्रमकेँ साहित्यक केन्द्रमे आनैत अछि; तथापि ‘ओगरबाह’मे वर्णनसँ उपदेशात्मक निबन्ध दिस विस्तार आ ‘पसीखाना’मे स्त्री-अनुभवक बहुधा एकपक्षीय प्रस्तुति कलात्मक समीक्षा आमन्त्रित करैत अछि। कथापात्रसभक जाति वा लेखकक अनकहल उद्देश्यबारे अनुमानकेँ प्रमाणक स्थान नहि देल गेल अछि।

बीजशब्द

संदीप कुमार साफी; बैशाखमे दलानपर; लघुकथा; ओगरबाह; पसीखाना; दलित सौन्दर्यबोध; कृषि-श्रम; भूख; फसल-रखवाली; स्त्री-श्रम; मद्यपान; घरेलू हिंसा; सामाजिक यथार्थ; लोकभाषा; पर्यावरणीय स्मृति।

१. प्रस्तावना : छोट कथा, दू भिन्न सामाजिक संसार

मैथिली गद्य-साहित्यमे गामक श्रमसँ उपजल अनुभव बहुत बेर लोक-चित्रणक सामग्री बनल अछि; मुदा श्रम करनिहार मनुखक दृष्टि कथाक अर्थ-केन्द्र कोना बनैत अछि, ई अलग प्रश्न थिक। संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क लघुकथा खण्ड एहि प्रश्नकेँ दू भिन्न दिशामे उठबैत अछि। ‘ओगरबाह’ खेतक रखवाली करनिहार वृद्धक भूखसँ शुरू होइत अछि आ कृषि-सभ्यताक बदलैत रूपपर पहुँचैत अछि। ‘पसीखाना’ एकटा श्रमिक परिवारक भीतरी कष्टकेँ बच्चा, पति आ पत्नीक अलग-अलग आवाजमे देखबैत अछि। दूनू रचना समान लम्बाइक नहि, नहिए समान प्रकारक कथानक-विकास राखैत अछि। एही विषमतासँ ओकर साहित्यिक मूल्यांकनक आरम्भ होयबाक चाही।[119][120]

पाँच खण्डक एहि संकलनमे आत्मकथा, कविता आ विहनि कथा उपरान्त लघुकथा अबैत अछि। आत्मकथामे लेखक अपन धोबी समुदाय, गरीबी, पढ़ाइ आ प्रवासक अनुभव कहैत छथि। लघुकथामे ओ ‘हम’क तत्कालिक अनुभव छोड़ि एहन सामाजिक पात्रसभ रचैत छथि जिनकर बोलचाल, भूख, असुरक्षा आ घरेलू विवाद लेखकक जीवन-संसारसँ संवाद

119 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४), अनुक्रम आ लघुकथा खण्ड, पृ. ७७–८६। एहि खण्डमे ‘ओगरबाह’ आ ‘पसीखाना’ शीर्षक दूटा रचना अछि।

120 साफी, बैशाखमे दलानपर, ‘ओगरबाह’, पृ. ७८–८३; ‘पसीखाना’, पृ. ८३–८६। पाठगत समूची तुलना एहि दूनू रचनापर आधारित अछि।

करैत अछि। आत्मकथाक ऐतिहासिक दलित पहचान महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकरा कथा-पात्रक जन्मजात परिचय प्रमाणित करबाक सहज बाट नहि बनाओल जा सकैत अछि।[121]

ई शोध-समीक्षा एहि दूनू रचनाकेँ न त केवल ग्रामीण समस्याक सूची मानैत अछि, नहिए साज-सज्जायुक्त आदर्श कथा। ओ देखैत अछि जे कहबाक ढंग, कथाक रहस्य, कथावाचकक हस्तक्षेप, उपभोगक वस्तु, श्रमक समय आ बोलबाक अधिकार मिलि कऽ सामाजिक यथार्थकेँ साहित्यिक अनुभवमे रूपान्तरित करैत अछि।

२. साहित्येतिहासमे स्थिति आ पाठक प्राथमिकता

'बैशाखमे दलानपर'क पहिल संस्करण २०१४ मे श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल। विदेहक प्रकाशकीय सूची एहि पोथीकेँ मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा सहित पुस्तकक रूपमे चिन्हैत अछि। एहि पहिचानक मर्म आत्मकथा खण्डसँ सम्बन्धित ऐतिहासिक दावामे अछि; शेष खण्डसभकेँ ओही एक विशेषणमे विलीन कऽ देब साहित्यिक अन्याय होयत। कथा-लेखनक अपन विधागत तर्क अछि, जाहिमे पात्र, घटना, काल, कथन आ समापनक जाँच स्वतंत्र रूपसँ आवश्यक अछि।[122]

विदेहमे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक विस्तृत अंग्रेजी आलोचना साफीक दू लघुकथाक कृषि-पारिस्थितिकी आ घरेलू अर्थव्यवस्थाक प्रश्नक उल्लेख करैत अछि। ई अध्ययन एक

121 साफी, ओहि पोथीमे, आत्मकथा खण्डक प्रारम्भमे गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी, पृ. ६; आत्मकथा पृ. ७–१३। 'मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा'क मूल्यांकन एहि समकालीन सम्पादकीय दावाक सन्दर्भमे बुझबाक अछि; सर्वसमावेशी ऐतिहासिक सूची बिना एकरा स्वतन्त्र सिद्ध तथ्य नहि मानल गेल अछि।

122 विदेहक गद्य-साहित्यक प्रकाशकीय सूची: "सन्दीप कुमार साफी—बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)", https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm (अवलोकन: १८ नवम्बर २०२६)।

महत्त्वपूर्ण पूर्ववर्ती वैचारिक संवाद उपलब्ध करैत अछि, खास कऽ खेतक रखवालाक भूख आ स्त्रीक अनकहल श्रमक सम्बन्धमे। तथापि किछु व्याख्यात्मक बातक निरूपण लेल मूल कथा एकमात्र निर्णायक आधार अछि। उपलब्ध आलोचनाक सारग्रहण करबाक संग-संग ओकर पाठगत दावासभक पुनर्परीक्षण साहित्यिक अध्यवसायक अनिवार्य हिस्सा थिक।[123]

एहि कारणेँ वर्तमान समीक्षा लघुकथा खण्डक ठीक दू रचनाक संरचनामे प्रवेश करैत अछि। ‘ओगरबाह’क फैलल निबन्धात्मकता आ ‘पसीखाना’क दृश्यप्रधान नाटकीयता दुनूकेँ एकहि अल्पविस्तारक पैमानापर नहि नापल गेल अछि। शिल्पक भिन्नता कृतिक कमजोरी सेहो भऽ सकैत अछि, मुदा वाचकक उद्देश्य आ सामाजिक विषयक अनुपातमे ओकर अर्थ बदलैत अछि।

३. आलोचनात्मक पद्धति : प्रत्यक्ष कथन आ व्याख्यात्मक अनुमान

कथाक भीतर कथावाचकक कहब, पात्रक कहब, कथामे वर्णित वस्तुस्थिति आ समीक्षकक निष्कर्ष एक वस्तु नहि होइत। ई भेद ‘ओगरबाह’मे बहुत आवश्यक अछि, जतए माटिक उर्वरता, खाद, ट्रैक्टर, घरेलू यन्त्र आ महँगाइपर अनेक सामान्य टिप्पणी अबैत अछि। साहित्यिक पाठमे एहि विचारसभक उपस्थिति निर्विवाद अछि; मुदा एहि सभक वैज्ञानिक सत्यता कथा मात्रसँ सिद्ध नहि होइत। तहिना ‘पसीखाना’मे मद्यपानसँ घरक संकट देखाओल गेल अछि, मुदा कथामे नहि देल गेल चिकित्सकीय निदान वा सबटा पृष्ठभूमि समीक्षक स्वतः जोड़ि नहि सकैत।[124][125]

123 गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi,” A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, खण्ड ४.२, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm (अवलोकन: १८ नवम्बर २०२६)।

दलित सौन्दर्यशास्त्रक आलोचनात्मक दिशा एहि अध्ययनकेँ ई प्रश्न दैत अछि जे केकर जीवन साहित्यक योग्य अनुभव मानल जाएत, श्रम आ अपमानक भाषा कोना बदलब, आ साधारण मनुखक कहनाइ साहित्यिक अधिकारक घोषणा कोना बनैत अछि। शरणकुमार लिंबाळेक पुस्तक एहि प्रश्नपर एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक सन्दर्भ अछि। मुदा साफीक पात्रसभक जातीय नाम अस्पष्ट रहलासँ एहि वैचारिक ढाँचाक उपयोग समाजक श्रम-वितरण बुझबाक औजारक रूपमे करब उचित, पात्रक जाति घोषित करबाक साधनक रूपमे नहि।[126][127]

शर्मिला रेगेक विचार स्त्रीक श्रम, आवाज आ कथाक सत्ता-सम्बन्ध बुझबाक एगो दोसर दिशा दैत अछि। दू पुरुष-पात्रक आसपास बनल दूनू कथामे स्त्रीक भोजन, थकान, प्रबन्ध आ प्रतिवाद देखल जा सकैत अछि। तथापि एहि पाठक स्त्रीसभ अपन जीवनक लेखिका

---

124 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ८०–८२। रासायनिक खाद, ट्रैक्टर, चूल्हि आ घरेलू यन्त्रक गुण-दोष विषयक सामान्यीकरण कथकीय राय थिक; अध्ययनमे परवर्ती वैज्ञानिक तथ्यक रूपमे नहि दुहराओल गेल अछि।

125 साफी, 'पसीखाना', पृ. ८४–८६। कथा मद्यपानक निन्दा करैत अछि, मुदा भुखनाक चरित्रक सार्वकालिक चिकित्सकीय निदान नहि दैत।

126 शरणकुमार लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अनु. Alok Mukherjee (हैदराबाद: Orient Longman, २००४)। ग्रन्थ-विवरण: https://books.google.com/books/about/Towards_an_Aesthetic_of_Dalit_Literature.html?id=VsxjAAAAMAAJ ।

127 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ७९–८२। नथुनी मरड़ तथा दोसर पात्रक जातिक निश्चित नाम कथामे स्पष्ट नहि; केवल लेखकक आत्मकथामे अपन धोबी-दलित परिचय उपलब्ध अछि।

नहि छथि; हुनकर आवाज पुरुष कथाकार द्वारा रचित अछि। एहि मध्यस्थताकेँ स्वीकार करैत स्त्री-अनुभवक मूल्यांकन करब बेसी ईमानदार आलोचनात्मक काज अछि।[128]

४. 'ओगरबाह'क आरम्भ : भातक लालसा आ वृद्ध देह

'ओगरबाह'क आरम्भ कोनो कृषिविज्ञानक विचारसँ नहि, भोजनक स्मृतिसँ होइत अछि—"बड़ दिन भऽ गेल भात खेला।" एहि छोट वाक्यमे कथा भूखकेँ एकटा ऐतिहासिक आ भावनात्मक समय दैत अछि: अन्न भेटब एकटा नित्य सामान्य घटना नहि, प्रतीक्षाक विषय बनि गेल अछि। मड़ुआ रोटी चिबेबामे असुविधा, दालि-मिरचाइक स्वाद, पेटक पीड़ा आ पुतोहुक असन्तोष एकहि शरीरक चारू कात जुड़ि जाइत अछि। वृद्ध वाचकक दाँत, स्वाद आ जठरक सीमासभ ओकर सामाजिक गरीबीकेँ देहक प्रत्यक्ष अनुभव बनबैत अछि।[129]

एतए मड़ुआ रोटीकेँ केवल गरीबक भोजन कहि छोड़ब अनुचित होयत; कथामे समस्या ओकर जातीय प्रतीक नहि, वृद्धक बदलल शारीरिक क्षमता आ स्वादक उत्कण्ठा अछि। खेसारी साग, भात आ आलूक चटनीक कल्पना खेनाइकेँ उत्सव नहि बनबैत, बरु साधारण भोजनक दुर्लभता देखबैत अछि। कथा 'भात'क माध्यमसँ एहन पीड़ा रचैत अछि जाहिमे उपलब्ध अनाज आ मनोवाञ्छित भोजन अलग-अलग वस्तु बनि गेल अछि।

पुतोहुक खौंझाइबो प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। कथा वृद्धक दृष्टिसँ पुतोहुक प्रतिक्रिया सुनबैत अछि; पुतोहुक अपन थकान, संसाधन वा सम्भावित असहायता एतए सीधे नहि

128 शर्मिला रेगे, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios (नई दिल्ली: Zubaan, २००६)। संस्करणक पुष्टि: Central University of Tamil Nadu Library, https://library.cutn.ac.in/bib/3200 ।

129 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ७८। आरम्भमे वृद्ध कथावाचक भातक अभाव, मड़ुआ रोटी, दालि, मिरचाइ आ पुतोहुक असन्तोषक प्रसंग कहैत अछि।

भेटैत। अतः वृद्धक दुखपर सहानुभूति आवश्यक रहलोपर पुतोहुकेँ संवेदनहीन घोषित करब पाठकसँ बाहर जाइब होयत। एहि आरम्भक साहित्यिक शक्ति एही अपूर्ण सम्बन्धमे अछि।

५. श्रमक नाम : 'ओगरबाह' एकटा सामाजिक पद

'ओगरबाह' शीर्षक व्यक्ति-विशेषसँ बेसी काजक नाम अछि। खेतक देखरेख, ऐँर काटब अथवा ओकरा सँ पानि निकालब, पशु-पक्षीसँ फसल बचेनाइ, राति-दिन खेतक चिंता—एहि कार्यसभक संगठित रूपेँ एकटा गामक पदनाम बनैत अछि। कथा नथुनी मरड़ नामक रखवालाक उल्लेख करैत अछि। ओ अपन ऊँचगर ठाम चुनि खोपड़ी बनबैत अछि आ ओतए सँ खेतीपर नजरि रखैत अछि। भूमिक मालिकक नाम गौण अछि; रखवाली करनिहारक काज कथा-विषयक केन्द्र बनैत अछि।[130][131]

कथामे किसान आ ओगरबाहक सम्बन्ध आधुनिक निश्चित मासिक वेतनक अनुबन्ध जकाँ नहि चित्रित अछि। कतेको गृहस्थ अपन-अपन खेतक देखरेखक अनुरोध करैत, कटनीक बाद अनाज वा खेतक कोनसँ प्रतिफल देबाक आश्वासन करैत छथि। एहि विनिमयमे श्रमिकक सुरक्षित आय नहि, बरु फसलक उपलब्धता आ मालिकक व्यवहार महत्त्वपूर्ण बनि जाइत अछि। वर्षभर निगरानी करनिहारक मेहनति कखन प्रतिफलमे बदलत, ई आंशिक रूपसँ ओहि व्यवस्था पर निर्भर अछि जकर मालिक ओ नहि।

'ओगरबाह' शब्दक भीतर श्रमक अदृश्यता अछि। खेतीक इतिहास कहिते किसान, जोत, बीआ आ उपजक चर्चा सहज होइत अछि; मुदा फसल-रक्षाक राति, रौद, पानि, पंछी, सुँढ़-पारा आ ऊँघक लोक बहुत बेर बाहरे छुटि जाइत छथि। साफी एहन कामकेँ कथा-साहित्यक नाम बनबैत छथि—ई हुनकर साहित्यिक उपलब्धि अछि।

---

130 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ७८–७९। श्रमिकक गाममे ठहरि खेत ओगरबाक विवशता; नथुनी मरड़ नामक रखवालाक परिचय आ फसल-आधारित प्रतिफलक उल्लेख।

131 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ७९। खोपड़ी बनाबि खेतक देखरेख, ऐँरक पानि निकालब, पशु-पक्षीसँ रक्षा तथा धानक कटनीक समय सालभरक बोइन देबाक विवरण।

६. खेत ओकरा देखबाक अछि, फल ओकरा पूरा नहि

खेतक रक्षा करनिहार स्वयं पर्याप्त भात नहि खा सकैत अछि—'ओगरबाह'क सर्वाधिक तीक्ष्ण वैचारिक अन्तराल एतए अछि। ओ जिनकर खेतक अन्नक सुरक्षा करैत अछि, ओहि अन्नक उपयोगपर ओकर अधिकार सीमित अछि। एहि विरोधाभासकेँ कथा कोनो सिद्धान्तक भाषा नहि दैत; आरम्भक भातक कामना आ बीचक श्रम-वर्णन जोड़ि पाठक स्वयं एकर अर्थ निकालैत अछि।

रखवालीक श्रम प्रकृतिक सहज क्रिया नहि। एकर समय खेतीक समूचा चक्रक संग बँधल अछि: रोपनीक बाद देखरेख, ऐँर पर दृष्टि, पानि निकलनाइ, जानवरक प्रवेश रोकब, कटनी धरि चौकसी। खेतक मालिक लेल ई सुरक्षा अछि; मजदूर लेल ओहि सुरक्षासँ जीविकाक किछु हिस्सा। एहि दोहरा अर्थकेँ देखलापर कथा कृषक-समाजक केवल सुन्दर दृश्यचित्र नहि रहैत, श्रम आ सम्पत्तिक सम्बन्धपर लेखकीय प्रश्न बनैत अछि।

मुदा कथा स्पष्ट संख्या वा ठोस मजदूरीक तुलनात्मक ब्यौरा नहि दैत। फलतः ई निष्कर्ष निकालब जे सभ ओगरबाह एकहि नियमसँ शोषित होइत छथि, प्रमाणसँ बाहर होयत। कथा एक स्थानीय श्रम-व्यवस्थाक अनुभूत चित्र दैत अछि, जेकरा आधारपर व्यापक शोधक प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि—समूचा कृषि-अर्थतन्त्रक अन्तिम आँकड़ा नहि।

७. खोपड़ी, कमला आ ग्रामीण भू-दृश्यक अर्थ

नथुनी मरड़क ऊँच जगहपर बनाओल खोपड़ी छोट विवरण अछि, मुदा ओकर भीतर श्रमक भौगोलिकता समायल अछि। खेत देखबाक लेल ऊँच ठाम चाही; फसलक रक्षा करबाक लेल राति-दिन तहि ठाम टिकबाक व्यवस्था चाही। खोपड़ी गृहस्थीक पक्का घर नहि, काजक अस्थायी ठिकाना अछि। ओ स्थल श्रमिक आ खेतक बीचक दूरीकेँ सेहो रेखाङ्कित करैत अछि—रखवाली करनिहार धरतीक निकट अछि, मुदा स्वामित्वक केन्द्रसँ अलग।

कमला नदीक कातक उर्वर माटि, कुसियारक खेती, धानक किसिम आ गामसँ निकलबला सड़कक प्रसंग कथाकेँ मिथिलाक भौगोलिक सन्दर्भमे राखैत अछि। माटिक केवल प्राकृतिक गुण नहि; ओकर उपर विकासक दबाव आ मानव-विकल्पक छाप पड़ैत अछि। सड़क बनब सामाजिक सुविधा दैत अछि, मुदा खेत घटबाक दुःख कथावाचक अनुभव करैत अछि। एही ठाम ओ ‘विकास’क एकरेखीय अर्थकेँ चुनौती देबाक सम्भावना खोलैत अछि।[132]

कथाक कृषि-शब्दावली—ऐँर, रोपनी, ओगरबाही, खोपड़ी, सुँढ़-पारा, धानक विशिष्ट नाम—बोलीक स्थानीय ज्ञानक संरक्षा करैत अछि। एहि नामसभकेँ मानकीकृत कृषिशास्त्रक प्रत्यक्ष वर्गीकरण मानब ठीक नहि; मुदा साहित्यिक अर्थमे ई शब्द खेतमे बितल जीवनक शब्द-मानचित्र बनबैत अछि।

८. कृषि-आधुनिकता : आलोचना आ सामान्यीकरणक भेद

‘ओगरबाह’मे हर-बड़दसँ ट्रैक्टर धरि, गोबर-छाउरसँ रासायनिक खाद धरि, ढेकीसँ बिजलीक कुटैया धरि अनेक बदलावक चर्चा अछि। कथावाचक एहि रूपान्तरणमे श्रमक परित्याग, माटिक कमजोर होयब आ घर-गामक सामूहिकताक हानि देखैत अछि। एतए औजारसभक सूची जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ततेक महत्त्वपूर्ण अछि ओहि औजारक प्रति कथकीय भाव—एकटा बीतल व्यवस्था प्रति लगाव आ नव व्यवस्था प्रति सन्देह।[133][134]

---

132 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ७९–८०। कमला कातक उर्वर माटि, सड़क निर्माण, खेती आ अन्नक संकटसँ जुड़ल कथकीय टिप्पणी।

133 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ८०–८१। रासायनिक खाद, खेतीक उर्वरता, महँगाइ, हर-बड़द आ ट्रैक्टर सम्बन्धी कथकीय प्रतिपादन; अनुभवजन्य मूल्यांकन आ वैज्ञानिक निष्कर्षमे भेद आवश्यक अछि।

134 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ८१–८२। गोबर-छाउर, गैस-चूल्हि, प्रेशर कुकर, मिक्सी, ढेकी, चापाकल आ धान-कुटाइ सम्बन्धी दृश्य।

एहि भावकेँ शाब्दिक वैज्ञानिक निष्कर्ष मानब उचित नहि। सभ रासायनिक खाद एकहि ढङ्गेँ माटिक उर्वरता नाश करैत अछि, वा ट्रैक्टर स्वतः कम उपज देत, वा गैस-चूल्हिक उपयोग ग्रामीण जीवनक नैतिक पतन सिद्ध करैत अछि—एहन सामान्य दावा कथागत अनुभवक भाषामे अछि, वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन नहि। कथाकार अपन पात्रक दृष्टि विश्वसनीय बनबैत छथि; पाठककेँ ओहि दृष्टिक सीमा सेहो देखबाक चाही।

एकटा विशेष अन्तर्विरोध स्त्रीक घरेलू श्रमसँ जुड़ल अछि। गैस-चूल्हि, मिक्सी, चापाकल आ अन्य सुविधा श्रम घटा सकैत अछि; कथावाचक ओकरा सामूहिक परम्पराक पतनक रूपमे बेसी देखैत अछि। एक गामक सामूहिक श्रम-व्यवस्था जकरा पुरुष वाचक स्मृतिमय ढङ्गसँ देखैत अछि, ओ व्यवस्था स्त्री लेल प्रतिदिनक भारी श्रम सेहो रहल होयत—ई प्रश्न कथा स्पष्ट नहि करैत। एतए ओकर ग्राम-स्मृति एकपक्षीय भऽ उठैत अछि।

९. पढ़ाइ बनाम खेती : विरोध नहि, परस्पर निर्भरता

कथा नव पीढ़ीक पढ़ाइकेँ सीधा नकारैत नहि अछि। पात्र स्वीकार करैत अछि जे शिक्षा आवश्यक अछि; तकर बाद ओ पूछैत अछि जे भोजन उपजत नहि तँ पैसा आ पढ़ाइ कोना जीवन चलाओत। पैसाक खाद्य-संसाधनमे बदलैत सामाजिक अर्थक चर्चा गामक अनुभवसँ निकलल गम्भीर प्रश्न थिक। खेतीकेँ निचला काज मानि मात्र दफ्तरक नौकरीकेँ श्रेष्ठ समझबाक प्रवृत्ति पर एहिसँ चोट पड़ैत अछि।[135]

कथा खेतमे कोदारि पारबासँ बचैत नवयुवकक उदाहरण दैत अछि। एहि उदाहरणमे पीढ़ीगत फाँकक व्यंग्य अछि, मुदा किसानक सन्तानकेँ पढ़बाक आकांक्षा लेल दोषी ठहराओल नहि जा सकैत। शिक्षा आ खेतीक बीच टकराव बेसी तखन बनैत अछि जखन

135 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ८०। पढ़ाइ, पैसाक विनिमय-मूल्य, भोजन-उत्पादन आ खेतीक अभियान्त्रिकी सम्बन्धी कथावाचकक विचार। ई कथा-पात्र/कथकीय दावासभ अछि, स्वतन्त्र कृषि-अर्थशास्त्रीय आँकड़ा नहि।

कृषि-श्रमक प्रतिष्ठा, सुरक्षा आ समुचित प्रतिफल अनुपस्थित रहैत अछि। कथामे एहन वैकल्पिक अर्थशास्त्रीय व्याख्या खुलि नहि पबैत अछि।

कथावाचक खेतीक अभियन्ता बनि किसानकेँ सलाह देबाक सम्भावना सेहो रखैत अछि। एहि कारण 'शिक्षा विरुद्ध खेती'क शीर्षकसँ कथा पढ़ब एकपक्षीय होयत; ओकर भीतर शिक्षित ज्ञान आ लोकक अनुभवक सहयोगक आकांक्षा अछि। मुदा एहि आकांक्षाक तर्ककेँ यदि कथा दृश्य-घटनासँ जोड़ितथि तँ विचारक कला-प्रभाव आओर गाढ़ भऽ सकैत छल।

१०. खेनिहार आ उपजेनिहार : एक वाक्यमे अर्थनीति

'ओगरबाह'क बीचमे लोकसभक 'खेनिहार' बढ़ब आ 'उपजेनिहार' घटबाक चिन्ता अबैत अछि। ई ग्रामीण अर्थनीतिक एकटा लोक-निर्णय थिक। कथाकेँ ई निर्णय आन्तरिक तनाव दैत अछि—कृषि-संसाधनपर अधिकार, परिश्रम करबाक इच्छा आ बजारमे अनाजक मूल्यक सम्बन्ध। मुदा 'खेनिहार' शब्दमे जे सभ उपभोक्ता समाहित छथि, हुनकर भोजन-अधिकारकेँ प्रश्नांकित करबाक खतरा सेहो अछि। बच्चा, वृद्ध, असमर्थ व्यक्ति आ खेतबाहरक श्रमिक सेहो अन्नक अधिकारी छथि।

ई तर्कक साहित्यिक महत्त्व एतबे अछि जे कथावाचक भूखक समस्या केवल व्यक्तिगत इच्छा मानि नहि रहि जाइत; ओ पूरा समाजक अन्न-वितरणबारे सोचए लगैत अछि। तथापि मजदूरी, भूमि-वितरण, मौसमक आपदा आ बजारक अलग-अलग कारणकेँ 'आलस्य'क एकहि शब्दमे समेटब विचारक सीमा बनैत अछि। कथामे नव जीवन-पद्धतिक निन्दा कतेको ठाम सामाजिक संरचनाक जटिलताकेँ ओझर करैत अछि।

एहि प्रकारेँ कथा आलोचनाकेँ निमन्त्रण दैत अछि। ओकर वैचारिक बेचैनी प्रामाणिक साहित्यिक अनुभूति थिक, मुदा ओहि बेचैनीसँ जन्मल सभ निष्कर्ष समान रूपसँ स्वीकार्य नहि। आलोचनात्मक सम्मानक अर्थ रचनाकारक हरेक कथनक अनुमोदन नहि, बरु ओकर भीतर कार्यरत प्रश्नक गम्भीर अध्ययन थिक।

११. खेतसँ खेत दिस भगाओल जीव : अन्तरनिर्भर गरीबक विडम्बना

कथाक अन्तक नजदीक एकटा चित्र अबैत अछि: एक खेतक ओगरबाह जीवसभकेँ भगा कऽ दोसर खेतमे पठबैत अछि, दोसर खेतक ओगरबाह ओहि जीवकेँ फेर इमहर खदेड़ैत अछि। ई दृश्य अत्यल्प शब्दमे कतेको अर्थ उत्पन्न करैत अछि। एक रखवालाक सफलता दोसराक समस्या बनि जाइत अछि। खेतक सीमा जानवर लेल नैतिक सीमा नहि, मुदा मनुष्यक रोजी-रोटी लेल आवश्यक व्यवस्था थिक।[136]

एहि दृश्यकेँ आपसी स्पर्धाक एकटा सूक्ष्म रूपक मानल जा सकैत अछि। श्रमिक परस्पर शत्रु नहि, मुदा दुनूक दायित्व एहन ढङ्गसँ निर्धारित अछि जे एकर समाधान दोसराक संकटकेँ बढ़बैत अछि। समाजक साझा समस्या—फसलक सुरक्षा—व्यक्तिगत खेतक क्षणिक बचावमे बँटि जाइत अछि। सामूहिक उपाय अनुपस्थित अछि; ‘अपना-अपनाकि बचाबैए, दोसरकि खुआबैए’ सन विडम्बना एही अनुपस्थितिक आभास दैत अछि।

ई कथासँ निकलैत व्यञ्जना लेखकक उपदेशात्मक अनुच्छेदसभक अपेक्षा अधिक टिकाऊ अछि, कारण दृश्य स्वयं बोलैत अछि। ‘ओगरबाह’क आभ्यन्तर कलात्मक सम्भावना एही ठाम चरमपर पहुँचैत अछि: अर्थक व्याख्या कम, अनुभवक प्रतीक बेसी।

१२. चक्रीय समापन : जे प्रश्न शुरू भेल छल से रहि गेल

‘ओगरबाह’क अन्त आरम्भक भातक अभावपर लौटैत अछि। पाठक कृषि-नीति, सामाजिक बदलाब, तकनीक, शिक्षा आ महँगाइक विस्तारसँ घूमि फेर ओहि वृद्ध देहक समीप आबैत अछि जकर भोजनक इच्छा पूर्ति नहि भेल। ई चक्रीय संरचना कथाकेँ महत्त्वपूर्ण अर्थ दैत अछि: विमर्श बहुत भेल, मुदा भूख जेकाँ छल तेकाँ रहल।[137]

---

136 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ८२। एक खेतसँ भगाओल जीव दोसर खेतमे जाएबाक उदाहरण तथा दूनू ठामक ओगरबाहक परस्पर विरोधी काज।

तथापि समापन केवल एकहि प्रारम्भिक वाक्यक पुनरावृत्ति नहि; आरम्भिक भोजन-विवरण सेहो फेर आबैत अछि। एही आवर्तनसँ कथाक रचना-विधान एक प्रकारक स्मृति-चक्र जकाँ बनैत अछि। जँ वाचकक विचारसभकेँ कथात्मक क्रियामे रूपान्तरित करब उद्देश्य रहितए तँ ई पुनरावृत्ति ओहि दमनकारी स्थितिक तीव्रता बढ़ा सकैत छल; वर्तमान पाठमे वैचारिक अनुच्छेदक विस्तार कखनो-कखनो आरम्भक वृद्ध पात्रकेँ दीर्घ समय लेल विस्मृत करबा दैत अछि।

एतए साहित्यिक मूल्यांकन दूटा परिणामकेँ संग राखैत अछि। एक दिस अभावक चक्र जीवनक निष्ठुर निरन्तरता देखबैत अछि, दोसर दिस घटना-विकासक कमी कथा-शिल्पकेँ निबन्धात्मक बना दैत अछि। साफीक प्रयास एतेक लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ कथा-भाषामे कृषि-अर्थनीतिक प्रश्न उठबैत छथि; ओकर प्रमुख कलात्मक संकट ई अछि जे विचार अनेक ठाम दृश्यपर भारी पड़ि जाइत अछि।

१३. 'पसीखाना'क उद्घाटन : कामक बुलाहट आ अनुत्तरित घर

'पसीखाना' संवादक तुरन्तिक तनावसँ आरम्भ होइत अछि। एकटा ट्रैक्टरबला भुखनाकेँ माटि-कटाइक मजदूरी लेल बजबैत अछि; भोरमे आठ बजे धरि ओ सुतले अछि। बाहर आबैत अछि ओकर छोट बेटा, जकर हाथमे बासि भात आ मुरै सागक टीनक बाटी अछि। बच्चा आगन्तुककेँ बतबैत अछि जे राति माएसँ बकझक भेलाक बाद पिता नहि उठल छथि। एहि आरम्भमे तीन परस्पर विरोधी समय अछि—काजक नियत भोर, बच्चाक भोजनक भूख आ घरक वयस्क पुरुषक स्थगित दिन।[138]

137 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ८२–८३। कथाक समाप्तिमे आरम्भक भात-विषयक वाक्य आ आरम्भिक देहगत प्रसंग पुनरावृत्त होइत अछि।

138 साफी, 'पसीखाना', पृ. ८३। ट्रैक्टरबला भुखनाकेँ माटि-कटाइक मजदूरी लेल बजबैत अछि; बच्चा बासि भात आ मुरै साग खाइत बाहर अबैत अछि।

कथाक आरम्भिक दृश्यक शक्ति ओकरा अत्यल्प कथकीय समझावनमे अछि। ट्रैक्टरबला कामक अवसर लऽ कऽ आएल; बच्चा बिना साहित्यिक उपदेश घरक संकट बता दैत अछि; माताक स्थान खेतमे अछि, जतए ओ धान काटि रहल अछि। पुरुष गृहस्थीक मुखिया होयबाक सामाजिक दावा रखैत अछि, मुदा दृश्य ओकर श्रमहीन उपस्थितिक आभास दैत अछि।

कथाक प्रथम अर्थ बच्चाक आँखिसँ बनैत अछि। ओ नशाक चिकित्सकीय विश्लेषण नहि करैत, जे देखलक से कहैत अछि। आ बच्चाक भोजन—बासि भात आ साग—परिवारक संसाधनक ठोस दृश्य थिक। यथार्थवादी कथा प्रायः एही प्रकार साधारण वस्तुक माध्यमसँ असाधारण संकट देखबैत अछि।

१४. 'भुखना'क भूख : व्यक्ति-नाम आ नैतिक विरोधाभास

मुख्य पात्रक नाम 'भुखना' अछि। एकरा शब्दार्थक एकमात्र प्रमाणित वंशावली मानबाक आवश्यकता नहि; तथापि पाठकीय कानमे 'भूख'क ध्वनि सहज उठैत अछि। पात्र उठिते काल पिछला रातिक माछ-भात माँगैत अछि, जखन बच्चा कहैत अछि जे ओ राति तऽ साग-भात बनल छल आ पिता स्वयं माएसँ तेल लेल पाइ माँगबाक प्रसंगमे झगड़ा केने छल। एकहि भोजनपर पिता आ बच्चाक स्मृतिक अन्तर पात्रक नैतिक स्थिति खोलैत अछि।[139]

एतए 'भूख'क दू रूप अछि। एकटा देहक वैध आवश्यकता, दोसर पसिन्न भोजन पर नियन्त्रणक सामाजिक दावा। भुखनाक भूख वास्तविक अछि, मुदा ओहि भूखक बोझ केकरा पर पड़ैत अछि, एहि प्रश्नसँ कथा ओकर चरित्र परखैत अछि। पत्नी खेतमे श्रम करैत छथि, बच्चा बाचल भोजन खाइत अछि, आ पति ओ भोजनक वैविध्य चाहैत अछि जकर सामग्री जुटबामे ओ योगदान नहि करैत।

---

139 साफी, 'पसीखाना', पृ. ८३–८४। भुखनाक नीन्द, पत्नी संगे पिछला रातिक विवाद, माछ-भातक माँग आ बच्चाक प्रतिवाद।

भुखनाकेँ केवल हास्यास्पद आलसी कहि देब कथाक जटिलताकेँ छोट करैत। कथा आजीविकाक अव्यवस्था, पीबाक संगति आ गरीबीक परस्पर सम्बन्धक संकेत करैत अछि, मुदा ठोस मानसशास्त्रीय कारण-विवेचन नहि दैत। आलोचकक कर्तव्य ओकर व्यवहारक आलोचना करब अछि, बिना एहन रोग-नाम आरोपित केने जकर प्रमाण पाठमे अनुपस्थित अछि।

१५. धानक बोरा : अभावक घरमे संसाधनपर अधिकार

जखन भुखनाकेँ किछु खाइ लेल भेटैत नहि, ओ घरक धानक आधा बोरा लऽ बजारमे बेचि दैत अछि। ई घटना कथाक निर्णायक मोड़ थिक। घरमे धान मात्र अन्न नहि, परिवारक आगाँक भोजन आ पत्नीक बचत-मिहनतिक रूप सेहो अछि। ओहि वस्तुकेँ व्यक्तिगत तुरन्तिक खर्चक रूपमे बदलि देब संसाधनपर असमान अधिकार देखबैत अछि।[140]

खरीदल गेल बिस्कुट, सलाइ, बीड़ी आ सुपारीक सूची छोट अछि, मुदा ओ अपन अर्थसँ भारी अछि। एतए घरक अन्नक सामूहिक उपयोग घटैत अछि आ व्यक्तिगत आदतक उपभोग बढ़ैत अछि। वस्तुक नाम, थोर मूल्य आ खरीदक क्रम कथाकेँ ठोस समय आ बजारक धरातल दैत अछि। ई सूची केवल ‘बुरा आदमी’क नैतिक उपदेश नहि; घरेलू अर्थव्यवस्थाक एकटा क्रियात्मक लेखा अछि।

कथाक पाठकक मनमे प्रश्न उठैत अछि: घरक धानकेँ बेचनाइकेँ परिवारक सदस्यसभक बीच के स्वीकृत वा अस्वीकृत करैत अछि? एतए पत्नी अनुपस्थित छथि; ओ खेतमे काज करैत छथि। ओहि अनुपस्थितिक क्षणमे निजी निर्णय सम्भव होइत अछि। संसाधनक नियन्त्रण आ श्रमक योगदानक बीचक दूरी एहि कथाक गम्भीर राजनीतिक अर्थ थिक।

140 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८४। घरक धान बेचब, बिस्कुट, सलाइ, बीड़ी आ सुपारी कीनब तथा संगीसभसँ पीबाक लेल जाएबाक बातचीत।

१६. मद्यपानक सङ्गति : व्यक्तिगत स्वभाव आ सामाजिक अभ्यास

बजारसँ लौटल भुखना चारि संगीक संग भेटैत अछि; ओकरा सभक योजना पीबाक ठाम जाएबाक अछि। मित्रता एतए गीत-गप, सहयोग वा संयुक्त श्रमक समुदाय नहि, मद्यपानक आमन्त्रणक रूपमे सोझाँ अबैत अछि। भुखना पहिने सँ ओहि सम्भावनाक प्रतीक्षामे अछि। कथा मद्यपानक व्यवहारकेँ एकाकी व्यक्ति-लक्षण नहि, सामूहिक समय-वितरणक घटना बनबैत अछि।[141]

तथापि उपन्यासिक विस्तारक जकाँ कथा एहि संगीसभक पृथक पृष्ठभूमि नहि खोलैत। ओ सभ किन्ह लोक छथि, केहन रोजगार करैत छथि, की कारणेँ पीबाक दिस जाइ छथि—एकर विवरण नहि अछि। एहि अभावसँ समाज-सम्बन्धी निदान सावधानी माँगैत अछि। एतए कथा एक परिवारपर आदतक दुष्प्रभावक स्पष्ट साक्ष्य दैत अछि; समस्त समुदाय वा वर्गकेँ एकहि दोषसँ परिभाषित करबाक अनुमति नहि।

‘पसीखाना’ शीर्षक कथाक सामाजिक स्थलकेँ केन्द्रमे राखैत अछि, मुदा दृश्य वास्तवमे घर, ओसारा, बजार आ टोलक गपक बीच घटित होइत अछि। पसीखाना स्वयं विस्तृत दृश्य बनि नहि अबैत; पात्रक सम्भावित गन्तव्य आ स्त्रीक शिकायतमे ओकर नाम सुनाइत अछि। शीर्षक द्वारा अनुपस्थित स्थलकेँ उपस्थित सामाजिक शक्तिक रूप देब कथा-शिल्पक अर्थपूर्ण उपाय अछि।[142]

141 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८४। घरक धान बेचब, बिस्कुट, सलाइ, बीड़ी आ सुपारी कीनब तथा संगीसभसँ पीबाक लेल जाएबाक बातचीत।

142 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८५। कथाक भीतर स्त्रीक संवादमे “पसीखाना” शब्द मद्यपानक ठामक सन्दर्भमे आबैत अछि; कथा स्वयं ओहि ठामक पूरा दृश्य प्रस्तुत नहि करैत अछि।

१७. घरक बाहर उघड़ैत अन्तःपुर : पत्नीकेँ भेटल कथन-अवकाश

'पसीखाना'क आरम्भिक दृश्य पुरुष आ बच्चाक इर्द-गिर्द अछि, मुदा कथाक वास्तविक सामाजिक विस्तार पत्नी बजिते शुरू होइत अछि। ओ धान नहि भेटलापर पड़ोसमे पूछैत अछि; प्रश्नसँ आरम्भ भेल सामान्य बातचीत धीरे-धीरे ओकर जीवनक लम्बा बयान बनि जाइत अछि। ओ बतबैत छथि जे पति ताड़ी पीबाक लेल जाइत अछि, रोगक चेतावनीक बादो आदत छोड़ैत नहि, घरक खर्च नहि दैत, ओकरा मारैत अछि, आ ओकर श्रमसँ परिवार चलैत अछि।[143]

एहि बोलबाक प्रसंगक महत्त्व ई अछि जे निजी घरक हिंसा सार्वजनिक पड़ोसक विषय बनैत अछि। स्त्री अपन जीवनक लेखा पड़ोसिनसँ कहैत छथि; पड़ोस एकटा वैकल्पिक श्रोता बनैत अछि, यद्यपि समाधान देबाक ओकर सामर्थ्य कथामे प्रकट नहि। स्त्रीक बयानमे नोर, क्रोध, तिरस्कार आ भविष्यक भय मिश्रित अछि। ई केवल विलाप नहि, श्रमक मान्यता आ सम्मानक माँग सेहो अछि।

मुदा बोलबाक एहि अधिकारक सीमा सेहो अछि। कथा पत्नीक जीवनक कथन स्वयं पतिक छायामे रचैत अछि; ओकर स्वतंत्र इच्छा, श्रम-संगठन वा सामाजिक सहायता-व्यवस्था कथासँ बाहर अछि। एतए कथाकार स्त्रीक आवाज सुनबैत छथि, मुदा ओ आवाजक दुनिया पति-विरोधी शिकायतक सीमा लेल विवश अछि। ई उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ संग पढ़ब आवश्यक अछि।

१८. स्त्रीक कमाइ : धान-कटनी, पशुपालन आ गृहस्थी

कथा स्पष्ट करैत अछि जे भुखनाक पत्नी दोसरक खेतमे धान काटैत छथि। ओकरा बच्चाक पालन करबाक अछि, घरक भोजन जुटेबाक अछि, बकरी पोसबाक अछि, स्कूलक खर्चक चिंता अछि, आ बीमार अथवा मद्यपी पतिक व्यवहार सहबाक अछि। ई अनेक काज

143 साफी, 'पसीखाना', पृ. ८५–८६। पत्नी धानक अभाव, मारि-पीट, आजीविका, बच्चाक पढ़ाइ, पशुपालन, रोग आ गृहस्थीक ऋणात्मक अनुभव कहैत अछि।

एकहि दिनक भीतर संकुचित भेल अछि। पारिवारिक अर्थनीतिक दृष्टिसँ पत्नी केवल 'घरवाली' नहि, घरक जिअबाक मूल आधार बनैत छथि।[144]

बकरी बेचि पाइ पएबाक अथवा राखल गहनाक नष्ट भऽ जेबाक प्रसंग स्त्रीक बचत आ असुरक्षाक दोहरा धरातल खोलैत अछि। श्रम कएलोपर संसाधन टिकैत नहि; परिवारक कमाइ व्यक्तिगत मद्यपानमे समाप्त भऽ सकैत अछि। कथाक आर्थिक हिंसा केवल शारीरिक आघात नहि, परिवारक सामूहिक सम्पत्तिपर बिना उत्तरदायित्वक अधिकार सेहो अछि।

शर्मिला रेगे दलित स्त्रीक जीवनक अध्ययनमे जाति, भोजन, श्रम आ हिंसाक संयुक्त प्रश्न महत्त्वपूर्ण बनबैत छथि। एहि वैचारिक प्रेरणासँ 'पसीखाना'क पत्नीकेँ मात्र शराबी पतिक विरोधमे ठाढ़ स्त्री नहि, उत्पादन आ पुनरुत्पादन दुनूक श्रम वहन करनिहार व्यक्ति रूपमे देखब सम्भव होइत अछि। मुदा ओकर अपन जातीय परिचय कथा निर्दिष्ट नहि करैत; ताहि कारण दार्शनिक ढाँचाकेँ पाठक उपलब्ध प्रमाणक सीमा भीतर राखल गेल अछि।[145]

१९. हिंसाक कथा : प्रत्यक्ष घटना नहि, स्मृत चोट

भुखनाक पत्नी आ बच्चाक कथनमे पिछला रातिक मारि-पीटक प्रसंग अछि। पत्नी बतबैत छथि जे तेल कीनबाक पाइ माँगला पर पतिक व्यवहार हिंसक भेल। एहि घटनाक बयान कथामे घटित हिंसाक महत्त्व घटबैत नहि; उलटे ई देखबैत अछि जे घरक आघातक

---

144 साफी, 'पसीखाना', पृ. ८३–८६। भुखनाक पत्नी खेतमे धान काटबाक काज करैत अछि; कथा ओकरा बाल-बच्चाक पालन, बकरीक देखभाल आ घरक अन्य काज सेहो दैत अछि।

145 शर्मिला रेगे, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios (नई दिल्ली: Zubaan, २००६)। संस्करणक पुष्टि: Central University of Tamil Nadu Library, https://library.cutn.ac.in/bib/3200 ।

स्मृति बच्चा आ स्त्रीक आवाजमे कतेक जीवित रहैत अछि। तथापि कथाशास्त्रीय रूपसँ ई स्मृत घटना थिक, तत्काल दृश्य नहि।[146]

स्त्रीक शिकायतक विस्तार हिंसाकेँ अन्न, वस्त्र, औषधि आ पढ़ाइक अभावसँ जोड़ैत अछि। यदि ओकरा केवल पति-पत्नी झगड़ा कहि पढ़ल जाए तँ संसाधनक संरचनात्मक प्रश्न अदृश्य भऽ जाएत। भुखनाक व्यवहार निजी आदत अछि, मुदा ओकर प्रभाव अनेक जीवनपर पड़ैत अछि। बच्चाक शिक्षण-अवसर, पत्नीक स्वास्थ्य आ बूढ़ पिता-मायेक परिवारजनित प्रतिष्ठा सभ ओहि प्रभावक परिधिमे अबैत अछि।

कथाक अन्तमे स्त्री कहैत अछि जे ओ मायके जाएब चाहैत अछि, मुदा फेर-फेर परिस्थिति बदलैत, दिन ढलैत आ योजना टलैत रहल अछि। ई कथन नाटकीय प्रतिज्ञा नहि, बन्धनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। विकल्पक नाम मौजूद अछि; तकरा क्रियान्वित करबाक सामाजिक आ आर्थिक सामर्थ्य अस्थिर अछि। एहि असमर्थतामे कथा घरेलू हिंसाक एक गम्भीर यथार्थ पकड़ैत अछि।

२०. छोट बच्चाक आवाज : परिवारक नैतिक साक्ष्य

कथाक पहिल शब्दसभ वयस्क पुरुषक पुकार छथि, मुदा साँच बात आगन्तुककेँ बच्चा कहैत अछि। ओ बाबू सुतल छथि कहैत अछि, झगड़ाक प्रसंग बतबैत अछि, आ पिता द्वारा कल्पित माछ-भातक प्रसंग खण्डित करैत अछि। ई बच्चा परिवारक अन्तःस्थिति पर

146 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८४–८६। शारीरिक हिंसाक वर्णन मुख्यतः बच्चा आ पत्नीक स्मृत/कथित बयानसँ अबैत अछि; हिंसा घटबाक स्वतंत्र प्रत्यक्ष दृश्य ओहि कथांशमे नहि अछि।

कथकीय विश्वसनीयता उत्पन्न करैत अछि। ओकर बात एखनहुँ सरल अछि; ओ मनोवैज्ञानिक शब्दावलीमे पिता कैँ दोषी सिद्ध नहि करैत।[147][148]

बच्चाक भोजनक सामान आ ओकर माता खेतमे रहबाक तथ्य कथा कैँ अमूर्त निन्दासँ बचबैत अछि। बच्चाक लेल शिक्षा, भोजन आ सुरक्षा तीन स्वतंत्र अधिकार छथि; पतिक व्यवहार एहि तीनूकैँ संकटमे दैत अछि। पत्नी अपन बयानमे मास्टरक फीसक पाइ जुटेबाक कठिनाइ कहैत छथि, जाहिसँ बच्चाक भविष्यक संकट वर्तमान भूखसँ जुड़ैत अछि।[149]

वाचक बच्चाकैँ पुनः दीर्घ भूमिका नहि दैत; स्त्रीक एकालापक बाद कथा बन्द होइत अछि। यदि कथाक संरचनामे आरम्भक बच्चाक प्रश्नक प्रतिध्वनि अन्तमे लौटैत, तँ पीढ़ीगत पीड़ाक प्रभाव आरो प्रखर भऽ सकैत छल। मुदा उपलब्ध पाठक प्रारम्भहि एहन तीक्ष्ण अछि जे पाठक आखिर धरि बच्चाक बासि भातक दृश्य बिसरि नहि सकैत।

२१. कथन-शिल्प : दृश्यसँ बड़ एकालाप धरि

‘पसीखाना’क संरचना तीन गतिसँ बनैत अछि: पहिल, श्रमक बुलाहट आ बच्चाक छोट संवाद; दोसर, भुखनाक घर-बजार-संगी धरि चलब; तेसर, पत्नी द्वारा पड़ोसक स्त्रीक सोझाँ घरक लम्बा हिसाब। ई क्रम वस्तुतः नाट्यक तीन दृश्य जकाँ व्यवस्थित अछि। पहिल दृश्य

---

147 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८३। ट्रैक्टरबला भुखनाकैँ माटि-कटाइक मजदूरी लेल बजबैत अछि; बच्चा बासि भात आ मुरै साग खाइत बाहर अबैत अछि।

148 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८३–८४। भुखनाक नीन्द, पत्नी संगे पिछला रातिक विवाद, माछ-भातक माँग आ बच्चाक प्रतिवाद।

149 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८५–८६। पत्नी अपन स्थिति कहैत छथि जे ओ बच्चासभक पढ़ाइले खर्च नहि जुटा सकैत छथि; एकरा वास्तविक शिक्षण-संस्थाक फीसक प्रमाणित लेखा नहि मानल गेल अछि।

परिस्थिति बतबैत अछि, दोसर दोषक क्रियात्मक रूप खोलैत अछि, तेसर परिणामक मनोवैज्ञानिक आ आर्थिक भार सुनबैत अछि।[150]

अन्तिम एकालाप स्त्रीकेँ कथाक सर्वाधिक दीर्घ वाणी दैत अछि। एहि स्तरपर रचना संवादप्रधान कथासँ मौखिक साक्ष्य सन विस्तारक दिस बढ़ैत अछि। पुनरुक्ति, शिकायतक आवर्तन, अलग-अलग घटनाक बीच छलाँग, पड़ोसिनकेँ सम्बोधन—ई सभ गामक कथन-संस्कृतिक जीवित गुण छथि। ओहि मौखिक लयकेँ केवल ‘असंयमित’ कहब उचित नहि; दर्दक स्मृति सेहो अनुशासित साहित्यिक क्रममे नहि, उफनैत बोलमे निकलि सकैत अछि।

तथापि आलोचनात्मक स्तरपर प्रश्न रहैत अछि जे लम्बा एकालापकेँ आन्तरिक दृश्य, छोट ठहराव वा प्रतिवादसँ अधिक सघन बनाओल जा सकैत छल कि नहि। कथाकारक सामाजिक पक्ष स्पष्ट अछि; कला कखनहुँ व्यक्तित्वकेँ बहुआयामी बनबैत अछि, आ कखनहुँ पात्रकेँ एक निर्णयक प्रमाण मात्र बना दैत अछि। ‘पसीखाना’ ई दुनू सम्भावनाक बीच ठाढ़ अछि।

२२. ‘पसीखाना’क अनुपस्थित केन्द्र आ स्थानिक विडम्बना

शीर्षक मद्यपानक एक ठामक नाम लैत अछि, मुदा पाठकक अधिकांश समय घरक ओसारा, खेतमे अनुपस्थित श्रम, दुकानदारक सामान आ टोलक गपमे बीतैत अछि। पसीखानाक भीतरक दृश्य नहि देखला सँ ओहि ठामक सामाजिक शक्ति कम नहि होइत; ओ एकटा आकृष्ट करनिहार दिशा बनैत अछि जकर छाया घर धरि पहुँचैत अछि। मद्यपान केवल पीबाक क्रिया नहि, समय, मित्रता, खर्च आ दायित्वसँ पलायनक व्यवस्था बनैत अछि।[151]

---

150 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८५–८६। पत्नी धानक अभाव, मारि-पीट, आजीविका, बच्चाक पढ़ाइ, पशुपालन, रोग आ गृहस्थीक ऋणात्मक अनुभव कहैत अछि।

151 साफी, ‘पसीखाना’, पृ. ८५। कथाक भीतर स्त्रीक संवादमे “पसीखाना” शब्द मद्यपानक ठामक सन्दर्भमे आबैत अछि; कथा स्वयं ओहि ठामक पूरा दृश्य प्रस्तुत नहि करैत

एहि ठाम ‘ओगरबाह’सँ भिन्नता स्पष्ट अछि। पहिल कथाक शीर्षक श्रमक पदनाम, दोसर कथाक शीर्षक उपभोगक सामाजिक स्थल। पहिल कथा खेतक भौतिक स्थितिसँ सामाजिक सोच बनबैत अछि; दोसर कथामे अनुपस्थित मदिरालयक प्रभाव घरक भीतर देखाओल जाइत अछि। दुनू शीर्षक समाजक केन्द्रक बदला परिधिक स्थल अथवा कामकेँ साहित्यिक पहचान दैत अछि।

अहाँ कतए छी, ई प्रश्न कथामे केवल भौगोलिक नहि। श्रमिक खेतक रखवाली करितो ओकर अन्न पर स्वामित्व नहि; परिवारक पुरुष घरमे रहितो घरक जीवन-संरक्षणमे अनुपस्थित। शीर्षकसभक एहन उलटा अर्थ साफीक लघुकथात्मक चयनकेँ विशिष्ट बनबैत अछि।

२३. भाषा, सम्बोधन आ सामाजिक दूरी

दूनू कथामे गामक लोकभाषा केवल सजावट नहि। ‘रौ’, ‘यै’, ‘हौ’, ‘बौआ’, ‘दोस’ सन सम्बोधन निकटता, उमेर, सम्बन्ध आ अधिकारक अलग-अलग स्तर बनबैत अछि। ‘ओगरबाह’क वृद्धक शब्दावली खेतीक श्रमक स्मृतिसँ भरल अछि, जखन ‘पसीखाना’मे बच्चाक छोट उत्तर, भुखनाक आदेश आ स्त्रीक लम्बा प्रतिवाद एकहि भाषिक संसारक विषम आवाज छथि।

‘ओगरबाह’मे भाषिक प्रवाह बहुत बेर एकालापी बनैत अछि। वाचक पाठक अथवा कल्पित श्रोताकेँ जगत्क बदलाब बतबैत रहैत अछि। ‘पसीखाना’मे आरम्भिक संवाद सुनते दृश्य चलैत अछि; पत्नी बजिते कथोपकथन बढ़ि एकालाप बनैत अछि। ई कथन-विकास दूनूक रचनात्मक स्वभाव अलग करैत अछि। लोकभाषाक प्राणवानता मात्र शब्दक चटकपनमे नहि, ओकर सामाजिक प्रयोजनमे अछि।

अछि।

प्रमाणित पाठसँ उद्धरण करैत काल बोलीक ‘नै’, ‘अछि’, ‘छै’ आदि रूपकेँ एकरूप कथित शुद्ध रूपमे बदलि देब आलोचनात्मक दृष्टिसँ अनुचित होयत; एहि भिन्नतामे पात्रक आवाज रहैत अछि। एतए विश्लेषणक गद्य अपन मानकता राखैत अछि, मुदा रचनाक देहक असमान लय पर सम्मानक दृष्टि रखैत अछि।

२४. भूखक दू रूप : अभाव आ उपभोगक संघर्ष

दूनू कथाक भीतरी सूत्र भूख अछि। ‘ओगरबाह’मे बूढ़ श्रमिक अन्नक रक्षा करितो अपन मनलायक भात नहि पबैत। ‘पसीखाना’मे पिता पसिन्नक भोजन माँगैत अछि, जखन बच्चा बासि भोजन खाइत अछि आ स्त्री अन्न जुटेबा लेल खेतमे काज करैत अछि। पहिलमे भूखक प्रश्न स्वामित्व आ प्रतिफलसँ जुड़ल, दोसरमे घरक वस्तु-संसाधनक वितरण आ दायित्वसँ।[152]

पहिल कथाक भूख आवर्ती अछि; आरम्भक प्रश्न अन्त धरि असमाधित रहैत अछि। दोसरमे भूखक तात्कालिक उत्तर धान बेचब अछि, मुदा ई समाधान परिवारक अन्नक सुरक्षा घटबैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे दुनू भूख समान नैतिक दर्जाक अछि; श्रमिकक अभाव आ व्यक्ति द्वारा परिवारक संसाधनक एकपक्षीय उपभोग बीच भेद आवश्यक अछि।

दूनू कथामे ‘भात’ असाधारण प्रतीक नहि बनाओल गेल अछि—ओ गृहस्थ जीवनक साधारण अन्न अछि। ठीक ताहि कारण ओकर अनुपस्थिति अथवा एकपक्षीय माँग कठोर अर्थ उत्पन्न करैत अछि। भातक थारीक आसपास श्रमक मूल्य, पीढ़ीक असुरक्षा आ घरक सत्ता-व्यवस्था स्पष्ट देखाइत अछि।

---

152 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ८२–८३; ‘पसीखाना’, पृ. ८४–८६। पहिलमे भोजनक अभाव; दोसरमे भोजन-सामग्रीक पारिवारिक वितरण आ मद्यपानक खर्चक विरोध।

२५. श्रमक सामाजिक प्रतिष्ठा : खेतक रखवाला आ कमाइबाली पत्नी

‘ओगरबाह’क वृद्ध वर्षभर खेतक रक्षा करैत अछि; ओकरा खाद्य-सुरक्षाक विमर्शमे सामान्यतः गणना नहि कएल जाइत। ‘पसीखाना’क पत्नी धान काटैत छथि, पशु पोसैत छथि, घरेलू काज करैत छथि, मुदा घरक पुरुष अपन श्रमहीन अधिकार नहि छोड़ैत। एक कथा श्रमक प्रतिफल पर प्रश्न उठबैत अछि, दोसर श्रमक लैङ्गिक वितरण आ अधिकारक असमानता पर।

दूनू कथाकेँ जोड़ि देखलापर श्रमक परिभाषा विस्तृत होइत अछि। केवल खेत जोतब अथवा नगद कमेब अपूर्ण मापदण्ड अछि। खेतक निगरानी, पशुपालन, बच्चाक देखभाल, अन्नक भण्डारण, घरक भोजन बनायब—ई सभ सामाजिक जीवनक पुनरुत्पादन करैत अछि। एहि काजसभक अदृश्यता साहित्यिक नैतिकताक प्रश्न बनि जाइत अछि।

भारत सरकारक एक परवर्ती समय-उपयोग सर्वेक्षण स्त्री द्वारा बिना पारिश्रमिकक घरेलू श्रमक व्यापक राष्ट्रीय उपस्थिति देखबैत अछि। ई तथ्य साफीक कथा प्रकाशित भेल समयक गामविशेष पर प्रत्यक्ष प्रमाण नहि; मुदा आलोचककेँ ई स्मरण करबैत अछि जे घरेलू श्रमक ऐतिहासिक महत्त्वकेँ केवल भावनात्मक श्रेणीमे नहि समेटल जा सकैत। कथाक स्त्रीक अनुभव साहित्यिक रूपमे ओकर विशिष्टता रखैत अछि।[153][154]

---

153 भारत सरकार, सांख्यिकी आ कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय, National Statistics Office, Time Use Survey 2024, Fact Sheet (२५ फरवरी २०२५), https://www.mospi.gov.in/sites/default/files/publication_reports/TUS_Factsheet_25022025.pdf । ई परवर्ती राष्ट्रीय आँकड़ा विश्लेषणक व्यापक सन्दर्भ थिक; २०१४ मे प्रकाशित विशेष कथाक गाम अथवा परिवारक प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि।

154 भारत सरकार, MoSPI, Time Use Survey 2024, Fact Sheet, उपर्युक्त स्रोत। स्त्रीसभक बिना मजदूरीक घरेलू श्रमपर व्यापक राष्ट्रीय सन्दर्भ प्रदान करैत अछि; मिथिलाक एक गामक कथा-सम्बन्धी आँकड़ा नहि।

२६. जाति, वर्ग आ दलित सौन्दर्यदृष्टिक सावधानी

साफीक आत्मकथामे धोबी समुदायसँ अपन सम्बन्धक स्पष्ट वक्तव्य अछि। ओ अनुभव जाति-आधारित पुस्तैनी श्रम आ शिक्षाक कठिनाइबारे पाठककेँ संवेदनशील बनबैत अछि। परन्तु ‘ओगरबाह’क नथुनी मरड़ वा ‘पसीखाना’क भुखना-पत्नी-बच्चाक जाति कथामे निश्चित कएल नहि गेल अछि। एहि पात्रसभक जाति अनुमानित कऽ दलित समाजक विशिष्ट घटना घोषित करब पाठक अधिकारक अतिक्रमण होयत।[155][156]

दलित सौन्दर्यशास्त्रक निकष पर ई कथासभ ताहि लेल पठनीय अछि जे ओ श्रमक अनुभव, भूखक अन्तर, बोलीक असमान सम्मान आ घरेलू सत्ता-संरचनाकेँ कथाक केन्द्र दैत अछि। एतए दलित दृष्टि सामाजिक अधीनता बुझबाक प्रश्नक रूपमे उपयोगी अछि, प्रत्येक व्यक्ति पर एक जाति-लेबल लगा देबाक रूपमे नहि। आंबेडकरक जाति-समीक्षा एहि व्यापक संरचनात्मक प्रश्नक वैचारिक पृष्ठभूमि दैत अछि, मुदा कथा-विश्लेषणमे जातीय पदक्रमक प्रत्येक ठोस दावा लेल मूल पाठक समर्थन आवश्यक रहत।[157]

अर्जुन डांगळेक सम्पादित दलित साहित्यक संकलन ई मोन पाड़ैत अछि जे प्रतिरोधक साहित्य एकरेखीय विधा नहि—कथा, कविता, स्मृति आ आलोचना अनेक रूपमे आबि

---

155 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा पृ. ७–१३; ‘ओगरबाह’, पृ. ७८–८३; ‘पसीखाना’, पृ. ८३–८६। आत्मकथाक लेखक-स्वर आ कल्पित कथापात्रक सामाजिक स्थिति समान मानबाक पर्याप्त पाठ-साक्ष्य नहि।

156 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ७९–८२। नथुनी मरड़ तथा दोसर पात्रक जातिक निश्चित नाम कथामे स्पष्ट नहि; केवल लेखकक आत्मकथामे अपन धोबी-दलित परिचय उपलब्ध अछि।

157 भीमराव आंबेडकर, Annihilation of Caste (१९३६), जाति-आधारित सामाजिक व्यवस्था सम्बन्धी आधारग्रन्थ; पाठ-अभिलेख: https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html । एकर उपयोग विमर्शगत पृष्ठभूमि मात्र लेल कएल गेल अछि।

सकैत अछि। साफी सेहो एकहि पोथीमे अनेक विधा अपनबैत छथि। एहि विस्तारक अर्थ सामग्रीक प्रचुरता नहि मात्र, अपन अनुभव-क्षेत्रक बहुविध साहित्यिक दावेदारी सेहो थिक।[158]

२७. स्त्रीक प्रतिनिधित्व : वाणी आ मौन दूनूक परीक्षा

‘ओगरबाह’मे पुतोहु वृद्धक भोजन-आदतपर खौंझाइत छथि; ओकर अपन विचार विस्तारसँ सुनाओल नहि जाइत। ‘पसीखाना’मे पत्नी समूची कथामे सबसँ लम्बा वक्तव्य रखैत अछि। एही तुलनामे साहित्यिक महत्त्व देखाइत अछि—एकठाम स्त्री पुरुषक स्मृतिमे उपस्थित प्रतिक्रिया, दोसरठाम पुरुषक काजक आर्थिक परिणाम बतबैत सार्वजनिक वाचक।

‘पसीखाना’क पत्नी घरेलू उत्पीड़नक भाषा स्वयं चुनैत छथि: धान, बकरी, तेल, कपड़ा, गहना, बच्चाक पढ़ाइ, रोग आ पीबाक खर्च। ओकर शिकायतमे घरक वास्तविक जीवनक सूची अछि। तथापि ओ अपन अलग भविष्यक योजना केहन होयत, एहि प्रश्नक जवाब कविता-सदृश खुलल रहि जाइत अछि। मायके जेबाक घोषणा अनेक बाधासँ घेरल अछि। पाठक देखैत अछि जे बोलबाक अधिकार स्वतः सुरक्षित स्वतन्त्रता नहि बनि जाइत।

रेगेक स्त्रीक जीवनक कथन सम्बन्धी विचार एहि सन्दर्भमे उपयोगी अछि, मुदा कहानीक पत्नीकेँ स्वयं प्रकाशित आत्मकथाकार मानब समान रूपसँ अनुचित होयत। ई रचित पात्र अछि, जकर आवाज पुरुष लेखकक शिल्प द्वारा सम्भव भेल। एहि द्वैधक आलोचना लेखकीय प्रयासक अवमूल्यन नहि, एकरा अधिक स्पष्ट रूपसँ बुझब थिक।[159]

---

158 अर्जुन डांगळे (सम्पा.), Poisoned Bread: Translations from Modern Marathi Dalit Literature (Orient Longman, १९९२), पुस्तकविवरण: https://books.google.co.in/books?id=FCIwAAAAMAAJ । दलित कथाकेँ अनेक शिल्पमे पढ़बाक तुलनात्मक पृष्ठभूमि।

159 रेगे, Writing Caste/Writing Gender (२००६); लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature (२००४)। ई ग्रन्थ आलोचनात्मक श्रेणीसभ उपलब्ध करबैत अछि; साफीक कथा पर लेखकसभक प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया नहि अछि।

२८. अन्तर्वर्ती सम्बन्ध : कविता, आत्मकथा आ लघुकथा

साफीक संकलनक कविता ‘रौदी भऽ गेल’मे खेतक सूखल दशा आ अन्नक संकट अबैत अछि; ‘गामक इनार’मे सामूहिक जलस्रोतक बदलैत सामाजिक अर्थ; ‘मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै’मे स्त्री-श्रमक ऊपर घरक हिंसा; ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’मे वृद्ध देहक असहायता। एहि प्रसंगसभक संग ‘ओगरबाह’ आ ‘पसीखाना’ जोड़लापर पोथीक भीतर कतेको परस्पर प्रतिध्वनि सुनाइत अछि।[160]

एहि प्रतिध्वनिक मतलब ई नहि जे सभ रचना एकटा योजनाबद्ध कथानकक अध्याय छथि। कविता अपन लय आ चित्रक कारण स्वतंत्र अर्थ रखैत अछि। मुदा पाठक जखन श्रम, भूख, पानि आ घरेलू सत्ता एकसाथ देखैत अछि, तखन एक लेखकक चिन्ताक निरन्तरता स्पष्ट होइत अछि। ‘ओगरबाह’मे कृषि-संसारक काल, ‘पसीखाना’मे घरक दिन—ई दुनू समय पोथीक व्यापक मौसमी आ सामाजिक संवेदनाकेँ समृद्ध करैत अछि।

आत्मकथा खण्डक प्रवास आ शिक्षा-संघर्षक सन्दर्भ सेहो एतए उपयोगी, किन्तु सावधानीक संग। आत्मकथा रचनाकारक सत्यकथनक दावा करैत अछि; लघुकथा पात्रक रचित जगत्। समान सामाजिक प्रश्न देखलापर एकर साहित्यिक सम्बन्ध स्पष्ट करब उचित, मुदा घटना-प्रतिघटनाकेँ रचनाकारक जीवनीसँ जबर्दस्ती जोड़ब नहि।

२९. पूर्ववर्ती आलोचनाक पाठ-समीक्षा

विदेहमे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक विस्तृत आलोचना ‘ओगरबाह’क भातक अभाव, कृषिक बदलाब आ एक खेतसँ दोसर खेतमे जीव भगाओलाक व्यञ्जनाक महत्त्व पहचानैत अछि। एहि पाठकीय प्रस्तावसँ सहमति रखल जा सकैत अछि जे श्रमिकक भूख आ कृषि-अर्थव्यवस्थाक सम्बन्ध कहानीक मूल संवेदनात्मक केन्द्र अछि। तथापि जतए कथा-शिल्पक

160 साफी, कविता ‘रौदी भऽ गेल’, पृ. १७–१८; ‘गामक इनार’, पृ. ६०–६१; ‘मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै’, पृ. ३४–३५; ‘मरैतखीन रसगुल्ला खाएब’, पृ. ४९–५१; लघुकथा दूटा, पृ. ७८–८६।

भीतर निबन्धात्मक सामान्यीकरणक विस्तार अबैत अछि, ओहि ठाम आलोचनाकेँ कलात्मक असन्तुलन सेहो देखबाक चाही।[161]

ओही पूर्ववर्ती विवेचनमे ‘पसीखाना’ सम्बन्धी विवरणक संग पुलिस-भ्रष्टाचारक उल्लेख भेटैत अछि। मूल ‘पसीखाना’मे ट्रैक्टरबला, बच्चा, भुखना, संगी, पत्नी आ पड़ोसिनक प्रसंग तँ स्पष्ट अछि, मुदा पुलिसक भ्रष्टाचारक कोनो पृथक घटना वर्णित नहि अछि। एहि कारण उक्त विशिष्ट निष्कर्षकेँ एहि कथाक पाठ-साक्ष्य मानल नहि जा सकैत। मूल रचनाकेँ आधार बना कऽ आलोचनात्मक निर्णय करब एहि प्रकारक असङ्गतिक सम्भव सुधार थिक।[162]

एहि संशोधनक उद्देश्य पूर्ववर्ती विदेह-आलोचनाक व्यापक साहित्येतिहासिक योगदानक अवमानना नहि। मूल्यांकनक विश्वसनीयता तखने बढ़ैत अछि जखन प्रकाशित टिप्पणी आ मूल कथा एक-दोसराक कसौटीपर पढ़ल जाए। एकटा ऐतिहासिक महत्त्वक ग्रन्थक कला आ वैचारिक संरचनाक परीक्षणमे सम्मान आ संशय दुनूक समान स्थान होयबाक चाही।

३०. कथा आ निबन्धक सीमा : ‘ओगरबाह’क विधागत प्रश्न

‘ओगरबाह’क गद्यक विस्तृत हिस्सा कृषिजीवनक बदलाब विषयक प्रत्यक्ष कथकीय टिप्पणी अछि। आरम्भक वृद्ध पात्र कथासूत्र दैत अछि, मुदा बीचमे वाचक तकनीकी, खेती,

---

161 गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi,” A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, खण्ड ४.२, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm (अवलोकन: १८ नवम्बर २०२६)।

162 गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi,” Part 65, खण्ड ४.२। प्रकाशित विवेचनमे ‘पसीखाना’क कथ्यक संग पुलिस-भ्रष्टाचारक उल्लेख अछि; मूल रचनाक पृ. ८३–८६ मे ओकर कथात्मक प्रसंग नहि देखल जाइत अछि। पाठ-परीक्षणमे मूल कथाकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि।

शिक्षा, महँगाइ आ घरेलू औजारपर निरन्तर विचार करैत अछि। घटना-विकासक तुलनामे सामाजिक निबन्धक भार बढ़ैत अछि। प्रश्न अछि—की एकरा लघुकथा कहब साहित्यिक रूपसँ उचित अछि? प्रकाशित खण्ड स्वयं एकरा लघुकथा मानैत अछि; ताहि विधागत पहिचानकेँ स्वीकार करैत ओकर आन्तरिक असमानता चर्चा योग्य अछि।

कथा केवल क्षणिक चमत्कार नहि; लम्बा सामाजिक विवेचन सेहो कथा-वस्तुमे सम्भव अछि। तथापि कथाक अर्थ दृश्य, पात्रक निर्णय आ समयक बदलाबसँ उद्भूत होयब चाही। ‘ओगरबाह’मे समृद्ध दृश्य—वृद्धक भोजन, खोपड़ी, खेतक पक्षी—अछि, मुदा ओहि दृश्यसभक बीच बहुत रास वैचारिक विवरणक दूरी अछि। ई दूरी पाठकक भाव-संयोजनकेँ बारम्बार तोड़ैत अछि।

तकरा बादो समापनक आवर्तन ओकरा शुद्ध निबन्ध होयबासँ बचा लैत अछि। अन्नक सामाजिक इतिहासक विस्तृत बहस अन्ततः बूढ़ देहक भातक चाहमे लौटि अबैत अछि। कथा आ निबन्धक ई सन्धि रचनाक प्रयोगधर्मिता थिक; कलात्मक सफलता पूर्ण नहि, मुदा प्रश्न अधिक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

३१. ‘पसीखाना’क नैतिकता : दोषारोपणसँ आगाँ

‘पसीखाना’ सतहपर मद्यपानक विरोधमे लिखल सामाजिक कथा बुझाइत अछि। मुदा ओकर भीतर घरक अन्न, श्रमिकक बेरोजगारी, स्त्रीक वेतनयुक्त आ अवैतनिक श्रम, बच्चाक शिक्षा, घरेलू हिंसा आ सामुदायिक सङ्गतिक प्रश्न एकत्र अबैत अछि। ई विषयसभकेँ केवल ‘शराब खराब अछि’ कहि समाप्त कएल जाए तँ कथा बँचल रहबाक गम्भीर सामाजिक आधार अदृश्य भऽ जाएत।

भुखनाक व्यवहारक आलोचना जरूरी अछि, कारण ओ परिवारक संसाधनकेँ अपन इच्छा लेल खर्च करैत अछि आ पत्नीपर हिंसा करैत अछि। मुदा दोषारोपणक अन्तिम लक्ष्य एक व्यक्ति मात्र बनला सँ कृषि-समाजक आयक अनिश्चितता आ पारिवारिक सत्ता-वितरणक

बड़ प्रश्न बचि जाइत अछि। कथामे ओहि प्रश्नसभक पर्याप्त व्याख्या नहि भेटैत अछि, तथापि दृश्यसभ ओकरा उठबबाक आधार दैत अछि।

साहित्यिक मूल्यांकनक दृष्टिसँ कथाक सर्वाधिक विश्वसनीय पक्ष ई अछि जे एक व्यक्ति द्वारा कएल निर्णयक प्रभाव छोट बच्चा आ काम करनिहार पत्नीपर धरि देखल जा सकैत अछि। ताहि हिसाबसँ कथा नैतिक उदाहरणसँ सामाजिक परिणामक यथार्थपूर्ण दस्तावेज दिस बढ़ैत अछि। ओकर सीमित पात्र-संसार व्यापक समाज पर प्रश्न उठबैत अछि, जेकरा ठोस रूपैँ भरबाक उत्तरदायित्व पाठक आ सामाजिक आलोचनाक रहैत अछि।

३२. दू कथाक कालबोध : मौसमक चक्र आ एक दिनक धक्का

‘ओगरबाह’क समय खेतक ऋतुक चक्र अछि—रोपनी, रखवाली, धानक कटनी, गेहूँ आ अन्य फसल, समय-समयक रौदी, बदलैत औजार आ वृद्ध देहक आयु। एकटा लघुकथाक भीतर कतेको सालक समाजक स्मृति समाहित अछि। एकर विपरीत ‘पसीखाना’क बाह्य समय लगभग एक दिनक भीतरक घटनासँ बनैत अछि; मुदा पत्नी अपन बयानमे बहुत दिनक विपत्ति जोड़ि दैत अछि। पहिल कथामे इतिहास वर्तमानकेँ घेरैत अछि, दोसरमे वर्तमानक झटकेसँ अतीतक अनेक चोट उघारि देल जाइत अछि।

दूनूकेँ जोड़बाक स्थिति एतए सेहो अछि। ‘ओगरबाह’क श्रमिक समयभर मेहनति करैत अछि मुदा भोजनक अभाव नहि मिटैत; ‘पसीखाना’क पुरुष एक दिनक श्रम अवसर गंवा दैत अछि आ घरक पुरान संकट फेर गम्भीर बनैत अछि। पहिलमे परिश्रमक अपर्याप्त फल, दोसरमे परिश्रमक असमान जिम्मेदारी। साहित्यक भीतर समयक ई व्यवस्था श्रमक मूल्यांकनक अलग नैतिक प्रश्न बनबैत अछि।

ई काल-विन्यास लेखकक कथाभूमि पर नियन्त्रणक सूचक अछि। ‘ओगरबाह’ अधिक विसरैल आ स्मृतिमय; ‘पसीखाना’ अधिक दृश्यात्मक आ प्रत्युत्तरपूर्ण। एकहि विधागत

नामक भीतर एहन भिन्नता मैथिली कथाक सम्भावना बढ़बैत अछि, यद्यपि दुनूक शिल्पसंतुलन समान नहि।[163]

३३. कथासभक सीमासहित उपलब्धि : एक समग्र निर्णय

'ओगरबाह'क प्रमुख उपलब्धि खेतक रक्षा करनिहार श्रमिकक जीवनकेँ अर्थनीति आ पर्यावरणक व्यापक प्रश्नसँ जोड़ब अछि। भातक लालसा, खोपड़ी, फसलक रखवाली आ दू खेतक जीव भगाओलाक दृश्य याद रहि जाइत अछि। ओकर सीमा उपदेशात्मक विस्तार, तकनीकक प्रति सामान्यीकृत अविश्वास आ पारम्परिक स्त्री-श्रमक आदर्शीकरणमे अछि। ग्राम्य जीवनक प्रेम आवश्यक गुण अछि, मुदा ग्राम्य श्रम-वितरणक आलोचना बिना ओ प्रेम एकपक्षीय भऽ सकैत अछि।

'पसीखाना'क प्रमुख उपलब्धि छोट दृश्यसँ सामाजिक आ आर्थिक संकटक अनेक सम्बन्ध खोलब अछि। बासि भात खाइत बच्चा, कामक बुलाहट, अन्न बेचब, मद्यपानक साथी आ स्त्रीक दीर्घ बयान—ई सभ प्रसंग कथाकेँ मार्मिक आ स्मरणीय बनबैत अछि। ओकर सीमा भुखनाक चरित्रक किछु एकरेखीय प्रस्तुति, पड़ोसक संवादक एकालापमे अधिक लम्बा भऽ जाएब, आ स्त्रीक समाधानक विश्वक पर्याप्त विकास नहि होयब अछि।

दूनू कथाक विषयक सामाजिक महत्त्व निर्विवाद, परन्तु साहित्यिक श्रेष्ठता विषयक गम्भीरतासँ स्वतः प्रमाणित नहि होइत। दृश्य-विन्यास, कथ्यक एकीकरण, बहुस्वरिता आ समापनक अनुनाद अलग कसौटी छथि। एहि कसौटीसँ देखलापर 'पसीखाना' अपेक्षाकृत सघन नाटकीय गद्य बनैत अछि, जखन 'ओगरबाह' विचारप्रधान ग्रामीण सामाजिक निबन्ध आ कथाक मिश्र रूपैँ विशिष्ट अछि। ई मूल्यांकन एकरेखीय अङ्क नहि, ओकर रचनात्मक भिन्नता पहिचानबाक प्रयास थिक।

163 साफी, 'ओगरबाह', पृ. ७८–८३; 'पसीखाना', पृ. ८३–८६। दुनू कथामे वाचक-स्थितिक बदलाव, अवधि, प्रसंग-विस्तार आ खुलल समस्या पर समीक्षात्मक निष्कर्ष।

३४. उपसंहार : श्रम करनिहारक अन्न, श्रम करनिहारीक आवाज

संदीप कुमार साफीक लघुकथा खण्डमे दू अलग जीवनस्थिति मिलि एकटा साझा प्रश्न बनबैत अछि—गामक जीविकाकेँ जे लोक श्रमसँ सम्भव बनबैत छथि, हुनकर भोजन, सम्मान आ निर्णयक अधिकार कोना निर्धारित होइत अछि? 'ओगरबाह'क वृद्ध खेतक अन्नक रखवाली करैत, मुदा मनलायक भात लेल तरसैत अछि। 'पसीखाना'क पत्नी खेतमे धान काटैत छथि, मुदा घरक धानक उपयोगपर अन्तिम नियन्त्रण हुनक नहि। एहि दू विपर्यासमे पोथीक सामाजिक अर्थक सभसँ घनिष्ठ सूत्र उपस्थित अछि।[164]

दूनू कथामे लोकभाषा मिथिलाक श्रम-संसारक शब्दसभकेँ साहित्यिक गरिमा दैत अछि। खेतक ऐँर, खोपड़ी, मड़ुआ रोटी, खेसारी, टीनक बाटी, बकरी, ओसारा, चूल्हि आ धानक बोरा—ई सभ वस्तु कविता-सदृश आलङ्कारिक सजावट नहि, जीवनक संघर्षक मूर्त प्रमाण बनैत अछि। कथाकार अपन समयक सामाजिक असमानता देखैत छथि; किछु ठाम ओकर विश्लेषण तीक्ष्ण, किछु ठाम स्मृतिजनित, किछु ठाम नैतिक आ सरलीकृत भऽ उठैत अछि।

मैथिली दलित साहित्यक समकालीन विमर्शमे ई रचनासभक महत्त्व लेखकक आत्मकथात्मक उपस्थिति संग संवाद करैत अछि, मुदा कथा-पात्रक कल्पित जातिक अनुमान बिना। साफीक मूल योगदान ई अछि जे ओ भोजनोपार्जनक सामान्य श्रम, घरेलू स्त्रीक खर्चक लेखा आ गामक रोजमर्राक क्रूरताकेँ साहित्यक सामग्री बनबैत छथि। एहिसँ मैथिली साहित्यक सामाजिक विषयक्षेत्र विस्तृत होइत अछि। एहि उपलब्धिक सम्मानक

164 साफी, 'ओगरबाह' आ 'पसीखाना', बैशाखमे दलानपर, पृ. ७८–८६। शिल्प, कथ्य आ समापनक तुलनात्मक पुनर्पाठक मूल आधार।

संग शिल्पगत असन्तुलन आ वैचारिक पूर्वग्रहक आलोचना सेहो करब चाही—तखने कृतिक गम्भीर पाठ पूर्ण होइत अछि।[165][166]

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

साफी, संदीप कुमार। बैशाखमे दलानपर। प्रथम संस्करण। नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। "आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी।" अन्तर्गत: संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर। नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi." A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, विदेह। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

विदेह। "सन्दीप कुमार साफी—बैशाखमे दलानपर (पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित)।" गद्य-साहित्यक प्रकाशकीय सूची। https://videha-ejournal.github.io/videha/prose.htm ।

लिंबाळे, शरणकुमार। Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations। अनु. Alok Mukherjee। हैदराबाद: Orient Longman, २००४।

रेगे, शर्मिला। Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios। नई दिल्ली: Zubaan, २००६।

डांगळे, अर्जुन (सम्पा.)। Poisoned Bread: Translations from Modern Marathi Dalit Literature। हैदराबाद: Orient Longman, १९९२।

165 विदेह, "सन्दीप कुमार साफी—बैशाखमे दलानपर," गद्य-साहित्यक सूची; ठाकुर, "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi," Part 65। दलित आत्मकथाक प्रकाशकीय इतिहास तथा लघुकथा-विवेचनक सन्दर्भ।

166 साफी, बैशाखमे दलानपर, प्रकाशकीय विवरण, पृ. ३; लघुकथा खण्डक शीर्षक, पृ. ७७; कथासभ, पृ. ७८–८६।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। Annihilation of Caste। १९३६। कोलम्बिया विश्वविद्यालयक अध्ययन-संसाधन: https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html ।

भारत सरकार, सांख्यिकी आ कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय; National Statistics Office। Time Use Survey, 2024: Fact Sheet। २५ फरवरी २०२५। https://www.mospi.gov.in/sites/default/files/publication_reports/TUS_Factsheet_25022025.pdf ।

करुणामूलक राजधर्म आ अधिकारक प्रश्न

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क विचार-बिन्दु खण्डक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

‘राजा अओर परजा’ : ग्राम्य सत्ता, श्रम, स्मृति, प्रवास आ सामाजिक न्यायक अन्तर्विरोध

सारांश

संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क पाँचम ‘विचार-बिन्दु’ खण्डमे ‘राजा अओर परजा’ शीर्षक एकटा विस्तृत विचार-रचना अछि। एहि गद्यक केन्द्रमे ग्राम्य नेतृत्वक पुरान आदर्श, अनाजमे भेटनिहार श्रम-प्रतिफल, मालिक-आश्रितक सम्बन्धक टूटन, गामसँ शहर दिस रोजगारक खोज तथा जनकक लोक-स्मृतिमे प्रतिष्ठित कल्याणकारी राजधर्म उपस्थित अछि। एहि सभ प्रसंगक मध्यवर्ती प्रश्न ई अछि जे सामाजिक सम्बन्धक न्यायपूर्ण आधार व्यक्तिक दया आ प्रतिष्ठा हेबाक चाही कि श्रमिकक अधिकार आ सम्मान। रचना एक दिस पुरान व्यवस्थामे परजाक संरक्षण देखैत अछि, तँ दोसर दिस ओही व्यवस्थामे अल्प मजदूरी, सम्पत्तिक असमानता आ परतन्त्रताकेँ सेहो दर्ज करैत अछि। एहि अन्तरविरोधकेँ विचार-रचनाक केन्द्रीय साहित्यिक अर्थक रूपमे पढ़ल गेल अछि। आलोचना लोक-स्मृति आ इतिहासक भेद, धार्मिक आदर्शक प्रतीकात्मक प्रयोग, मौखिक गद्यक पुनरावृत्ति, वर्ग-सम्बन्ध आ जातिगत मौन, कृषि-अर्थनीति, प्रवास, खाद्य-असमानता तथा वक्ताक नैतिक आरोपक परीक्षण करैत अछि। भीमराव आंबेडकर, शरणकुमार लिंबाळे, शर्मिला रेगे, गेल ऑम्वेट आ जेम्स सी. स्कॉटक प्रासंगिक विचारसँ संवाद राखल गेल अछि, मुदा बाहरी सिद्धान्तकेँ मूल रचनाक स्थानापन्न नहि बनाओल गेल अछि। एहि अध्ययनक निष्कर्ष थिक जे ‘राजा अओर परजा’ सामाजिक न्याय लेल आत्मीय चिन्ता व्यक्त करैत अछि, तथापि परजाक अधिकारक स्थानपर आदर्श शासकक उदारताकेँ राखबाक प्रवृत्ति ओकर विचारात्मक सीमा बनैत अछि; एही अपूर्ण प्रश्नसँ एकर साहित्यिक महत्त्व सेहो उपजैत अछि।

बीजशब्द

संदीप कुमार साफी; बैशाखमे दलानपर; राजा अओर परजा; विचार-बिन्दु; मैथिली दलित आत्मकथा; ग्राम्य सत्ता; श्रम; परजा; लोक-स्मृति; प्रवास; अन्नक न्याय; राजधर्म; जनक; दलित सौन्दर्यबोध; सामाजिक आलोचना।

१. प्रस्तावना : छोट खण्डक विस्तृत प्रश्न

'बैशाखमे दलानपर'क पाँचम खण्ड पढ़ैत काल 'विचार-बिन्दु' शीर्षक पाठकसँ एकटा संक्षिप्त सूत्र-संग्रहक अपेक्षा जगा सकैत अछि। उपलब्ध रचना ताहिसँ भिन्न अछि। 'राजा अओर परजा' एकटा निरन्तर चलैत, प्रसंग बदलैत, अतीत आ वर्तमानक तुलना करैत विचारात्मक गद्य थिक। ई शीर्षक जेना दू व्यक्तिक कथा कहबाक संकेत दैत अछि, मुदा रचना वास्तवमे सामाजिक व्यवस्था, पारस्परिक विश्वास, श्रमक मोल आ स्थानीय प्रभुत्वक बदलैत आधार पर केन्द्रित अछि। एहि कारणेँ एकरा केवल नीतिकथा, निबन्ध वा संस्मरण कहला सँ ओकर पूरा रूप सामने नहि अबैत। एतए वैचारिक वक्तव्यक भीतर गामक लोक-स्मृति, परम्परागत पदावली आ नैतिक कथा-संरचनाक संयोग उपस्थित अछि।[167][168]

लेखक आत्मकथा खण्डमे अपन जन्म, धोबी-दलित परिचय, कपड़ा धोनिहार पारिवारिक श्रम, बाधित शिक्षा आ रोजगारीक प्रवासक अनुभव लिखने छथि। पाँचम खण्डक विचारक स्वरकेँ एहि जीवनानुभवसँ सर्वथा अलग करब अनुचित होयत, मुदा ईहो गलत होयत जे प्रत्येक सामान्य कथनकेँ लेखकक आत्मकथाक प्रत्यक्ष घटना ठहराइ देल जाए। 'राजा अओर परजा' कोनो निश्चित गामक शासकीय रजिस्टर नहि, समाजक सम्बन्ध पर लेखक-

---

167 संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर (नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४), अनुक्रम तथा 'विचार-बिन्दु खण्ड', पृ. ५, ८७–९१। एहि खण्डमे 'राजा अओर परजा' नामक एकटा रचना अछि।

168 साफी, 'राजा अओर परजा', बैशाखमे दलानपर, पृ. ८८–९१। खण्ड-शीर्षक विचार-बिन्दु अछि, मुदा उपलब्ध रचना सूत्रात्मक उक्ति-संग्रह नहि; निरन्तर विचार-गद्य अछि।

वाचकक साहित्यिक चिन्तन अछि। एकर विश्वसनीयता, उपलब्धि आ सीमा ओकर अपन भाषिक गठन आ तर्क-व्यवस्थामे खोजल जाएबाक चाही।[169]

मैथिली दलित आत्मकथाक इतिहासमे एहि पोथीक महत्त्व पर विदेहक सम्पादकीय उद्घोषणा आ प्रकाशकीय परिचय उपलब्ध अछि। ई पृष्ठभूमि एहि विचार-रचनाकेँ साहित्येतिहासक गम्भीर विषय बनबैत अछि। मुदा 'पहिल' कहबाक सम्पादकीय दावाक अपन काल-सापेक्ष अभिलेखी आधार अछि; विस्तृत साहित्येतिहासक पुनः सर्वेक्षण केने बिना एकरा सर्वकालिक अपवादहीन निष्कर्षक रूपमे नहि दोहराओल जा सकैत अछि। आलोचनाक उद्देश्य रचनाक सामर्थ्यकेँ ओकर वास्तविक शब्द, विषय आ शिल्पक भीतर देखब अछि।[170][171]

---

169 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्डक आरम्भमे गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी, पृ. ६; लेखकक आत्मकथात्मक जाति तथा श्रम-परिचय, पृ. ७–१३।

170 विदेह, "एडिटर्स चोइस सीरीज-७", समकालीन प्रकाशकीय परिचय; जून २०२२ मे उपलब्ध सार्वजनिक अभिलेख: https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A । एतए 'पहिल आ एकमात्र' दावाक ऐतिहासिक प्रसंग उपलब्ध अछि; परवर्ती कालक सम्पूर्ण साहित्येतिहासक सर्वेक्षण एकर विकल्प नहि।

171 गजेन्द्र ठाकुर, "A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi", A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, विदेह: https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm । ग्रन्थक पाँच-विधात्मक संरचना आ आत्मकथाक साहित्येतिहासिक महत्त्वक सार्वजनिक विवेचन।

२. विधा-निर्णय : विचार-बिन्दु कि सामाजिक निबन्ध?

‘विचार-बिन्दु’ शब्द बिन्दुवार सूक्ति, छोट चिंतन अथवा स्वतन्त्र विचारक टुकड़ीक संकेत दैत अछि। किन्तु एहि खण्डक गद्य आरम्भसँ अन्त धरि एकहि व्यापक विषय—समाजमे शासक आ शासितक परस्पर दायित्व—सँ जुड़ल रहैत अछि। पहिने लोकक भरोसा, तकरा बाद गरीबक विवाह, हर जोतनिहार मजदूरक अनाज, लालची मालिक, शहर दिस पलायन, जनकक अकाल-कथा आ अन्तमे अन्नक सामाजिक पहुँचक प्रसंग अबैत अछि। ई क्रम सूत्रक स्वतन्त्रता नहि, एकटा चलैत बहसक लक्षण अछि। रचना विषयान्तर अवश्य करैत अछि; तथापि प्रत्येक मोड़ केन्द्रीय प्रश्नक चारू कात घुमैत अछि।[172]

एकर रूपकेँ लोक-निबन्ध कहब उपयोगी भऽ सकैत अछि—कारण ई विद्वत्परिभाषाक भाषामे नहि, लोकक स्मृति-संवादक भंगिमामे सामाजिक न्यायक पक्ष रखैत अछि। ‘पिहने’ आ ‘अखन’क आवर्तन एकटा तुलनात्मक संरचना बनबैत अछि। जखन कथनकार पूर्वकालमे संरक्षणक दावा करैत अछि, ओ अगिला अनुच्छेदमे ओकर आर्थिक व्यवहार स्मरण करैत अछि। एहि विचार-शृंखलामे पात्रक संवादक अपेक्षा स्वयं वक्ताक मूल्यांकन अधिक सुनाइत अछि। पाठककेँ लेखकक निष्कर्ष स्वीकार करबाक बदला ओकर आधार पर प्रश्न करबाक अवसर भेटैत अछि।

ई विधागत मिश्रण साहित्यिक कमजोरी मात्र नहि। वंचित श्रमसमाजक बहुत-रास वक्तव्य जीवन-कथन, सामाजिक टिप्पणी आ नैतिक कहबीक बीच चलैत अछि। लिखित गद्यक कठोर नामकरण एहन भाषिक गतिशीलताकेँ छोट कऽ सकैत अछि। मुदा रूपक एहि उदार समझक संग ई प्रश्न सेहो बनल रहैत अछि जे केन्द्रित तर्क, प्रमाण आ प्रतितर्कक व्यवस्था कतेक सघन अछि।

172 साफी, ‘राजा अओर परजा’, बैशाखमे दलानपर, पृ. ८८–९१। खण्ड-शीर्षक विचार-बिन्दु अछि, मुदा उपलब्ध रचना सूत्रात्मक उक्ति-संग्रह नहि; निरन्तर विचार-गद्य अछि।

३. 'राजा'क अर्थ : पद, व्यक्ति कि स्थानीय सत्ता?

रचनामे आरम्भिक 'राजा' गामक ओहि प्रभावशाली पुरुषक रूपमे आएल अछि जकरा लग लोक आपसी विवाद लऽ जाइत छथि आ जकरा सँ सहायताक आशा करैत छथि। एहि प्रसंगमे 'राजा' केँ आधुनिक राष्ट्रक संवैधानिक राजा अथवा निर्वाचित प्रतिनिधिक तकनीकी पद नहि मानल जा सकैत। शब्दक सामाजिक अर्थ स्थानीय प्रभुत्व, धन-संपन्नता, मान आ वैयक्तिक निर्णयक केन्द्रसँ निर्मित अछि। कथा-दृष्टिक बदलाब एतए महत्त्वपूर्ण अछि : समाज 'राजा' लग न्याय खोजनिहार जनसमुदाय अछि, मुदा न्याय देबाक सामर्थ्य संस्थाक बदला व्यक्तिक हाथमे राखल गेल अछि।[173][174]

एकहि शब्दक अर्थ रचनाक अन्तमे राजा जनक दिस बढ़ैत अछि। जनक मिथिलाक आदर्श राजधर्मक सांस्कृतिक प्रतीक छथि। एहि दू अर्थक बीच रचनाकार स्पष्ट भेदरेखा नहि खींचैत छथि। आरम्भक ग्रामीण सम्पन्न पुरुष धीरे-धीरे मिथकीय कल्याणकारी शासकक नैतिक प्रतिमासँ तुलना पबैत अछि। एहि संधिस्थलपर लेखनक लोक-शक्ति आ वैचारिक जोखिम दुनू उपस्थित अछि। लोकमति आदर्श व्यक्तित्वक स्मरणसँ सामाजिक दायित्वकेँ तीव्र बनबैत अछि, मुदा वास्तविक ऐतिहासिक असमानता एकटा उज्ज्वल आदर्शक छायामे अदृश्य होबाक सम्भावना राखैत अछि।

'परजा' सेहो आधुनिक अधिकार-संपन्न नागरिकक पर्याय नहि। ई शब्द आश्रय, आज्ञा, मर्यादा, भय, सेवा आ सहयोगक अलग-अलग अर्थ एक संग लिएने चलैत अछि। रचनाक

---

173 साफी, 'राजा अओर परजा', पृ. ८८। आरम्भमे ग्रामक 'राजा' लग सामाजिक विवादक निपटारा, सम्मान आ विपत्ति-समय सहायताक विवरण।

174 साफी, ओही रचना, पृ. ८९–९०। 'राजा' पदक आशय स्थानीय प्रभुत्वशाली व्यक्ति आ आदर्श जनकक बीच बदलैत अछि; ओकरा निश्चित शासकीय पदक ऐतिहासिक प्रमाण नहि बुझबाक अछि।

मूल प्रश्न नाम-परिवर्तन मात्र नहि; ओ जानबाक अछि जे परजा सँ नागरिक होबाक सामाजिक यात्रा साहित्यिक कल्पनामे कतए धरि पहुँचैत अछि।

४. न्याय, विश्वास आ सार्वजनिक विवाद

पहिल दृश्य सामाजिक संघर्षक निपटारा लेल लोकक राजाक लग जाएबाक अछि। ई छोट प्रसंग एकटा अनौपचारिक ग्राम्य न्याय-व्यवस्थाक स्मृति खोलैत अछि। न्यायालय, लिखित कानून, प्रतिनिधित्व वा अपीलक औपचारिक प्रक्रिया एहि वर्णनमे नहि अछि। शासनक प्रभाव विश्वास आ व्यक्तिक प्रतिष्ठा सँ मानल गेल अछि। कथनकारक दृष्टिमे वैचारिक पतनक पहिल चिह्न ई थिक जे आब एहन भरोसा नहि रहल।[175]

किंतु विश्वास आ न्याय समान शब्द नहि। कोनो व्यक्ति प्रभावशाली अछि आ लोक हुनका सम्मुख माथ नमबैत छथि, एहिसँ स्वतः सिद्ध नहि होइत जे निर्णय सभ पक्ष लेल समान होइत छल। निर्णयकर्ता कोन सामाजिक समूहसँ छथि, कमजोर पक्ष स्वतन्त्र भावेँ बाजि सकैत छल कि नहि, स्त्रीक गवाहीक मान की छल, श्रमिक निर्णय स्वीकार नहि करैत तँ ओकर विकल्प की छल—ई प्रश्न पाठमे खुलल नहि अछि। एहि मौनकेँ रचनाकारक खिलाफ ऐतिहासिक अभियोग नहि, कथकीय दृष्टिक सीमा मानबाक चाही।

एहि ठाम दलित आलोचनाक एक आवश्यक कसौटी उत्पन्न होइत अछि : न्यायक मूल्यांकन कोना कएल जाए? यदि कोनो व्यवस्था शक्तिशाली व्यक्तिक सदाशयतापर निर्भर हो, तँ ओ सदाशयता क्षीण भेलापर वंचित लोकक अधिकार के बचाओत? रचनाक आरम्भ अनजानेमे एहि गहन प्रश्नक द्वार खोलैत अछि; मुदा ओकर समाधान स्मृतिमे खोजैत अछि, संस्थागत अधिकारक विश्लेषणमे नहि।

---

175 साफी, ‘राजा अओर परजा’, पृ. ८८। आरम्भमे ग्रामक ‘राजा’ लग सामाजिक विवादक निपटारा, सम्मान आ विपत्ति-समय सहायताक विवरण।

५. बेटी-विवाह आ संरक्षणक अर्थनीति

रचनामे पिताक बेटी-विवाहक खर्च लेल राजाक लग जाएबाक दृश्य अबैत अछि। राजा आर्थिक सहायताक आश्वासन दैत छथि, आ परजा अपन संरक्षक प्रति कृतज्ञ बनैत अछि। एतए पारिवारिक संकट, सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ वैयक्तिक दान एकरूपेँ जुड़ैत अछि। विवाहक खर्च निजी परिवारक सामर्थ्यसँ बाहर जाए तँ समाजक धनिक केन्द्र ओकर समाधान बनबाक दावा करैत अछि।[176]

ई चित्र करुणाजन्य आ आत्मीय अछि, मुदा हमर ध्यान एहि बातपर सेहो जाएबाक चाही जे सहायता अधिकारक आधारपर नहि, कोनो एक प्रभावशाली व्यक्तिक कृपापर टिकैत अछि। समाजक दानवीरता गरीबक तत्काल कष्ट घटा सकैत अछि; ओ अवश्य वांछनीय मानवीय गुण अछि। मुदा जँ गरीबक बेटी-विवाहक भार सामाजिक विषमतासँ बनैत अछि, तँ दान ओ विषमता मिटबैत अछि कि केवल संकट टारैत अछि? रचना ई अन्तर स्पष्ट नहि करैत।

पोथीक अन्य रचनामे दहेज आ विवाह-बाजारक आलोचना देखल जा सकैत अछि। ‘वर बिकाय लगनमे’क धन-विनिमयक विडम्बना तथा ‘सगुन’क लेन-देनक प्रसंग एहि विचार-रचनाक राजकीय सहायता-कल्पनासँ एकटा आवश्यक बहस खोलैत अछि। विवाहक असह्य खर्चक समाधान दानी राजा करथि कि व्यवस्थित आ न्यायपूर्ण समाज? पाँच खण्डक पोथीक भीतर ई प्रश्न स्वयं पाठकसँ उत्तर माँगैत अछि।

६. धनक प्रदर्शन आ नीतिगत वैधता

‘राजा अओर परजा’मे बड़े ढक, अन्नक भण्डार, हाथी आ विशाल दरबज्जाक दृश्य प्रतिष्ठाक चिह्न बनि सामने अबैत अछि। रचनाक वक्ता कहैत अछि जे एहन प्रभुत्वशाली व्यक्तिक गाम लोककेँ सुरक्षित आ सुखी लगैत छल। सम्पत्तिक प्रदर्शन सामाजिक भरोसाक

176 साफी, ओही रचना, पृ. ८८–८९। बेटी-विवाहक खर्चसँ सम्बन्धित सहायता, प्रतिष्ठा तथा सम्पन्न आँगनक दृश्य पर कथकीय स्मृति।

प्रमाण बनि जाइत अछि। दृश्य-योजना लोकक आश्रय-मनोविज्ञानकेँ चित्रात्मक रूप दैत अछि।[177]

किन्तु जतेक भरल भण्डार, ओतबहि प्रबल प्रश्न—ओ अन्न उपजेलक के, भण्डारणक लाभ के पबैत अछि, आ जरूरतक समय वितरण के ठहरबैत अछि? सामाजिक अधिकारक दृष्टिसँ राजाक सम्पन्नता आ परजाक सुख समानार्थी नहि। कथनकार दूनू सामाजिक तथ्यक बीच सम्बन्ध मानैत छथि; आलोचना एहि सम्बन्धक प्रमाण खोजैत अछि। हुनकर नैतिक आदर्श उदार धनीक अछि, न्यायपूर्ण सम्पत्तिवितरणक सामाजिक विधि नहि।

ई भिन्नता काव्यात्मक चित्रणकेँ नकारैत नहि। हाथी-घोड़ा आ अन्नक दृश्य लोकमतिमे सत्ता केना बनैत अछि तेकर उत्तम संकेत अछि। गामक स्मृति केवल अभाव नहि, गौरव आ आश्रयक आकांक्षा सेहो रचैत अछि। साहित्यिक स्तरपर ई दृश्य प्रभावी अछि; वैचारिक स्तरपर तकरा प्रश्नमुक्त नहि राखल जा सकैत।

७. श्रमक मोल : मड़ुआ, जौ आ मालिकक सम्बन्ध

विचार-रचनाक सर्वाधिक ठोस ऐतिहासिक अनुभूति खेत जोतनिहार मजदूरकेँ मड़ुआ अथवा जौ देबाक प्रसंगमे अछि। एतए कथा अमूर्त 'नीक राजा'सँ हटि काम, भोजन आ प्रतिफलक जमीनपर अबैत अछि। हर जोतब शारीरिक श्रम अछि; दिनभरक मेहनतिक बदलामे अन्न देब श्रमिकक जीवनयापनक आधार बनैत अछि। 'मालिक' शब्द ओकरामे अधिकारक असमानता स्पष्ट करैत अछि।[178]

177 साफी, ओही रचना, पृ. ८८–८९। बेटी-विवाहक खर्चसँ सम्बन्धित सहायता, प्रतिष्ठा तथा संपन्न आँगनक दृश्य पर कथकीय स्मृति।

178 साफी, ओही रचना, पृ. ८९। पुरान मालिक द्वारा हर जोतनिहार श्रमिककेँ मड़ुआ अथवा जौक अनाज देबाक प्रसंग; अधिकार/संरक्षणक भिन्नता आलोचनात्मक व्याख्या थिक।

सन्दीप साफीक आत्मकथामे कपड़ा धोनिहार माए-बाबूकेँ गेहूँक आटा, धान अथवा अन्य अन्नक बदला सेवा करबाक स्मृति अछि। तहिना विचार-रचनामे खेतीक मजदूरक अनाज-आधारित प्रतिफल अबैत अछि। दुनू प्रसंगक श्रम भिन्न, मुदा भुगतानक अनौपचारिकता आ सामाजिक आश्रितता समान प्रश्न उठबैत अछि। पोथीक अन्तर्पाठीय गहराई एहिसँ बढ़ैत अछि; सामाजिक श्रमक अनेक रूप एकहि आर्थिक संसारक झरोखा बनैत अछि।[179]

एहि प्रसंगमे भीमराव आंबेडकरक श्रमिक-समुदायक श्रेणीबद्ध विभाजन सम्बन्धी चिन्तन उपयोगी तुलनात्मक कसौटी दैत अछि। जाति केवल काजक तकनीकी विभाग नहि, काम करनिहारक सामाजिक दर्जाक गठन सेहो करैत अछि। तथापि एहि विचार-निबन्धमे प्रत्येक मजदूरक जाति लिखल नहि अछि। ताहि कारण कतिपय जाति-आधारित अनुभवक समानता चिन्हित करब सम्भव अछि, मुदा रचनाक अज्ञात पात्रक निश्चित जाति गढ़ब अनुचित अछि।[180]

८. दया आ अधिकारक बीच मूल वैचारिक फाँक

रचनाक एकटा मूल विडम्बना ई अछि जे पहिने मालिक श्रमिककेँ अत्यल्प अनाज दैत छल—तइयो ओ काल नैतिक आदर्शक रूपमे स्मरण कएल जाइत अछि। बादमे मालिक अधिक लाभ चाहैत अछि, तँ ओकरा दोषी ठहराओल जाइत अछि। एहि बदलावमे मानवीय मूल्यक प्रश्न निश्चित अछि, किन्तु पूर्ववर्ती दास्यता अथवा अल्प मजदूरीक प्रश्न कमजोर

179 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा, पृ. ७–१३; विशेषतः धोबी-पारम्परिक मजदूरीक अनाज-आधारित रूप, शिक्षा आ नेपाल-पंजाब-बेंगलुरु प्रवास।

180 भीमराव रामजी आंबेडकर, Annihilation of Caste (१९३६), विशेषतः जाति-व्यवस्थाक श्रम-विभाजनक आलोचना; प्रकाशकीय पाठ: https://ambedkar.navayan.com/book/annihilation-of-caste-part-1/ ।

पड़ि जाइत अछि। न्यायक माप मानो उदार व्यवहारक परिमाण बनैत अछि, श्रमक अधिकार नहि।[181][182]

दया निजी मनुष्यक प्रशंसनीय वृत्ति अछि। परन्तु श्रमिकक जीवनक स्थायी आधार जँ मात्र दया रहत तँ असमान शक्तिसम्बन्ध जसक तस रहि जाएत। परजाक जीवन राजा कतेक नीक छथि ताहिपर निर्भर बनि रहत। एहि अर्थमे लेखनक भीतर परम्परागत संरक्षणवादी दृष्टि आ न्यायसम्बन्धी आधुनिक प्रश्नक तनाव देखल जा सकैत अछि। एहि तनावकेँ लेखकक सरल आत्मविरोध कहि टारि देबाक बदला, सामाजिक चेतनाक संक्रमणक चिह्न मानि पढ़ब अधिक फलदायी अछि।

रचनाक श्रेष्ठता ई अछि जे ओ पाठककेँ ई प्रश्न सोचबा पर विवश करैत अछि : जखन सहायता समाप्त होइत अछि, तँ समाजक संरचनामे की बाचैत अछि? ओकर सीमा ई अछि जे सहायता वापस आबि गेलापर समस्या समाधान भऽ जेतै—एहन आशा तर्कक आधार बनैत अछि। आलोचनाक काम एहि उत्तरक बदलामे इतिहासक कृत्रिम निश्चितता थोपब नहि, अनुपस्थित अधिकारक प्रश्नकेँ उजागर करब अछि।[183]

९. महँगाइ, लाभक लोभ आ नैतिक पतनक कथा

कथनकार बदलावक एक कारण बढ़ैत महँगाइ आ मालिकक अधिक खेत जुटेबाक लालसा मानैत अछि। पूर्वमे श्रमिककेँ देल जाइत अन्न आब बेचि सम्पत्ति बढ़ेबाक वस्तु बनैत

---

181 साफी, ओही रचना, पृ. ८९। पुरान मालिक द्वारा हर जोतनिहार श्रमिककेँ मड़ुआ अथवा जौक अनाज देबाक प्रसंग; अधिकार/संरक्षणक भिन्नता आलोचनात्मक व्याख्या थिक।

182 साफी, ओही रचना, पृ. ८९। बढ़ैत महँगाइ, परिवारक विस्तार तथा अन्न बेचि अधिक खेत जुटेबाक लालसाक वर्णन।

183 साफी, ओही रचना, पृ. ९०–९१। दया-आधारित संरक्षण आ आधुनिक सामाजिक अधिकारमे तुलनाक निष्कर्ष विश्लेषणात्मक अछि; लेखकक प्रत्यक्ष शब्दशः राजनीतिक कार्यक्रम नहि।

अछि। एहि चित्रमे लोभ काज करैत अछि—जतेक धन, ततेक अधिक धनक इच्छा। मालिक अपन परिवारक विस्तार देखैत अछि; एहि कारणेँ परजाक आवश्यकता पीछे पड़ैत अछि।[184]

मुदा सामाजिक-आर्थिक बदलावक एहन व्याख्या मुख्यतः चरित्रक नैतिक परिवर्तनपर केन्द्रित अछि। बाजारक दाम, खेतीक लागत, भूमि-स्वामित्व, उत्पादन-सम्बन्ध आ मजदूरीक संस्थागत ढाँचाक कतेको प्रश्न बिना विश्लेषण रहि जाइत अछि। ई रचनाकारक दोष अनिवार्य रूपेँ नहि—लोक-निबन्ध अपन देखल बदलावकेँ उपलब्ध नैतिक शब्दमे व्यक्त करैत अछि। तथापि समीक्षक जखन एहि रचनाक आर्थिक दावाक मूल्यांकन करैत छथि, तखन व्यक्तिगत लालचकेँ समस्त इतिहासक पूर्ण कारण नहि मानि सकैत छथि।

‘राजा अओर परजा’ विशेष अर्थमे नैतिक अर्थशास्त्रक एक लोकाभिव्यक्ति अछि : समाजक धनवान पर कमजोरक निर्वाहमे योगदानक आशा राखल गेल अछि। जेम्स सी. स्कॉटक कृषक-समाजक ‘मोरल इकॉनमी’ सम्बन्धी अध्ययन एहि अपेक्षाक तुलनात्मक भाषा प्रदान करैत अछि। ओहि ग्रन्थक भूगोल अलग अछि, ताहि कारण तकर निष्कर्षकेँ मिथिलाक स्थानीय इतिहासक सीधा प्रमाण नहि ठहराओल जा सकैत।[185]

---

184 साफी, ओही रचना, पृ. ८९। बढ़ैत महँगाइ, परिवारक विस्तार तथा अन्न बेचि अधिक खेत जुटेबाक लालसाक वर्णन।

185 James C. Scott, The Moral Economy of the Peasant: Rebellion and Subsistence in Southeast Asia (New Haven: Yale University Press; उपलब्ध संस्करण १९७७)। प्रकाशकक परिचय: https://yalebooks.yale.edu/book/9780300021905/the-moral-economy-of-the-peasant/ । ई तुलनात्मक वैचारिक चौखटा थिक, मिथिलाक विशिष्ट ऐतिहासिक साक्ष्य नहि।

१०. गाम छोड़ैत श्रमिक : प्रवासक अनकहल तर्क

रचनामे परजा गाम छोड़ि शहर दिस कमाइ लेल जाए लगैत अछि। ई अंश पुरान ग्राम्य सम्बन्धक टूटनक सभसँ स्पष्ट सामाजिक चिह्न अछि। जखन मालिक अपन दायित्व पूरा नहि करैत, श्रमिककेँ दोसर अवसर ताकबाक आवश्यकता अनुभव होइत अछि। गामक परम्परागत आश्रय-व्यवस्था आब जीवन निर्वाहक सुनिश्चित साधन नहि रहैत। शहर कोनो आदर्श मुक्तिस्थल रूपेँ उपस्थित नहि, मुदा विकल्पक भूगोल बनैत अछि।[186]

साफीक आत्मकथा एहि तर्ककेँ जीवित अनुभव प्रदान करैत अछि : बाल्यकालमे नेपाल, बादमे पंजाब-चण्डीगढ़, फेर बेंगलुरु दिस काम करबाक यात्रा आ ओकर बीच शिक्षा जारी रखबाक कठिन प्रयास। एहि घटनासँ ‘राजा अओर परजा’क सामान्य कथनक सामाजिक भावभूमि बुझाइत अछि। मुदा आत्मकथाक विशेष यात्राकेँ विचार-निबन्धक सभ प्रवासी मजदूरक इतिहास नहि बनाओल जा सकैत अछि। तकरा दूनू ठामका भूख, श्रम, अवसर आ विस्थापनक अन्तर्सम्बन्धक रूपमे पढ़ब उपयुक्त अछि।[187][188]

प्रवासकेँ रचना एक दिस सामुदायिक विघटनक कारण मानैत अछि, दोसर दिस मालिकक मनमानीसँ बचबाक उपाय। ई द्वैधता महत्त्वपूर्ण अछि। श्रमिक गाम छोड़े तखन सामुदायिक जीवनमे कमी अबैत अछि, मुदा ओकर गाममे रहब जँ असमान श्रम-सम्बन्धपर टिकैत छल तँ परिवर्तनक पीड़ा आ स्वाधीनताक सम्भावना एकहि घटनामे समाहित अछि।

---

186 साफी, ओही रचना, पृ. ८९–९०। गामसँ शहर दिस श्रम-प्रवास आ मालिकक खेतसँ जुड़ल श्रमिक सम्बन्धक टूटनक विवरण।

187 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा, पृ. ७–१३; विशेषतः धोबी-पारम्परिक मजदूरीक अनाज-आधारित रूप, शिक्षा आ नेपाल-पंजाब-बेंगलुरु प्रवास।

188 साफी, ‘राजा अओर परजा’, पृ. ८८–९१; आत्मकथा, पृ. ७–१३। विचार-बिन्दु खण्डक कथकीय ‘पुरान समय’ आ आत्मकथाक दर्ज प्रवास-अनुभवक अन्तर।

११. गामक परजा सँ शहरक कामगार : पहचानक बदलाव

प्रवासक संग 'परजा'क पहचान संकटमे पड़ैत अछि। गाममे मालिकक खेत सँ जुड़ल मजदूर जखन शहर दिस जाइत अछि, ओकर सम्बन्ध आब केवल एक व्यक्तिक छत्रछायासँ निर्धारित नहि रहैत। ओकरा मजदूरी, नयका सामाजिक जाल, अनजान नियोक्ता आ बदलैत पेशाक संसारमे अपन स्थान बनाबऽ पड़ैत अछि। एहि अर्थमे रचनाक अन्तर्निहित कथा परतन्त्रता सँ आंशिक स्वाधीनताक सम्भावनाक कथा सेहो अछि, भले लेखकक प्रत्यक्ष स्वर बीतल विश्वासक क्षय पर शोक प्रकट करैत हो।

एतए मानब आवश्यक अछि जे गाम छोड़ब स्वतः उन्नति नहि। शहरक असुरक्षित श्रम, ठगी, रोग, एकाकीपन आ पारिवारिक दूरी साफीक आत्मकथामे अनेक रूपेँ आबैत अछि। तइयो 'राजा अओर परजा'क प्रवास-वर्णनमे श्रमिकक निर्णयक क्षमता एकदम मिटल नहि अछि। ओ ठहरि विचार करैत अछि जे अल्प प्रतिफलले बरख-बेर काज करबाक तुलनामे बाहर काज ताकब व्यावहारिक हो सकैत अछि।[189]

एहि विरोधाभासकेँ सामाजिक इतिहासक सरल प्रगति-कथा बनाओल नहि जाउ। एकटा व्यवस्था टूटैत अछि, नव व्यवस्था सेहो पूर्ण सुरक्षा नहि दैत। साहित्यक काम एही असुरक्षा बीच मनुष्यक चयनकेँ देखब अछि। साफी एहि चयनक संरचनात्मक सिद्धान्त नहि लिखैत छथि, मुदा ओकर नैतिक लागतकेँ तीक्ष्ण भावेँ अनुभव करबैत छथि।

१२. पाँच किलो धान आ एक टकाक सलाइ : वस्तुक अर्थ

रचनाक खास प्रभावी प्रसंगमे दैनिक श्रमक बदला भेटनिहार धानक मात्रा आ बजारमे सलाइक मामूली दामक तुलना आएल अछि। ई तुलनात्मक दृश्य मूल्य-व्यवस्थाक असन्तुलन आ श्रमिकक अपमानक अनुभवकेँ ठोस वस्तुक सहारे सुनाबैत अछि। एक दिस

189 साफी, ओही रचना, पृ. ८९–९०। गामसँ शहर दिस श्रम-प्रवास आ मालिकक खेतसँ जुड़ल श्रमिक सम्बन्धक टूटनक विवरण।

दिनभरक देहगत श्रम, दोसर दिस मामूली चीजक नगदी विनिमय—एतए वस्तु अर्थशास्त्रीय सारणी नहि, वक्ताक नैतिक तर्कक दृश्य माध्यम बनैत अछि।[190]

रचनामे देल प्रमाणसँ ऐतिहासिक दामक प्रवृत्तिक गणना सम्भव नहि। वर्ष, प्रदेश, मजदूरी-दर, अनाजक गुणवत्ता वा मूल्यसूचकाङ्कक विस्तृत विवरण नहि अछि। ताहि कारण आलोचनामे ई नहि कहब उचित जे विशिष्ट सालमे अमुक वास्तविक मजदूरी घटि गेल अथवा बढ़ि गेल। हँ, पाठक एहि दृश्यसँ ई समझैत अछि जे वक्ता महसूस करैत अछि : कठोर श्रमक बदला भेटनिहार भोजनक मोल सम्मानजनक नहि।

साफीक काव्य आ कथामे रोटी, भात, धान, मड़ुआ, सलाइ, नून-साग, चुल्हि आदि छोट वस्तुसभ बारम्बार सामाजिक अर्थ पबैत अछि। विचार-बिन्दु खण्डमे सेहो ई वस्तु-भाषा विषयकेँ जमीन पर रखैत अछि। साहित्यिक व्यञ्जना एहि ठोसपनसँ तीक्ष्ण होइत अछि।

१३. भूमि-लेखनक उल्लेख : परिवर्तनक दावा आ प्रमाणक सीमा

वक्ताक वर्णनमे पूर्वकालमे मालिकक खेतमे काम करनिहार लोक किछु भूमि अपन नाम लिखबा लेबाक प्रसंग प्रस्तुत करैत छथि। ई कथन बदलावक गहराइ देखबैत अछि : श्रमिक अपन श्रमक सम्बन्धकेँ जमीनक स्वामित्व अथवा कागजी अधिकारसँ जोड़ि देखब चाहैत अछि। परजा शब्दक आश्रित अर्थमे एहि प्रसंगसँ कम्पन अबैत अछि।[191]

---

190 साफी, ओही रचना, पृ. ९०। ‘एक टका सलाइ’ तथा दिनभरक धान-दाउनक बदला ‘पाँच किलो धान’क उपमा। ई साहित्यिक तुलनात्मक कथन अछि, मूल्यसूचकाङ्कक प्रमाण नहि।

191 साफी, ओही रचना, पृ. ९०। शहरक आमदनी, खेतीक हरोड़ी आ जमीन लिखेबाक विवरण; पाठ प्रशासनिक भू-अभिलेख अथवा भूमि-सुधारक कालक्रम निर्दिष्ट नहि करैत अछि।

एतए सावधानी आवश्यक अछि। रचना नहि कहैत अछि जे ई जमीन हस्तान्तरण कोन विशेष कानून, भूदान, बटाइदारी विधान अथवा राजकीय अभियानसँ जुड़ल छल। कथनकार प्रशासनिक इतिहास नहि लिखि रहल छथि। कोनो नामित भू-अभिलेख, वर्ष वा क्षेत्रक विशिष्ट नियम एतए उपलब्ध नहि। ताहि कारण एहि प्रसंगकेँ बिहारक निश्चित भूमि-सुधार घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण ठहराएब मूल पाठसँ आगू बढ़ब होयत।

तथापि साहित्यिक संकेत नितान्त महत्त्वपूर्ण अछि। जमीनक स्वामित्व ग्रामीण सत्ताक आधार बदलि सकैत अछि। जखन श्रमिक मालिकक दयापर निर्भर रहबाक बदला कमाइ, प्रवास अथवा जमीनक माध्यमसँ अपन निर्वाह चाहैत अछि, तखन लोक-आकांक्षाक स्वर बदलैत अछि। एहि एकटा छोट कथनमे ग्राम्य सामाजिक सम्बन्धक ऐतिहासिक अस्थिरता उभरैत अछि।

१४. 'आलस्य'क आरोप : कथनकारक दृष्टिक अन्तर्विरोध

रचना कहैत अछि जे पुरान श्रम-सम्बन्ध टूटलापर लोकमे आलस्य आबि गेल, केकरो आनक चिन्ता नहि रहल। एहि कथनक साथे ओ देखबैत अछि जे मजदूर नगरीय अवसर धरि पहुँचबाक प्रयास करैत अछि। एहि दुनू बातक बीच एकटा वैचारिक अन्तर्विरोध अछि। गामक कठोर, अल्प प्रतिफलवला काज छोड़ब आलस्यक प्रमाण नहि हो सकैत; ओ गरिमा, बेहतर मजदूरी अथवा विकल्पक खोज सेहो भऽ सकैत अछि।[192]

कृषि-समाजक बहुतेक पीढ़ी लेल काजक आदत सामाजिक मूल्य थिक। हुनकर दृष्टिसँ बदलैत युवा पीढ़ीक चुनाव आलस्य सन प्रतीत भऽ सकैत अछि। साफीक वक्ता एहि स्मृतिजनित नैतिक मूल्यांकनकेँ अपन समाज-विश्लेषणमे स्थान दैत छथि। आलोचना एहि भावनाकेँ समझैत अछि, मुदा श्रमिकक चुनावक स्वतंत्र अर्थ सेहो खोजैत अछि।

---

192 साफी, ओही रचना, पृ. ९०। खेतक श्रम छोड़बाक बाद आलस्य बढ़बाक कथकीय आरोप।

एहि स्थानपर साहित्यक भीतर 'लोक' एकरूप नहि। भूमि-मालिकक श्रमक अपेक्षा, वृद्धक पुरान अनुशासन आ नवयुवकक रोजगार-आकांक्षा एक दोसरा सँ भिन्न हो सकैत अछि। रचनामे नवयुवकक विस्तृत प्रतिवाद नहि, ताहि कारण आलस्यक निष्कर्ष एकल कथकीय आवाजक सीमा भीतर रहैत अछि।

१५. राजा जनक : नैतिक स्मृति, ऐतिहासिक प्रमाण नहि

मिथिलाक राजा जनक रचनामे आदर्श शासकक प्रतीक बनि आबैत छथि। कथनकार हुनका खेत-खलिहानसँ परजाक जीवन धरि सभक चिन्ता करनिहार मानैत छथि। सुखाड़क स्थितिमे जनकक प्रार्थना आ यज्ञक कथा सामाजिक संरक्षणक उच्चतम उदाहरण बनबैत अछि। एहि प्रसंगमे मिथिलाक सांस्कृतिक स्मृति व्यक्तिगत ग्राम्य अनुभवसँ जुड़ि एकटा व्यापक आदर्श रचैत अछि।[193]

जनकक कथा मनुष्यक नियति पर शासकक नैतिक दायित्वक प्रतीकात्मक प्रतिपादन थिक। एकरा ऐतिहासिक अकालक प्रमाण, कृषि-वर्षाक दस्तावेज अथवा धर्म-विधिक कारणात्मक वैज्ञानिक कथनक रूपमे उद्धृत करब समीचीन नहि। ग्रन्थक भीतर लोक-आस्था जेना स्वर पबैत अछि, आलोचना तकर रूप आ प्रयोजनकेँ समझैत अछि। जनक एतए यथार्थ समकालीन शासक नहि, सामाजिक कल्पनाक कसौटी छथि।

आदर्श उदाहरणक शक्ति एहिमे अछि जे वर्तमानकेँ ओकर सामने तौला जा सकैत अछि। मुदा आदर्शक छवि जखन अतीतक समस्त शासककेँ 'नीक' मानबाक साधन बनैत अछि, ओ सामाजिक भिन्नताक इतिहास ढाँक सकैत अछि। रचना एहि जोखिमसँ अछूति नहि। जनकक प्रसंगकेँ तुलनात्मक प्रतीक रूपेँ पढ़ब ओकर साहित्यिक न्याय अछि; ओकरा सम्पूर्ण मिथिला अतीतक तथ्यात्मक वृत्तान्त मानब न्याय नहि।

---

193 साफी, ओही रचना, पृ. ९०। राजा जनक, परजाक कल्याण, अकाल तथा इन्द्रसँ वर्षाक प्रार्थनाक प्रसंग; रचनाक सांस्कृतिक-आदर्शात्मक आख्यान।

१६. अकाल, वर्षा आ राजधर्मक भाषा

सुखाड़क प्रसंग रचनाक प्रारम्भमे राजाक विपत्ति-समय सहायता सँ जुड़ि अबैत अछि आ अन्त दिस जनकक प्रार्थनासँ नयका रूप ग्रहण करैत अछि। एहि प्रकार अकालक प्रसंग केवल ऋतु-चक्रक दुर्घटना नहि, सत्ता आ जनता बीच दायित्वक कसौटी बनैत अछि। नयका खेतमे अन्न नहि उपजल तँ परजा भूखक शिकार, आ समृद्ध शासनक मूल्यांकन ओकर व्यवहारसँ होइत अछि।[194][195]

‘रौदी भऽ गेल’ कवितामे सुखाड़क दृश्य फाटल खेत, सूखल पोखरि, जटा-जटिनक गीत, पशु-पक्षी आ असहाय कृषि-जीवनक माध्यमसँ सामने अबैत अछि। विचार-रचनामे ओही संकटक राजनीतिक-धार्मिक उत्तर खोजल गेल अछि। कविता संवेदनात्मक यथार्थ बनबैत अछि; विचार-निबन्ध आदर्श राजधर्मक प्रश्न उठबैत अछि। दुनू रचना मिलि प्रकृति आ सामाजिक दायित्वक सम्बन्ध विस्तृत करैत अछि।[196]

एकर सीमा सेहो ध्यानयोग्य अछि। वर्षा लेल प्रार्थना काव्यात्मक आ सांस्कृतिक रीतिसँ अर्थवान हो सकैत अछि, मुदा सुखाड़-संकटक व्यावहारिक समाधानक रूपमे खाद्य-वितरण, जल-संसाधन, सामूहिक तैयारी वा श्रम-सुरक्षाक प्रश्न पाठमे विकसित नहि अछि। लोक-आस्था सामाजिक करुणा जगबैत अछि; न्यायपूर्ण संरचनाक रूपरेखा रचना खुलल छोड़ैत अछि।

---

194 साफी, ओही रचना, पृ. ९०। राजा जनक, परजाक कल्याण, अकाल तथा इन्द्रसँ वर्षाक प्रार्थनाक प्रसंग; रचनाक सांस्कृतिक-आदर्शात्मक आख्यान।

195 साफी, ओही रचना, पृ. ९०–९१। धार्मिक उदाहरणसँ समकालीन नैतिक आलोचना दिस विचारक संक्रमण।

196 साफी, कविता ‘रौदी भऽ गेल’, पृ. १७–१८; ‘पंचनामा’, पृ. ३२–३३; ‘गामक इनार’, पृ. ६०–६१।

१७. भगवान आ भक्त : मानवीय सम्बन्धक रूपक

जनकक प्रसंगक बाद रचनाक स्वर भगवान आ भक्तक सम्बन्धक अनुकरण दिस जाइत अछि। कथनकार मानवीय व्यवहारमे पारस्परिक निष्ठा आ दयाक अभाव अनुभव करैत छथि। एहि भावभूमिमे धार्मिक कल्पना समाजक नैतिक आलोचनाक भाषा बनैत अछि। ई केवल आस्थाक विवरण नहि, जिम्मेदारीक मानवीय रूपक सेहो अछि।[197]

एतए उपमा ध्यानाकर्षक अछि : भगवान संकटग्रस्त भक्तक पुकार सुनैत छथि, तखन धनिक अथवा शासक परजाक दुख किएक नहि सुनैत? एहि वाक्-व्यवस्थामे धार्मिक स्मृतिक सन्देश दया, सहारा आ संवेदनशीलता अछि। सामाजिक आलोचना एहि आध्यात्मिक छविसँ धार पबैत अछि।

मुदा 'भक्त'क शरणागति आ 'परजा'क सामाजिक स्थिति केँ एकहि नैतिक सम्बन्धमे राखलापर अधीनता सामान्य लगबाक सम्भावना रहैत अछि। आधुनिक अधिकारक प्रश्न एहि ठाम फेर उभरैत अछि। न्याय केवल ऊपरसँ देल कृपा नहि, समाजक प्रत्येक सदस्यक समान मान्यता सेहो अछि। रचना एहि दोहरा अर्थक बीच चलैत अछि—आस्थामे सहानुभूति अछि, किन्तु ओकर उपमामे बराबरीक राजनैतिक संरचना स्पष्ट नहि।

१८. बी.पी.एल. आ ए.पी.एल. : प्रशासनिक शब्दक साहित्यिक प्रवेश

रचनाक समापन दिस बी.पी.एल. आ ए.पी.एल. सन आधुनिक प्रशासनिक वर्गीकरण आबैत अछि। एहि शब्दसभक संग पुरान जौ-जनेरक भोजन आ समकालीन भात-दालि-तरकारीक तुलना होइत अछि। लोकभाषाक गद्य अचानक राज्यक आर्थिक नामकरण अपनबैत अछि। ई मिश्रण सामाजिक संक्रमणक एक विशेष भाषिक सूचक अछि : जीवनक

197 साफी, ओही रचना, पृ. ९०–९१। धार्मिक उदाहरणसँ समकालीन नैतिक आलोचना दिस विचारक संक्रमण।

अनुभव लोकक शब्दमे कहल जाइत अछि, मुदा गरीबीक नव नाम प्रशासनिक संक्षेपसँ अबैत अछि।[198]

कथनकारक आशय समाजक बदलैत खाद्य-आदत आ गरीबीक बोध पर टिप्पणी करब अछि। तइयो 'पहिने बी.पी.एल. नहि छल' कहबाक अर्थ ई नहि जे पहिने गरीबी नहि छल; ई वर्गीकरणक प्रशासनिक शब्द बादमे व्यवहारमे आएल। रचनाक असमानताबोध एहि अन्तरकेँ पूरा सुस्पष्ट नहि करैत। भोजनक प्रकार अथवा थारीक रूप देखिक सामाजिक-आर्थिक समानता सिद्ध नहि होइत।

एहि बिन्दुपर रचना अनुभवजन्य कथनसँ अतिशयोक्तिपूर्ण सामान्यीकरणक दिस बढ़ैत अछि। ई आलोचना ओकर करुणाक अवमूल्यन नहि करैत; प्रत्युत भूख आ सम्पन्नताक विषयक प्रमाणक सूक्ष्मता माँगैत अछि। जे परिवार भात खाइत अछि से आवश्यक नहि जे ओ अन्न-सुरक्षित, ऋणमुक्त वा जातीय हिंसासँ मुक्त अछि।[199]

१९. अन्नक समानता आ श्रमक असमानता

समापनमे गरीब आ अमीरक खेनाइ-पीनाइमे समानता सन एकटा आशावादी चित्र प्रस्तुत अछि। मुदा रचनाक पूर्वार्धमे स्वयं मालिक आ श्रमिकक अन्न-वितरणक असमान सम्बन्ध चित्रित अछि। ई विरोध गम्भीर अछि : थारीमे एकहि प्रकारक भोजन उपस्थित हो सकैत अछि, मुदा ताहि भोजन धरि पहुँचबाक श्रम, जोखिम, अधिकार आ स्थिरता भिन्न रहि सकैत अछि।

---

198 साफी, ओही रचना, पृ. ९१। बी.पी.एल./ए.पी.एल. श्रेणी, जौ-जनेरक खिचड़ी तथा भात-दालि-तरकारीक तुलनात्मक वर्णन। ई लेखक-वाचकक मूल्यांकन अछि, ऐतिहासिक सर्वेक्षण नहि।

199 साफी, बैशाखमे दलानपर, विचार-बिन्दु खण्ड, पृ. ८७–९१; 'राजा अओर परजा'क समापनमे खाद्य-समानताक दावाक विश्लेषण।

आत्मकथा खण्डमे जीवन निर्वाह लेल कपड़ा धोब, बकरी पालब, पढ़ाइ छोड़बाक विवशता आ अनियमित रोजगारक अनुभव अछि। एहि पृष्ठभूमिमे केवल भोजनक वस्तुक नामसँ सामाजिक स्थिति निर्धारणक सीमा आरो स्पष्ट होइत अछि। ‘राजा अओर परजा’ भोजनक स्तरपर समानता देखबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि, मुदा आर्थिक सुरक्षा आ सम्मानक समानताक विमर्श पूरा विस्तार नहि पबैत।[200]

साहित्यिक अर्थ एहि ठाम अनिश्चित अछि। एक दिस लेखक भूख समाप्त होबाक सपना देखैत छथि, दोसर दिस अनुभव कहैत अछि जे अभाव सहज नहि। एहि दोहरा स्वरकेँ रचनाक कमजोरी मात्र नहि, सामाजिक आशा आ भोगल असुरक्षाक साथ-साथ अस्तित्वक चिह्न सेहो मानल जा सकैत अछि।

२०. पुरान समयक आदर्शीकरण : स्मृतिक चयनशीलता

‘पिहने’ आ ‘अखन’ रचनाक काव्यात्मक समय-चिह्न अछि। ‘पिहने’ विश्वास, साझा भोजन, कर्तव्य आ मानवीय नाताक स्मृति दैत अछि; ‘अखन’ महँगाइ, लोभ, असहयोग आ अनिश्चितताक दृश्य बनबैत अछि। एहि विरोधक कारण गद्य सरल आ गामक श्रोताक लेल सुलभ भऽ जाइत अछि। किन्तु अतीतक सामाजिक विविधता एहि द्विभाजनमे समाइ नहि पबैत।[201]

लोक-स्मृति अनुभवक भावात्मक सत्य राखि सकैत अछि, भले एकर कालक्रम सामाजिक इतिहाससँ भिन्न हो। साफीक वक्ता अतीतक जाहि पहलूकेँ खोजैत छथि, ओ सामूहिक संरक्षण आ मानवीय निकटता अछि। आलोचना हुनकर एहि लालसाकेँ खारिज नहि करैत, मुदा पूछैत अछि : ओही समय भूमिहीनक दावेदारी, जातिगत पाबन्दी, स्त्रीक

200 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा, पृ. ७–१३; विशेषतः धोबी-पारम्परिक मजदूरीक अनाज-आधारित रूप, शिक्षा आ नेपाल-पंजाब-बेंगलुरु प्रवास।

201 साफी, ओही रचना, पृ. ८८–९०। ‘पिहने’, ‘अखन’, ‘राजा’, ‘परजा’, ‘मालिक’, ‘जऽन’ आदि पद रचनामे प्रयुक्त सामाजिक काल-विभाजनक मूल साधन छथि।

आर्थिक निर्णयाधिकार आ मजदूरक सामूहिक मोलभावक स्थिति की छल? रचना नहि कहैत।

स्मृतिक चयनशीलता साहित्यक स्वभावगत सम्भावना अछि। जँ पाठक एतबे बूझि पढ़ैत छथि जे ई समाजक नैतिक आत्म-प्रतिबिम्ब अछि, तँ रचना मूल्यवान बनैत अछि। यदि एकर दृश्यकेँ जसक तस सर्वत्र लागू ऐतिहासिक न्यायसंगत तथ्य बनाओल जाए, तँ कृतिक जटिलता नष्ट भऽ जाएत।

२१. जाति-प्रश्न : जीवन-कथनमे स्पष्ट, विचार-निबन्धमे अपेक्षाकृत मौन

पोथीक आत्मकथामे लेखक अपन धोबी समुदाय आ दलित परिचय स्पष्ट रूपेँ दैत छथि। 'राजा अओर परजा'मे समाजक वर्णन मुख्यतः मालिक, राजा, परजा आ श्रमिकक पदक माध्यमसँ होइत अछि। भिन्न पात्रक जातिगत पहचान, भेदभावक ठोस घटना अथवा जाति-नियन्त्रित श्रम-विभाजनक विस्तार एहि गद्यमे अनुपस्थित अछि। ई मौन अपने आपमे आलोचनात्मक तथ्य अछि; मुदा एहि कारण लेखकक अनुभव अप्रासंगिक नहि बनैत।[202][203]

दलित साहित्यक सौन्दर्यबोध केवल जातिक नाम लेबाक औपचारिक शर्त नहि; उपेक्षित श्रम, मनुष्यक सम्मान, सामाजिक पराधीनता आ अभिव्यक्तिक अधिकारक प्रश्न सेहो ओकर केन्द्रमे आबि सकैत अछि। शरणकुमार लिंबाळेक आलोचनात्मक लेखन एहि पृष्ठभूमिमे उपयोगी अछि। तथापि एहि विचार-रचनाकेँ क्रान्तिकारी घोषणापत्र कहब अनुचित होयत। ई अधिक जटिल सामाजिक दस्तावेज अछि : दलित लेखकक जीवनानुभवसँ निकसल संवेदना पुरान संरक्षणवादी आदर्शक संग सह-अस्तित्वमे अछि।[204]

---

202 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्डक आरम्भमे गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी, पृ. ६; लेखकक आत्मकथात्मक जाति तथा श्रम-परिचय, पृ. ७–१३।

203 साफी, 'राजा अओर परजा', पृ. ८९–९१। स्त्री, बटाईदार, भूमिहीन श्रमिक वा जाति-सङ्घर्षक प्रत्यक्ष आत्मवृत्त सम्बन्धी विशिष्ट केस-विवरण एहि खण्डमे उपलब्ध नहि।

दुनूकेँ साथ पढ़लापर प्रश्न उठैत अछि : जातिगत परतन्त्रतासँ बाहर निकलबाक लेल मानवीय दया पर्याप्त अछि कि अधिकार-आधारित परिवर्तन आवश्यक? रचना स्वयं एहि प्रश्नक समुचित उत्तर नहि दैत; आलोचक ओहि अनुपस्थित उत्तरक महत्त्व चिन्हित करैत अछि।

२२. दलित आत्मकथाक सन्दर्भ : सार्वजनिक वाणी प्राप्त करब

मैथिली साहित्यक इतिहासमे साफीक आत्मकथाक महत्त्व पर विदेहक तत्कालीन प्रकाशकीय परिचय जोर दैत अछि। 'बैशाखमे दलानपर' स्वयं आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु केँ एकत्र करैत अछि। एहि बहुविधात्मक विन्यासक अर्थ ई अछि जे लेखक मात्र अपन दुःखक वृत्तान्त देनिहार नहि; ओ समाजक नैतिकता, खेती, शिक्षा, स्त्री-स्थिति, लोकपर्व आ सामुदायिक व्यवहारपर विचार करबाक साहित्यिक अधिकार सेहो अपनबैत छथि।[205][206]

---

204 Sharankumar Limbale, Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations, अनुवाद: Alok Mukherjee (Orient Longman, २००४)। प्रकाशक: https://orientblackswan.com/details?format=paperback&obsin=3804 ।

205 साफी, बैशाखमे दलानपर, आत्मकथा खण्डक आरम्भमे गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय टिप्पणी, पृ. ६; लेखकक आत्मकथात्मक जाति तथा श्रम-परिचय, पृ. ७–१३।

206 विदेह, A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65; विदेहक पूर्ववर्ती प्रकाशकीय परिचय, https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ; https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A । तुलनात्मक आलोचनामे सम्पादकीय दावाक स्रोताभिमुख स्थिति।

गेल ऑम्वेटक दलित आन्दोलनसम्बन्धी इतिहास तथा आंबेडकरक जाति-विमर्श एहि प्रवेशकेँ व्यापक भारतीय पृष्ठभूमिमे देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा ई सिद्धान्त साफीक विचार-बिन्दुक प्रत्यक्ष स्रोत अछि—एहन दावा उपलब्ध साक्ष्यसँ नहि उठैत। ओ सिद्धान्त सभ आलोचनाक अलग-अलग प्रश्न खुलवैत अछि : श्रमिककेँ न्याय के देत, सामाजिक प्रतिष्ठा कोना बनैत अछि, सामुदायिक स्मृति केकरा केन्द्रमे रखैत अछि?[207][208]

विचार-बिन्दु खण्डक आवाज सम्मानक दृष्टिसँ सुनेबाक अर्थ ओकर प्रत्येक मत स्वीकार करब नहि। साफी लिखबाक सार्वजनिक स्थान प्राप्त करैत छथि; एहि उपलब्धिक असल सम्मान हुनकर लेखनकेँ ठोस तर्क आ आलोचनाक सामान्य, समान कसौटीपर पढ़ब अछि।

२३. स्त्रीक अनुपस्थिति आ ग्रन्थक भीतरक विरोधी आवाज

‘राजा अओर परजा’मे बेटी-विवाहक खर्च पर चर्चा अबैत अछि, मुदा बेटीक अपन इच्छा, विवाहक निर्णय, दहेजक दबाव अथवा स्त्रीक श्रमक विस्तृत कथन अनुपस्थित अछि। परजाक सामूहिक स्वर बहुधा पुरुष-केन्द्रित अछि। ई तात्कालिक पाठ-साक्ष्य थिक; एकरा लेखकक समस्त साहित्यक स्त्री-दृष्टिक अंतिम निर्णय नहि मानल जाए।[209]

---

207 Gail Omvedt, Dalits and the Democratic Revolution: Dr Ambedkar and the Dalit Movement in Colonial India (नई दिल्ली: Sage Publications, १९९४)। ग्रन्थ-विवरण: https://books.google.com/books/about/Dalits_and_the_Democratic_Revolution.html?id=CjkHzwEACAAJ ।

208 आंबेडकर, Annihilation of Caste (१९३६); Omvedt, Dalits and the Democratic Revolution (१९९४)। सामाजिक पदानुक्रम आ परिवर्तनपर व्यापक विमर्श; ‘राजा अओर परजा’क लेखकक प्रत्यक्ष वैचारिक अनुयायित्व स्थापित करबाक प्रमाण नहि।

पोथीक कवितामे घरक स्त्रीपर हिंसा आ श्रमक बोझ, विहनि कथामे सासु-पुतोहुक तनाव, तथा लघुकथा ‘पसीखाना’मे खेतमे धान काटनिहारी पत्नी परिवारक वास्तविक निर्वाह करैत छथि। एहि अन्तरपाठसँ विचार-बिन्दु खण्डक राजकीय परजा-कल्पनाक सीमित सामाजिक प्रतिनिधित्व स्पष्ट होइत अछि। सामुदायिक न्यायक भाषा जँ स्त्रीक स्वतंत्र कण्ठकेँ स्थान नहि दैत, तँ ओकर जनकल्याणक दावा अपूर्ण रहि सकैत अछि।[210]

शर्मिला रेगे दलित स्त्रीक जीवनक अध्ययनमे श्रम, हिंसा, जाति आ स्त्री-स्वरक संयुक्त पठनीयता स्थापित करैत छथि। तकर प्रेरणासँ एहि खण्डकेँ आलोचनात्मक प्रश्न देल जा सकैत अछि, मुदा लेखकक विचार-निबन्धमे एहन स्त्री-साक्ष्य उपस्थित अछि—ई काल्पनिक रूपमे नहि कहब चाही। अवधारणाक सम्मान पाठक मौनक स्वीकृतिसँ जुड़ल अछि।[211]

२४. गामक सामूहिक जीवन आ ‘पंचनामा’क तुलना

‘राजा अओर परजा’ एकटा आदर्श निर्णयकर्ताक स्मृति रखैत अछि। कविता ‘पंचनामा’ सम्पत्तिक बँटवारा आ परिवारक झगड़ासँ बचबा लेल पंच, अमीन, कागज आ नाप-जाँचक प्रक्रिया प्रस्तुत करैत अछि। एहि दू रचनाकेँ जोड़ि पढ़लापर व्यक्तिगत राजकीय निर्णयसँ सामूहिक, लेखबद्ध निपटाराक दिस एकटा वैचारिक अन्तर देखाइत अछि।[212]

---

209 साफी, ‘राजा अओर परजा’, पृ. ८९–९१। स्त्री, बटाईदार, भूमिहीन श्रमिक वा जाति-सङ्घर्षक प्रत्यक्ष आत्मवृत्त सम्बन्धी विशिष्ट केस-विवरण एहि खण्डमे उपलब्ध नहि।

210 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ७८–८३; ‘पसीखाना’, पृ. ८३–८६। कृषि-श्रम, भूख, शिक्षा तथा घरेलू संसाधनक प्रश्न पर ग्रन्थक अन्य खण्डसँ तुलना।

211 Sharmila Rege, Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios (नई दिल्ली: Zubaan, २००६)। पुस्तक-विवरण: https://books.google.com/books/about/Writing_Caste_Writing_Gender.html?id=lP8pAAAAYAAJ ।

‘पंचनामा’क लोकबोध समस्या टारबाक लेल कागज बनाबऽ, रसीद कटाबऽ आ स्पष्ट सीमांकन करबाक पक्षमे अछि। विचार-बिन्दुमे राजा परजाक विवाद निपटबैत छथि, मुदा आदेशक वैधानिकता पर प्रश्न विकसित नहि होइत। एहि अन्तरसँ साफीक संकलन भीतर न्यायक दू रूप उपस्थित अछि : नैतिक व्यक्तित्वक भरोसा आ सामाजिक प्रक्रियाक लिखित व्यवस्था।

साहित्यिक आलोचना लेल एहि ठाम एकटा निष्कर्ष निकलैत अछि : एकहि लेखकक पाँच खण्डमे विचार सदा समान रूपेँ व्यवस्थित नहि। कतहु ओ परम्परा स्मरण करैत छथि, कतहु दस्तावेजीकृत व्यवहारक प्रशंसा। एहि भिन्नताकेँ लेखकक अयोग्यता नहि मानि ओकर जीवन-संसारक बहुस्तरीयता रूपेँ देखल जाए, मुदा विरोधाभास नोंदित अवश्य हो।

२५. ‘ओगरबाह’ आ ‘राजा अओर परजा’ : श्रमक दू विमर्श

लघुकथा ‘ओगरबाह’मे वृद्ध खेत-रखवालाक भोजनक अभाव आ कृषि-परिवर्तनक चिन्ता देखाओल गेल अछि। विचार-बिन्दु खण्डमे मालिकक अन्न-वितरण, श्रमिकक प्रवास आ परस्पर सहायता समाप्त होबाक प्रसंग अबैत अछि। दुनू रचनाक वस्तु-संसार—धान, खेत, अन्न, मजदूरी, गाम—मिलैत अछि; मुदा शिल्प भिन्न अछि। ‘ओगरबाह’ व्यक्ति-स्थिति आ विस्तारशील कथनसँ शुरू होइत अछि, जखन ‘राजा अओर परजा’ सामाजिक सिद्धान्तनुमा वाक्यसँ आरम्भ करैत अछि।[213][214]

---

212 साफी, कविता ‘रौदी भऽ गेल’, पृ. १७–१८; ‘पंचनामा’, पृ. ३२–३३; ‘गामक इनार’, पृ. ६०–६१।

213 साफी, ‘ओगरबाह’, पृ. ७८–८३; ‘पसीखाना’, पृ. ८३–८६। कृषि-श्रम, भूख, शिक्षा तथा घरेलू संसाधनक प्रश्न पर ग्रन्थक अन्य खण्डसँ तुलना।

214 साफी, ‘राजा अओर परजा’, पृ. ८८–९१; ‘ओगरबाह’, पृ. ७८–८३। श्रमक संकट, अन्नक वितरण आ बदलैत ग्राम्य परस्परनिर्भरता पर खण्डान्तर तुलना।

दुनू ठाम संकट एकरेखीय नहि। अन्न पैदा करनिहारक पेट खाली रहि सकैत अछि, आ अन्नक भण्डार राखनिहार उदार अथवा स्वार्थी बनि सकैत अछि। भोजन पर अधिकारक प्रश्न एहि विरोधाभासकेँ जोड़ैत अछि। रचनाकारक गम्भीर उपलब्धि ई अछि जे ओ जमीनक शब्दावलीमे समाजक नैतिक अर्थ सोचैत छथि, मात्र अमूर्त नीति नहि लिखैत।

मुदा 'ओगरबाह'मे जेकाँ विचार-रचनामे सेहो उपदेशात्मक स्वर कखनो अनुभवक सूक्ष्मता पर भारी पड़ैत अछि। समाजक सम्पूर्ण रूपकेँ 'पहिने नीक, आब खराब'क सरल सूत्रमे बाँधलापर वेतन, भूमि-सम्बन्ध आ नव पीढ़ीक आकांक्षाक भिन्न दिशासभ पर्याप्त स्थान नहि पबैत। एतए दुनू रचनाक रचनात्मक चुनौती एक समान अछि।

२६. शैली : आवर्तन, लोक-वाक्य आ तर्कक अनिश्चितता

'राजा अओर परजा'क भाषा लिखित शास्त्रीय निबन्धक बौद्धिक अनुच्छेद-संयोजनसँ अधिक मौखिक गपक प्रवाह अपनबैत अछि। 'पिहने' सँ 'अखन' आ 'देखू' सन संकेतक बीच स्मृति, टीका आ नैतिक प्रश्न जुड़ैत अछि। तर्क एक अनुच्छेदसँ दोसर दिस कखनहुँ सहज, कखनहुँ अचानक बढ़ैत अछि। एहि कारण रचनाक वाचकीय निकटता प्रबल अछि, मुदा विश्लेषणक क्रमात्मक सघनता सर्वत्र समान नहि।[215][216]

लोक-वाक्यक प्रवाहमे समता, करुणा आ श्रमक मोलक प्रश्न सहजता सँ उभरैत अछि। पाठककेँ विद्वत्परिभाषा बिना समाजक अनौपचारिक अर्थनीति बुझबाक अवसर भेटैत अछि। ई एकटा वास्तविक भाषिक गुण अछि। गामक लोक जेना रोजक गपमे इतिहासक प्रसंग, खेतक बात, नैतिक निन्दा आ धार्मिक उपमा जोड़ैत छथि, रचनाक शैली ओही संगति सँ बनल अछि।

---

215 साफी, 'राजा अओर परजा', पृ. ८८–९१। वाचकक नैतिक निर्णय आ पात्रसभक वास्तविक संवादक अभावसँ एकल वाचकीयता निर्मित होइत अछि।

216 साफी, ओही रचना, पृ. ८८–९०। 'पिहने', 'अखन', 'राजा', 'परजा', 'मालिक', 'जऽन' आदि पद रचनामे प्रयुक्त सामाजिक काल-विभाजनक मूल साधन छथि।

तथापि साहित्यिक कसौटीपर आवर्तनक संयम, उदाहरणक चयन, तर्कक प्रतिवाद आ स्पष्ट निष्कर्ष प्रबल होइत तँ विचारात्मक प्रभाव आरो पैघ हो सकैत छल। अन्तिम दृश्य भोजनक समानताक निष्कर्ष दैत अछि, मुदा आरम्भक राजकीय न्याय आ श्रमिक अधिकारक प्रश्न पूरा समाधान नहि पबैत। शैलीक खुलापन प्रश्नक खुलापन बनि रहि जाइत अछि।

२७. न्यायशास्त्रीय पुनर्पाठ : कथन, अनुमान आ प्रमाण

विचार-रचनाक प्रत्येक वाक्यक प्रमाण-स्वरूप समान नहि। किछु कथन लोक-स्मृतिपर आधारित अछि, किछु लेखक-वाचकक मूल्यनिर्णय, किछु सामान्य सामाजिक अनुभवक सार, आ किछु मिथिलाक सांस्कृतिक आख्यान। आलोचनाक लेल ई भेद केनाइ जरूरी अछि। उदाहरणार्थ, श्रमिककेँ अनाजमे बोइन भेटबाक प्रसंग एकटा सामाजिक अनुभवक संकेत अछि; ‘सभ पुरान राजा न्यायप्रिय छलाह’ सन व्यापक निष्कर्षक लेल अलग ऐतिहासिक सामग्री चाही।

मिथिलामे विकसित न्याय-विचारक सामान्य शब्दावलीमे कहब तँ प्रत्यक्ष-स्मृति, अनुमान, शब्दक परम्परा आ अलङ्कारिक उपमा अलग प्रकारक ज्ञान-दावा अछि। मुदा एहि संकल्पनासँ हम रचनापर बाह्य दार्शनिक शास्त्रक कठोर योजना थोपि नहि रहल छी। ई केवल परीक्षणक साधन अछि : कोन कथनक प्रमाण पाठ स्वयं दैत अछि, आ कतए रचनाकारक भावनात्मक विश्वास उपस्थित अछि?[217]

एहि पद्धतिसँ कृतिक महत्त्व घटैत नहि। उलटे ओकर लोक-स्मृतिक भावात्मक सत्यक सम्मान आ तथ्यात्मक सावधानी दुनू एक संग सम्भव होइत अछि। जनकक यज्ञ साहित्यिक प्रतीक थिक; श्रमिकक प्रवास सामाजिक अनुभवक कथन; राजाक उदारता नैतिक आदर्श;

217 साफी, ओही रचना, पृ. ८९–९०। ‘राजा’ पदक आशय स्थानीय प्रभुत्वशाली व्यक्ति आ आदर्श जनकक बीच बदलैत अछि; ओकरा निश्चित शासकीय पदक ऐतिहासिक प्रमाण नहि बुझबाक अछि।

भोजनक सर्वसाधारण समानता विवादास्पद सामान्यीकरण। एहि भिन्नता बिना न समाजशास्त्रीय निष्कर्ष ठोस होयत, न साहित्यिक पाठक न्याय।

२८. समानान्तर साहित्य आ साहित्येतिहासक स्थान

विदेहक प्रकाशकीय अभिलेख साफीक आत्मकथाकेँ मैथिली दलित आत्मकथाक महत्त्वपूर्ण आरम्भिक उपलब्धिक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। एहि ऐतिहासिक सन्दर्भमे विचार-बिन्दु खण्ड पर ध्यान देब आवश्यक अछि : लेखक अपन समुदाय वा जीवनक केवल विषय नहि बनैत छथि; ओ समाजक नीति-विचारक वक्ता सेहो बनैत छथि। ‘राजा अओर परजा’क मूल्य एतए केवल कथ्यक मौलिकता नहि, ओकर सार्वजनिक उच्चारणक अधिकारो अछि।[218][219]

समानान्तर साहित्यक परियोजनाकेँ कृतिक गुणक स्वतः प्रमाणपत्र नहि बनाओल जा सकैत। यदि दलित लेखकक रचना साहित्यिक इतिहासमे समुचित स्थान पाबए चाहैत अछि, तँ तकर अनुच्छेद, आवाज, कल्पना, तथ्यगत सीमा आ सामाजिक सिद्धान्त पर उत्ते कठोर

---

218 विदेह, “एडिटर्स चोइस सीरीज-७”, समकालीन प्रकाशकीय परिचय; जून २०२२ मे उपलब्ध सार्वजनिक अभिलेख: https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A । एतए ‘पहिल आ एकमात्र’ दावाक ऐतिहासिक प्रसंग उपलब्ध अछि; परवर्ती कालक सम्पूर्ण साहित्येतिहासक सर्वेक्षण एकर विकल्प नहि।

219 गजेन्द्र ठाकुर, “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi”, A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, विदेह: https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm । ग्रन्थक पाँच-विधात्मक संरचना आ आत्मकथाक साहित्येतिहासिक महत्त्वक सार्वजनिक विवेचन।

आलोचना होयबाक चाही जतेक आन लेखकक रचनापर। एहि समान आलोचनात्मक व्यवहारमे मात्र वास्तविक साहित्यिक समावेशनक सम्भावना अछि।

एहि दृष्टिसँ साफीक पाँच-विधात्मक संकलन शोधक दृष्टिसँ ध्यानाकर्षक अछि। आत्मकथा संघर्ष कहैत अछि, कविता लोकदृश्य बनबैत अछि, विहनि कथा सामाजिक संवाद खोलैत अछि, लघुकथा श्रमिक परिवारक जीवन देखबैत अछि, आ विचार-बिन्दु खण्ड शासनक नैतिक आधार पर विमर्श करैत अछि। बहुविधात्मकता लेखकक सार्वजनिक वाणीकेँ विस्तृत करैत अछि।

२९. उपलब्धि आ सीमा : संतुलित मूल्यांकन

'राजा अओर परजा'क पहिल उपलब्धि ई अछि जे ग्राम्य सत्ता आ श्रमक सम्बन्धकेँ लोकभाषाक सहज गद्यमे विचारक विषय बनबैत अछि। दोसर, ओ शासकक दायित्वकेँ जनकक सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ि नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत अछि। तेसर, अनाज-आधारित मजदूरी, महँगाइ, प्रवास, भूमि आ भोजनक छोट वस्तु-प्रसंगक माध्यमसँ सामाजिक अन्तरकेँ मूर्त करैत अछि। चारिम, पोथीक अन्य खण्डसँ जुड़ि श्रमिकक जीवनक व्यापक संरचना देखबाक अवसर दैत अछि।

रचनाक सीमा सेहो निश्चित अछि। पुरान समयक अत्यधिक आदर्शीकरण ओकर अन्तर्निहित शोषणक आकलन कमजोर करैत अछि। व्यक्तिगत उदारताकेँ अधिकारक विकल्प सन प्रस्तुत कएल जाइत अछि। जाति-सत्ताक स्पष्ट विश्लेषण उपस्थित नहि; स्त्री आ नवयुवकक स्वतंत्र आवाज कम अछि। 'आलस्य' सन सामान्यीकरण आर्थिक विवशताकेँ नैतिक दोषक रूप देबाक जोखिम राखैत अछि। खाद्य-समानताक निष्कर्षक लेल

आवश्यक प्रमाण अनुपस्थित अछि। शिल्पमे आवर्तनक सम्यक संयम आ प्रतितर्कक विकास सेहो कम अछि।[220][221]

ई सीमा नहि देखब रचनाक प्रति अन्याय होयत। साहित्यिक सम्मान आलोचनात्मक विस्तारक विरोधी नहि; ओकर आधार थिक। साफी सामाजिक प्रश्नकेँ गामक अपन भाषामे पाठकक सम्मुख राखि देलनि—ई महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घटना अछि। पाठक ओहि प्रश्नक उत्तर लेखकसँ अलग सेहो खोजि सकैत छथि।

३०. उपसंहार : करुणामूलक राजधर्मसँ अधिकारमूलक न्याय धरि

‘बैशाखमे दलानपर’क विचार-बिन्दु खण्डक एकमात्र गद्य ‘राजा अओर परजा’क केन्द्रीय संवेदना भूखल आ असुरक्षित लोकक प्रति उत्तरदायित्व अछि। लेखक-वाचक चाहैत छथि जे सम्पन्न अथवा शक्तिशाली व्यक्ति कमजोरक दुख देखथि, संकटमे साथ दथि आ अपन लाभक लालसासँ समाजकेँ नहि तोड़थि। एहि आकांक्षाक मानवीय अर्थ निर्विवाद अछि। मिथिलाक लोक-स्मृतिमे जनकक आदर्श एहि आकांक्षाकेँ सांस्कृतिक भाषा दैत अछि।[222]

तथापि रचना जे कालक स्वप्न देखैत अछि ओ कालमे परजाक अधिकार कतेक स्वाधीन छल, ई प्रश्न खुलल रहैत अछि। दिनभरक श्रम आ थोर अन्न, भूमिक मालिकाना आ असमान अधिकार, गामसँ शहरक प्रवास, स्त्रीक अनकहल श्रम—ई सभ संकेत राजकीय उदारतासँ अधिक गहन सामाजिक न्यायक माँग करैत अछि। एहि अर्थमे कृतिक सर्वाधिक

220 साफी, ‘राजा अओर परजा’, पृ. ८९–९१। स्त्री, बटाईदार, भूमिहीन श्रमिक वा जाति-सङ्घर्षक प्रत्यक्ष आत्मवृत्त सम्बन्धी विशिष्ट केस-विवरण एहि खण्डमे उपलब्ध नहि।

221 रेगे, Writing Caste/Writing Gender (२००६); लिंबाळे, Towards an Aesthetic of Dalit Literature (२००४)। सामाजिक आलोचना आ साहित्यिक शिल्पक भिन्न कसौटीपर संवादक आधार।

222 साफी, बैशाखमे दलानपर, प्रकाशकीय विवरण पृ. ३; अनुक्रम पृ. ५; विचार-बिन्दु खण्ड पृ. ८७–९१।

मूल्य ओकर प्रकट समाधानमे नहि, ओकर भीतर रहल अन्तर्विरोधमे अछि। करुणा आवश्यक अछि, मुदा स्थायी न्यायक आधार अधिकार आ समान मान्यता होयबाक चाही।[223][224]

साफीक आत्मकथा, कविता, विहनि कथा आ लघुकथा सँ जोड़ि देखलापर विचार-बिन्दु खण्ड श्रमिक जीवनक नैतिक चिन्तनक अन्तिम विस्तार बनैत अछि। एकटा दलित लेखक अपन जीवन-यात्राक बाद मिथिलाक समाजकेँ प्रश्न करैत छथि : जे अन्न उपजाबैत अछि, जे सेवा करैत अछि, जे गाम छोड़ि जीबबाक बाट खोजैत अछि—ओकरा समाजमे मान, भोजन आ न्याय कोना भेटत? ‘राजा अओर परजा’ एहि प्रश्नक पूर्ण उत्तर नहि दैत, मुदा एकरा साहित्यक सार्वजनिक बहस बना दैत अछि। एही उपलब्धिक कारणेँ एकर न्यायसंगत, आलोचनात्मक आ सहानुभूतिपूर्ण पाठ आवश्यक अछि।[225]

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

साफी, संदीप कुमार। बैशाखमे दलानपर। प्रथम संस्करण। नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। “आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी।” अन्तर्गत: संदीप कुमार साफी, बैशाखमे दलानपर। नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

223 साफी, ओही रचना, पृ. ९०–९१। दया-आधारित संरक्षण आ आधुनिक सामाजिक अधिकारमे तुलनाक निष्कर्ष विश्लेषणात्मक अछि; लेखकक प्रत्यक्ष शब्दशः राजनीतिक कार्यक्रम नहि।

224 आंबेडकर, Annihilation of Caste (१९३६); Omvedt, Dalits and the Democratic Revolution (१९९४)। सामाजिक पदानुक्रम आ परिवर्तनपर व्यापक विमर्श; ‘राजा अओर परजा’क लेखकक प्रत्यक्ष वैचारिक अनुयायित्व स्थापित करबाक प्रमाण नहि।

225 साफी, बैशाखमे दलानपर, विचार-बिन्दु खण्ड, पृ. ८७–९१; ‘राजा अओर परजा’क समापनमे खाद्य-समानताक दावाक विश्लेषण।

ठाकुर, गजेन्द्र। “A Complete Critical Appreciation of Sandeep Kumar Safi.” A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, Part 65, विदेह। https://videha-ejournal.github.io/videha/new_page_65.htm ।

विदेह। “एडिटर्स चोइस सीरीज-७ : मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा।” सार्वजनिक सम्पादकीय अभिलेख, जून २०२२। https://groups.google.com/g/videha/c/hLjwX9RfN9A ।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। Annihilation of Caste। १९३६। उपलब्ध पाठ: https://ambedkar.navayan.com/book/annihilation-of-caste-part-1/ ।

लिंबाळे, शरणकुमार। Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations। अनु. Alok Mukherjee। Orient Longman, २००४।

रेगे, शर्मिला। Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women’s Testimonios। नई दिल्ली: Zubaan, २००६।

ऑम्वेट, गेल। Dalits and the Democratic Revolution: Dr Ambedkar and the Dalit Movement in Colonial India। नई दिल्ली: Sage Publications, १९९४।

स्कॉट, जेम्स सी.। The Moral Economy of the Peasant: Rebellion and Subsistence in Southeast Asia। न्यू हेवेन: Yale University Press, उपलब्ध संस्करण १९७७।

विदेह • मैथिली साहित्य

नित नवल सन्दीप कुमार साफी

मूल समीक्ष्य कृति : ‘बैशाखमे दलानपर’ — संदीप कुमार साफी

‘बैशाखमे दलानपर’ संदीप कुमार साफीक पाँच खण्डक कृति अछि — आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु। एहि पोथीमे गजेन्द्र ठाकुर प्रत्येक खण्डक निकट-पाठ करैत जाति, श्रम, अन्न, शिक्षा, लोकविश्वास, दहेज आ भाषिक आत्मसम्मानक प्रश्नकेँ साहित्यिक कसौटीपर परखैत छथि।

दलानक गपसँ ग्राम्य समाजक अन्तर्विरोध धरि, ‘ओगरबाह’ आ ‘पसीखाना’क भूखसँ ‘राजा अओर परजा’क राजधर्म धरि — श्रमिक ग्राम्य जीवनक साहित्यिक साक्ष्यकेँ एहिमे निकट-पाठसँ पढ़ल गेल अछि।

अनुक्रम · पाँच समीक्षा-आलेख

०१ **आत्मकथा खण्डक समीक्षा**
जाति, श्रम, शिक्षा आ भाषिक आत्मसम्मानक साक्ष्य

०२ **कविता खण्डक समीक्षा**
दलानक गपसँ समाजक अन्तर्विरोध धरि

०३ **विहनि कथा खण्डक समीक्षा**
लोकविश्वास, गृहस्थी आ विवाह-बाजार

०४ **लघुकथा खण्डक समीक्षा**
अन्न, श्रम आ घरक असमान अधिकार

०५ **विचार-बिन्दु खण्डक समीक्षा**
करुणामूलक राजधर्म आ अधिकारक प्रश्न

www.videha.co.in
विदेह वेबसाइट

videha-ejournal.github.io/videha
विदेह ई-जर्नल

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर | सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७ | सर्वाधिकार सुरक्षित |

ISSN 2229-547X